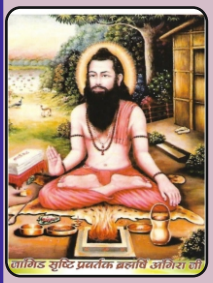
मूल्य - 20



अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का मासिक पत्र

जांगिड ब्राह्मण

JANGID BRAHMIN



अंगिराऽसि जंगिडः

वर्षः 119, अंकः 10, अक्टूबर -2026 ई., तारीख 22-27 प्रति माह

श्री विश्वकर्मणे नमः

POSTED UNDER LICENCE NO. U(DN) 39/2024-26 OF POST WITHOUT PREPAYMENT OF POSTAGE

दशहरा और दीपावली

की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

यह पर्व आपके जीवन में सुख, समृद्धि,
शांति और नई ऊर्जा लेकर आए।
सभी के जीवन में प्रकाश, खुशियां और सफलता का
सदैव दीप जलता रहे।

SCAN & PAY

UPI ID: 19689546024572a@cnrb

प्रधान

रामपाल शर्मा

उक्त QR कोड के माध्यम से महासभा के शिक्षा कोष मे सहयोग कर, समाज के शैक्षिणिक विकास मे सहभागी बनें

प्रधान- श्री रामपाल शर्मा

सम्पादक- रामभगत शर्मा

शुभलाभ
GREEN VALLEY
2&3 BHK LUXURIOUS FLAT & SHOPS

शुभलाभ
VINTAGE VILLA
6 BHK Luxurious Villas

THE VINTAGE शुभलाभ
3 BHK Premium Living

शुभलाभ
HERITAGE
3 | 4 BHK Heritage Living & Penthouse

शुभलाभ
SQUARE
Showrooms | Corporate Entertainment

शुभलाभ
GROUP

AHMEDABAD

THE VINTAGE
Naroda- Dehgam Road
Opp. Shyam Valencia Bungalow
New Naroda, A'bad-382230

Nilesh Sharma 96388 00449
Anurag Sharma 83201 68811

शुभलाभ
HEIGHTS
2 | 3 BHK Premium Living

SENTOSA
ROYAL BUNGALOW
4 BHK Royal Living Homes

PALATE
RESTAURANT & BANQUET

GRAND
Neelkanth
banquet & restaurant
100-1000 Capacity Banquet

FITNESS FUEL
365 Days Open, Luxurious Gym

SUZUKI



Shri Dharamveer Ji



Mr. Vipin Kumar
M. 9911402402



Mr. Vikas Sharma
M. 9911141118

DHARAM SUZUKI

Authorised Dealership Of Suzuki Motorcycle India Private Limited.

Showroom & Workshop

A-12, Amanpuri, Najafgarh Road, Nangloi, Delhi-110041

M. 9911401401

Showroom

RR-26, Mianwali Nagar, Rohtak Road, Peeragarhi, Delhi-110086

M. 7065711133



BURGMAN STREET | Access125 | Avenis | GIXXER SF

INTERIO CRAFT

MERGER OF **ROYAL, SG AND KRISHNA INTERIORS**

Our Management Team



Rampal Sharma | Deepak Sharma | Jagmohan Sharma | Amith Sharma

With its existence over three and half decades,we have carved a niche in the segment of providing complete interior solutions to various corporates houses, retail stores & residences pan India.



Our Sister Concerns:

- Krishna Ventures
- Krishna Retails
- SG Ventures
- NR Retails

Our Franchise Stores

- N R Retails, Uspolo Store, Kammanahalli, BANGALORE
- Uspolo Store, Vega City Mall, BANGALORE
- Krishna Retails, Uspolo Store, USPA-Forum Sujana Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM-Forum, Sujana Mall, HYDERABAD
- Uspolo Kids, USPA kids-Sarat City Mall, HYDERABAD
- Uspolo Denim, USPA Denim - Sarat City Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM -Sarat City Mall, HYDERABAD
- Krishna Ventures, Mega Mart, Mega Mart - Kotputli, JAIPUR
- Third Wave Coffee, Bel Road, BANGALORE
- Wrogn Store, L&T Mall, HYDERABAD
- Swish Salon, BANGALORE

OUR SERVICES

ON SITE

- Carpentry
- Painting
- Tiling
- Marble Work
- Electrical & Lighting
- Civil
- Plumbing...

OFF SITE

- Production of Furniture
- Metal Works

WE ARE TURNKEY INTERIOR SOLUTION PROVIDERS

WE MAKE THEM LOOK AESTHETICALLY RICH AND BEAUTIFUL









Reach us:

Corporate Office: No 13/14 Royal Chambers, 3rd Floor, Dodda Banaswadi, Outer Ring Road, Near Vijaya bank Colony, Bengaluru, Karnataka 560043

080 2542 6161

projects@interiocraft.com

www.interiocraft.com

Some of our Valuable Clients



''जांगिड ब्राह्मण महासभा पत्रिका'' के नियम एवं उद्देश्य

1. समाज के सभी वर्ग के व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए नवाचार करना।
2. साहित्य सृजन, आध्यात्मिक चेतना एवं आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देना।
3. सामाजिक गतिविधियों के अन्तर्गत केन्द्रीय, प्रादेशिक, क्षेत्रीय एवं स्थानीय समाचारों को प्रकाशित करना।
4. सामाजिक शिक्षा, वैज्ञानिक तकनीकी एवं शिल्पोन्नति संबंधी निबंध तथा लेखों आदि को प्रकाशित करना।
5. समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना तथा उन्मूलन के लिए विकास की ओर उन्मुख होने का संचरण करना।
6. पत्रिका प्रत्येक अंग्रेजी माह की 22-27 तारीख को प्रकाशित होती है।
7. लेखों व अन्य प्रकाशनार्थ भेजी गयी सामग्री को छापने, न छापने तथा घटाने-बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित है।
8. व्यक्तिगत तथा विवादास्पद लेख पत्रिका में प्रकाशित नहीं किए जाएंगे।
9. लेखन सामग्री भेजने वाले स्वयं उसके लिए उत्तरदायी होंगे।
10. नमूने का अंक उपलब्ध होने पर ही भेजा जा सकता है।

स्वामित्व एवं सर्वाधिकार सुरक्षित

पंजीकृत सं. एस.-27/1919

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

प्रधान कार्यालय

440, हवेली हैदरकुली, चांदनी चौक, दिल्ली-110006

दूरभाष:- 011-45516719 , 9990070023

Website: www.abjbmahasabha.com

E-mail: jangid.mahasabha@gmail.com

सम्पर्क सूत्र

प्रधान-पं.रामपाल शर्मा ''जांगिड'' - 09844026161

महामंत्री-पं.सांवरमल ''जांगिड'' - 09414003411

सम्पादक-पं.रामभगत शर्मा ''जांगिड'' - 09814681741

सह सम्पादक-पं.प्रहलाद राय शर्मा ''जांगिड''- 08140229679

'जांगिड ब्राह्मण' महासभा की सदस्यता दर

(01-10-2018 से)

सदस्यता	रुपये
प्लैटिनम सदस्य	1,00,000/-
स्वर्ण सदस्य	51,000/-
रजत सदस्य	25,000/-
विशेष सम्पोषक	21,000/-
सम्पोषक सदस्य	11,000/-
संरक्षक (पत्रिका सहित)	2,100/-
संरक्षक (पत्रिका रहित)	500/-
वार्षिक पत्रिका शुल्क	240/-
मासिक पत्रिका शुल्क	20/-

विज्ञापन शुल्क की दरें

टाईटल का अंतिम पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 10000/-,वार्षिक 100000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 6000/-,वार्षिक 61000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 4000/-, वार्षिक 41000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 3000/-, वार्षिक 31000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 1500/-, वार्षिक 17000/-

अन्दर का चौथाई पृष्ठ (साधारण)
मासिक 750/-,वार्षिक 8500/-

वैवाहिक विज्ञापन
मासिक 201/-

UPI ID: akhilbhartiyajangidbrahminmahasabha@sbi



महासभा बैंक खाता

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता नं. **61012926182, (IFSC Code: SBIN0006814)** में किसी भी स्थान से बैंक (शाखा-एसबीआई, मुण्डका, नई दिल्ली-41) में 49000/- रू. प्रतिदिन नकद जमा करवाए जा सकते हैं। जमाकर्ताओं से अनुरोध है कि नकद जमापर्ची / चेक /Neft जमापर्ची पर पाने वाले का नाम **"अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा"** अवश्य लिखें तथा जमा राशि का सम्पूर्ण विवरण महासभा को आवश्यक रूप से प्रेषित करें। महासभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-G के तहत छूट के लिए मान्य है। दानदाता अपनी आयकर विवरणी दान पर आयकर छूट के लिए दावा कर सकते है।

अरूण कुमार (अनिल जांगिड)
कोषाध्यक्ष महासभा, मो. 9810988553

॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अनुक्रमणिका

07. संपादकीय ...
09. प्रधान की कलम से ...
11. महासभा की विनम्र अपील ..
12. प्रदेशाध्यक्ष पद के चुनाव की अधिसूचना ..
20. दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ ...
21. त्र्यंम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन .. साथ ही भगवान शिव
23. महासभा की चेन्नई त्रैमासिक बैठक नए संकल्पों के...
27. संगठन से समाजोत्थान की ओर-
28. विचार-शक्ति और अन्तर्ज्ञान के माध्यम से सृजनात्मक ..
29. लौह पुरुष सरदार पटेल जयंती - राष्ट्रीय एकता दिवस ..
31.1 नवंबर, 2026 को जांगिड ब्राह्मण सामुदायिक भवन, गुरुग्राम
32. पोलियो से निजात -विश्व पोलियो दिवस पर विशेष ...
34. माता पिता की सेवा ही सर्वोपरी सेवा है .....
36.27 सितंबर को मनाए गए अन्तर्राष्ट्रीय बेटी दिवस के ..
37. रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर...
39. हमारा स्वास्थ्य
41. भगवान विश्वकर्मा पूजन दिवस पर देवास शहर में ...
42. विश्वकर्मा समाज सेवा समिति रतनगढ़ की ओर से ...
43. दीपावली
44. विजय दशमी: धर्म, कर्म और चरित्र की विजय का पर्व
45. इंदौर मे तोपखाना स्थित श्री राम मंदिर और विश्वकर्मा ..
46. सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार ..
47. कुटुम्ब प्रबोधन : भारतीयता, संस्कार और राष्ट्र निर्माण ..
49. विकास जांगिड ने उपमण्डल अधिकारी सिविल ....
50. प्लैटिनम सदस्य ..
52. स्वर्ण, रजत सदस्य ..
53. वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने प्लैटिनम सदस्य ..
59. वैवाहिक विज्ञापन.,
60. शोक संदेश
61.18 अक्टूबर, 2026 को चैन्नई मे आयोजित महासभा की त्रैमासिक मीटिंग और तमिलनाडू प्रदेशसभा कार्यकारिणी शपथ ग्रहण समारोह के यादगार पलों की कुछ झलकियां

प्रचार सामग्री (विज्ञापन)

शुभ लाभ ग्रुप
धरम सुजुकी
कृष्णा इंटीरियर
भारत व्हील
शर्मा एंड कंपनी
भागीरथ मोटर्स

न्यायिक क्षेत्र

सभी न्यायिक मामलों में महासभा के किसी भी पदाधिकारी के विरूद्ध महासभा सम्बन्धी मामले में कानूनी कार्यवाही के लिये न्यायिक क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

विनम्र निवेदन

(1) 'जांगिड ब्राह्मण' पत्रिका हर माह की 22 से 27 तिथि तक नियमित रूप से भेज दी जाती है, जो आपको 3-7 दिन में मिल जानी चाहिए।

(2) जिन आदरणीय सदस्यों को पत्रिका नहीं मिल पा रही है वे कृपया अपने सम्बन्धित डाक घर में लिखित शिकायत करें और इसकी एक प्रति महासभा कार्यालय में भी भेजें ताकि महासभा कार्यालय भी अपने स्तर पर मुख्य डाकपाल अधिकारी को यह शिकायत आप की फोटो प्रतियों के साथ भेज सके।

हमारे पास बहुत सारी पत्रिकाएं डाक कर्मचारी की इस टिप्पणी के साथ वापिस आ रही है, कि 'पते में पिता का नाम नहीं', 'इस पते पर नहीं रहता', 'पता अधूरा है', 'पिन कोड' बिना भी पत्रिका वापिस आ रही है। यदि आपके पते में उपरोक्त अशुद्धियाँ है तो लिखित रूप में महासभा कार्यालय में भेजें ताकि शुद्ध किया जा सके। हम आपको विश्वास दिलाते है कि प्रत्येक सदस्य को कार्यालय से प्रतिमाह 22 से 27 तिथि को पत्रिकाएं भेज दी जाती है।

(3) समाज के प्रबुद्ध लेखकों, विद्वत्वानों से निवेदन है कि रचनाओं की छाया प्रति न भेजें, वास्तविक प्रति ही सुस्पष्ट, सुन्दर लेख में लिखकर या टाइप कराकर भेजें। वैवाहिक विज्ञापन एवं इसका शुल्क, अन्य लेख व प्रकाशन सम्बन्धी सभी प्रकार की सामग्री हर माह की 10 तारीख तक महासभा कार्यालय में अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

कृपया ध्यान दें! बार बार निवेदन करने पर भी लेखक अपनी रचनाएँ अस्पष्ट हस्तलिखित तथा छोटे से कागज पर भेज रहे है। जिससे हमेशा पढ़ने में असुविधा हो रही है। ऐसे लेख प्रकाशित नहीं हो पाएंगे।

(4) आपसे यह भी निवेदन है कि प्रत्येक रचना के अंत में यह घोषणा अवश्य करें कि यह रचना मेरी मौलिक रचना है और अभी तक कहीं प्रकाशित या प्रसारित नहीं हुई है। यदि किसी अन्य स्रोत से ली गई है - तो उसका संदर्भ अवश्य दे तथा लेख के अन्त में अपना नाम, पता, फोन नम्बर हस्ताक्षर सहित अवश्य लिखें।

(5) पत्रिका के विषय में प्रबुद्ध लेखकों के सुझाव सादर आमंत्रित है।

(6) अस्वीकरण-पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के व्यक्तिगत विचार होते हैं। महासभा का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

- सम्पादक

इस पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक अथवा महासभा का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों, तथ्यों आदि की शुद्धता तथा मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।

सम्पादकीय-------

पर्वों की पवित्रता, समाज की एकता और कुरीतियों से मुक्ति के संकल्प के साथ त्योहारों को केवल उत्सव नहीं, सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाएँ



प्रहलादराय जांगिड - सहसंपादक

भारतीय संस्कृति पर्वों, त्योहारों, परंपराओं और संस्कारों की अमूल्य धरोहर है। हमारे त्योहार केवल धार्मिक आस्था और उल्लास के अवसर नहीं हैं, बल्कि वे हमें जीवन जीने की सही दिशा दिखाते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम इन पर्वों के वास्तविक उद्देश्यों को समझें और उनके संदेशों को अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन में उतारें।

शारदीय नवरात्रि, विजयादशमी अर्थात् दशहरा और दीपावली जैसे प्रमुख त्योहार हमारी आस्था, परंपरा और सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक हैं। इसके साथ ही **गांधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री जयंती, राष्ट्रीय एकता दिवस** तथा अन्य महत्वपूर्ण अवसर हमें राष्ट्रप्रेम, सादगी, एकता और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा देते हैं। इन सभी अवसरों का संदेश एक ही है—अपने भीतर की अच्छाइयों को जागृत करना, बुराइयों का त्याग करना और समाज को बेहतर बनाने में अपना योगदान देना।

नवरात्रि शक्ति की उपासना का महापर्व है। इन नौ दिनों में हम माँ दुर्गा के विभिन्न स्वरूपों की आराधना करते हुए शक्ति, साहस, धैर्य, करुणा और सद्बुद्धि की कामना करते हैं। **यह विचारणीय प्रश्न है कि एक ओर हम देवी की पूजा करते हैं, वहीं दूसरी ओर समाज में महिलाओं के साथ भेदभाव, अशिक्षा, दहेज प्रथा और अनेक प्रकार की असमानताएँ क्यों बनी हुई हैं?** यदि हम वास्तव में शक्ति के उपासक हैं, तो हमें अपनी बेटियों को बेटों के समान शिक्षा, अवसर और अधिकार उपलब्ध कराने का संकल्प लेना चाहिए। विजयादशमी का पर्व असत्य पर सत्य, अधर्म पर धर्म और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। भगवान श्रीराम की विजय हमें सिखाती है कि परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, सत्य, मर्यादा और धर्म के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति अंततः विजय प्राप्त करता है। **प्रत्येक वर्ष दशहरे पर हम रावण के पुतले का दहन करते हैं, लेकिन क्या हमने कभी अपने भीतर झाँककर देखा है कि हमारे मन और व्यवहार में कितनी बुराइयाँ विद्यमान हैं?**

जातिगत अहंकार, आपसी ईर्ष्या, द्वेष, नशाखोरी, दहेज की माँग, दिखावे की प्रवृत्ति, अनावश्यक खर्च, सामाजिक भेदभाव और एक-दूसरे को नीचा दिखाने की मानसिकता भी ऐसी बुराइयाँ हैं, जो समाज की प्रगति में बाधक बनती हैं। आज आवश्यकता है कि हम प्रत्येक विजयादशमी पर अपने भीतर की कम-से-कम एक बुराई को छोड़ने का संकल्प लें।

दीपावली अंधकार से प्रकाश की ओर, निराशा से आशा की ओर एवं अज्ञान से ज्ञान की ओर बढ़ने का संदेश देती है। आज समाज में विवाह, सगाई, जन्मदिन और अन्य समारोहों में अनावश्यक प्रदर्शन तथा प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति बढ़ती दिखाई देती है। इसके परिणामस्वरूप आर्थिक दबाव, कर्ज और पारिवारिक तनाव जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। हमें यह समझना होगा कि किसी व्यक्ति या परिवार की प्रतिष्ठा उसके खर्च से नहीं, बल्कि उसके संस्कारों, व्यवहार, ईमानदारी और सामाजिक योगदान से निर्धारित होती है।

इस दीपावली पर हम संकल्प लें कि जरूरतमंद परिवारों की सहायता करेंगे, स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहन देंगे, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार रहेंगे और त्योहार की खुशियाँ समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने का प्रयास करेंगे।

महात्मा गांधी जयंती हमें सत्य, अहिंसा, स्वच्छता और नैतिकता का मार्ग अपनाने की प्रेरणा देती है। लाल बहादुर शास्त्री जयंती सादगी, ईमानदारी, परिश्रम और कर्तव्यनिष्ठा का संदेश देती है। सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती, जिसे राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है, हमें याद दिलाती है कि विविधताओं के बावजूद एकता ही राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है।

विश्व खाद्य दिवस हमें भोजन की बर्बादी रोकने, जरूरतमंदों तक भोजन पहुँचाने और खाद्य सुरक्षा के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा देता है। अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस, जो 2 अक्टूबर को मनाया जाता है, हमें मतभेदों को संवाद और शांति के माध्यम से सुलझाने का संदेश देता है। विश्व पोलियो दिवस हमें स्वास्थ्य जागरूकता, टीकाकरण और बच्चों के सुरक्षित भविष्य के प्रति अपनी जिम्मेदारी का स्मरण कराता है। इन सभी अवसरों का उद्देश्य केवल किसी विशेष दिन को मनाना नहीं, बल्कि उससे जुड़ी अच्छी बातों को अपने जीवन का हिस्सा बनाना है। किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति केवल उसकी जनसंख्या, आर्थिक संपन्नता या ऐतिहासिक गौरव से नहीं

मापी जाती। समाज की प्रगति का वास्तविक आधार उसकी शिक्षा, सामाजिक चेतना, नैतिकता, आपसी सहयोग और समय के साथ स्वयं को सुधारने की क्षमता है।

जांगिड ब्राह्मण समाज के पास गौरवशाली परंपरा, शिल्पकला, तकनीकी दक्षता, परिश्रम और उद्यमशीलता की समृद्ध विरासत है। लेकिन इस गौरवशाली विरासत को भविष्य की शक्ति में बदलने के लिए हमें कुछ सामाजिक चुनौतियों पर गंभीरता से विचार करना होगा।

1. दहेज प्रथा का पूर्ण त्याग: विवाह दो व्यक्तियों और दो परिवारों के बीच पवित्र संबंध है, न कि आर्थिक लेन-देन का माध्यम। हमें दहेज लेने और देने की प्रवृत्ति का विरोध करना चाहिए। विवाह को सादगीपूर्ण, सम्मानजनक और आर्थिक बोझ से मुक्त बनाने के प्रयास करने चाहिए।

2. शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता: समाज का कोई भी बच्चा आर्थिक अभाव के कारण शिक्षा से वंचित न रहे। प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति, मार्गदर्शन और आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराने के लिए सामूहिक प्रयास किए जाएँ।

3. नशामुक्त परिवार, स्वस्थ समाज: नशे की आदत व्यक्ति के स्वास्थ्य, परिवार की आर्थिक स्थिति और सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती है। हमें नशे से दूर रहने, जागरूकता फैलाने और प्रभावित व्यक्तियों को सहानुभूतिपूर्वक उचित सहायता दिलाने का प्रयास करना चाहिए।

4. विवाह एवं सामाजिक आयोजनों में सादगी: अनावश्यक खर्च, दिखावे और प्रतिस्पर्धा से बचना चाहिए। सामूहिक विवाह सम्मेलन, सरल विवाह और सीमित खर्च वाली सामाजिक परंपराओं को प्रोत्साहन देना चाहिए, ताकि परिवार अपनी बचत शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसे उपयोगी कार्यों में लगा सकें।

5. सामाजिक भेदभाव और ऊँच-नीच की भावना का अंत: समाज की एकता तभी मजबूत होगी, जब हम एक-दूसरे को समान सम्मान देंगे। आर्थिक स्थिति, पद, क्षेत्र, परिवार या व्यक्तिगत विचारों के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं होना चाहिए।

6. आपसी मतभेदों का समाधान संवाद से: विचारों की भिन्नता स्वाभाविक है, लेकिन उसे मनमुटाव और स्थायी दूरी का कारण नहीं बनने देना चाहिए। सामाजिक विषयों पर खुलकर चर्चा करें, दूसरों के विचार सुनें और सामूहिक हित को व्यक्तिगत अहंकार से ऊपर रखें।

7. युवाओं को नेतृत्व के अवसर: समाज के युवाओं को शिक्षा, रोजगार, उद्यमिता, प्रशासन, तकनीक और सामाजिक सेवा के क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए। वरिष्ठजनों के अनुभव और युवाओं की ऊर्जा का समन्वय समाज को नई दिशा दे सकता है।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का उद्देश्य केवल संगठनात्मक गतिविधियों का संचालन करना नहीं, बल्कि समाज को एकजुट करना, उसकी समस्याओं पर विचार करना और सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में प्रयास करना भी है। हमें अपने गाँव, शहर, जिला और प्रदेश स्तर पर ऐसी सामाजिक पहल विकसित करनी चाहिए, जिनसे शिक्षा को बढ़ावा मिले, जरूरतमंद परिवारों को सहायता मिले, युवाओं को रोजगार संबंधी मार्गदर्शन मिले और विवाह जैसे आयोजनों में सादगी को प्रतिष्ठा प्राप्त हो।

हमें समयबद्ध कार्ययोजना बनाकर उसके परिणामों की समीक्षा भी करनी चाहिए। इसके लिए व्यक्तिगत उदाहरण, पारिवारिक संस्कार, सामूहिक संकल्प और निरंतर प्रयास आवश्यक हैं। हमारे व्यक्तिगत विचार, राजनीतिक पसंद और स्थानीय परिस्थितियाँ अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन समाज के शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक विकास के प्रश्नों पर हमें एकजुट होकर कार्य करना चाहिए।

आइए, केवल दीपावली पर दीप न जलाएँ, बल्कि किसी जरूरतमंद के जीवन में आशा का प्रकाश पहुँचाएँ। केवल दशहरे पर पुतला न जलाएँ, बल्कि अपने भीतर के अहंकार और सामाजिक बुराइयों को त्यागने का प्रयास करें। केवल नवरात्रि में शक्ति की आराधना न करें, बल्कि महिलाओं को सम्मान, बेटियों को अवसर और कमजोर वर्गों को सहयोग देकर अपने संस्कारों को प्रमाणित करें। हमारा संकल्प हो—

कुरीतिमुक्त समाज, शिक्षित समाज, नशामुक्त समाज, नारी सम्मान, सादगीपूर्ण परंपराएँ और अटूट सामाजिक एकता।

इसी विश्वास के साथ सभी समाज बंधुओं एवं मातृशक्ति को शारदीय नवरात्रि, विजयादशमी और दीपावली सहित इस माह के सभी प्रमुख पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएँ। माँ दुर्गा हम सभी को शक्ति प्रदान करें, भगवान श्रीराम हमें सत्य और मर्यादा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें तथा दीपावली का प्रकाश हमारे जीवन और समाज में ज्ञान, सद्भाव और समृद्धि का संचार करे।

आइए, त्योहारों की खुशियों को सामाजिक परिवर्तन का उत्सव बनाएँ और एक सशक्त, संस्कारित, संगठित एवं कुरीतिमुक्त जांगिड ब्राह्मण समाज के निर्माण के लिए मिलकर आगे बढ़ें।

***

प्रधान की कलम से.....

प्रिय समाज बंधुओ एवं मातृशक्ति! सादर अभिवादन!



प्रधान,रामपाल शर्मा

भारतीय संस्कृति विविधता में एकता, सद्भाव, त्याग, सेवा और नैतिक मूल्यों की संस्कृति है। हमारे राष्ट्रीय पर्व, धार्मिक त्योहार, महापुरुषों की जयंतियाँ तथा अंतरराष्ट्रीय दिवस हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर चिंतन करने और समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को समझने की प्रेरणा देते हैं। अक्टूबर और नवंबर के इन महत्वपूर्ण अवसरों पर आइए, हम इतिहास से प्रेरणा लें, वर्तमान की चुनौतियों को समझें और एक सशक्त, शिक्षित, संगठित एवं संस्कारवान समाज के निर्माण का संकल्प लें।

2 अक्टूबर को हम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं भारत के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती मनाते हैं। महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा, स्वच्छता और नैतिकता को जीवन का आधार बनाया। उनका विश्वास था कि समाज में वास्तविक परिवर्तन व्यक्ति के आचरण में सुधार से ही संभव है। वहीं, लाल बहादुर शास्त्री ने सादगी, ईमानदारी, अनुशासन और राष्ट्रसेवा का आदर्श प्रस्तुत किया। उनका नारा 'जय जवान, जय किसान' आज भी देश की आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। इन महापुरुषों की जयंती हमें सिखाती है कि महानता पद या संपत्ति से नहीं, बल्कि चरित्र, विचारों और कर्मों से प्राप्त होती है। हमें उनके आदर्शों को अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में अपनाना चाहिए।

शारदीय नवरात्र भारतीय संस्कृति में शक्ति की उपासना, आत्मशुद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का महापर्व है। माँ दुर्गा के नौ स्वरूप हमें साहस, संयम, करुणा, ज्ञान और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं।

नवरात्र का वास्तविक संदेश केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है। इसका सार नारी शक्ति का सम्मान, बेटियों को समान अवसर, शिक्षा को प्रोत्साहन और समाज में व्याप्त कुरीतियों का उन्मूलन है। जिस समाज में महिलाओं को सम्मान, सुरक्षा और निर्णय लेने का अधिकार मिलता है, वही समाज प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता है। आइए, हम संकल्प लें कि अपने परिवार और समाज में महिलाओं की गरिमा, शिक्षा तथा आत्मनिर्भरता को सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे।

विजयादशमी अथवा दशहरा हमें सत्य की विजय, धर्म की स्थापना और अहंकार के अंत का संदेश देता है। भगवान श्रीराम की विजय केवल एक धार्मिक प्रसंग नहीं, बल्कि न्याय, मर्यादा, कर्तव्य और आदर्श आचरण की प्रेरणा है।

आज हमारे समाज में दहेज प्रथा, नशाखोरी, सामाजिक भेदभाव, अनावश्यक खर्च, आपसी वैमनस्य और अन्य कुरीतियाँ अनेक समस्याओं का कारण हैं। यदि हम वास्तव में दशहरे की भावना को आत्मसात करना चाहते हैं, तो हमें इन बुराइयों के विरुद्ध सामूहिक संकल्प लेना होगा। केवल रावण के पुतले जलाने से समाज की बुराइयाँ समाप्त नहीं होंगी; इसके लिए हमें अपने विचारों, व्यवहार और सामाजिक व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन लाना होगा।

16 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय खाद्य दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य खाद्य सुरक्षा, पोषण, कृषि विकास और भूख की समस्या के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। अन्न हमारे जीवन का आधार है। किसान के परिश्रम से खेतों में उत्पन्न होने वाला प्रत्येक दाना हमारे लिए अमूल्य है। इसके बावजूद समाज में अनेक लोग पर्याप्त भोजन और पोषण से वंचित हैं। हमें भोजन की बर्बादी रोकनी चाहिए, जरूरतमंद परिवारों की सहायता करनी चाहिए और बच्चों तथा महिलाओं के पोषण पर विशेष ध्यान देना चाहिए। समाज के सामर्थ्यवान व्यक्तियों और संस्थाओं को चाहिए कि वे सामाजिक आयोजनों में भोजन की बर्बादी रोकने तथा जरूरतमंदों तक अन्न पहुँचाने के लिए सार्थक प्रयास करें।

24 अक्टूबर को विश्व पोलियो दिवस के अवसर पर बच्चों के स्वास्थ्य और पोलियो उन्मूलन के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाती है। भारत ने व्यापक टीकाकरण अभियान और जनसहभागिता के माध्यम से पोलियो उन्मूलन में ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की है।

यह सफलता बताती है कि जब सरकार, स्वास्थ्यकर्मी, परिवार और सामाजिक संगठन मिलकर कार्य करते हैं, तो बड़ी चुनौतियों का समाधान संभव होता है। हमें बच्चों के नियमित टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच और पोषण के प्रति जागरूक रहना चाहिए तथा स्वास्थ्य संबंधी अफवाहों से बचते हुए चिकित्सकीय सलाह का पालन करना चाहिए। स्वस्थ बच्चे ही स्वस्थ समाज और विकसित राष्ट्र की नींव हैं।

31 अक्टूबर को लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाई जाती है। स्वतंत्रता के बाद देशी रियासतों के एकीकरण में उनके ऐतिहासिक योगदान ने भारत की अखंडता को मजबूत आधार प्रदान किया। उनका जीवन हमें दृढ़ इच्छाशक्ति, संगठन क्षमता, अनुशासन और राष्ट्रहित को व्यक्तिगत हितों से ऊपर रखने की प्रेरणा देता है। यह अवसर हम सभी के लिए आत्ममंथन का है। जब देश की एकता आवश्यक है, तब समाज की एकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। जाति, क्षेत्र, भाषा और व्यक्तिगत पसंद के कारण पैदा होने वाले मतभेदों को संवाद और सद्भाव से दूर करना चाहिए। संगठित समाज ही शिक्षा, रोजगार, सामाजिक सम्मान और राजनीतिक भागीदारी के क्षेत्र में प्रभावी योगदान दे सकता है।

दीपावली भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख त्योहार है। यह अंधकार पर प्रकाश, निराशा पर आशा और अज्ञान पर ज्ञान की विजय का प्रतीक है। भगवान श्रीराम के अयोध्या आगमन की स्मृति से जुड़ा यह पर्व हमें मर्यादा, त्याग, परिवार के प्रति समर्पण और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। माँ लक्ष्मी की पूजा के साथ यह त्योहार परिश्रम, समृद्धि, स्वच्छता और शुभारंभ का संदेश भी देता है। दीपावली का वास्तविक प्रकाश तभी सार्थक होगा, जब हमारे मन से ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार और भेदभाव का अंधकार दूर होगा। हमें अपने घरों के साथ-साथ अपने विचारों और सामाजिक वातावरण को भी स्वच्छ बनाना होगा। आइए, इस दीपावली पर हम संकल्प लें कि जरूरतमंदों की सहायता करेंगे, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार रहेंगे, अनावश्यक खर्च से बचेंगे और आपसी संबंधों में प्रेम तथा विश्वास बढ़ाएँगे।

इन सभी पर्वों, जयंतियों और दिवसों का मूल संदेश एक ही है—मानवता, सद्भाव, सेवा, अनुशासन और एकता। किसी भी समाज की वास्तविक शक्ति उसकी संख्या के साथ-साथ उसकी शिक्षा, संगठन, संस्कार, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामूहिक निर्णय क्षमता में निहित होती है।

जांगिड ब्राह्मण समाज के समग्र विकास के लिए हमें बच्चों की शिक्षा, युवाओं के कौशल विकास, महिलाओं की भागीदारी, जरूरतमंद परिवारों की सहायता तथा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के प्रोत्साहन पर विशेष ध्यान देना होगा। समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने के लिए केवल भाषण पर्याप्त नहीं हैं; प्रत्येक परिवार और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी।

महासभा समाज को संगठित करने, आपसी सहयोग बढ़ाने और सामाजिक उत्थान के प्रयासों में सदैव प्रतिबद्ध है। लेकिन कोई भी संगठन तभी सफल हो सकता है, जब समाज का प्रत्येक सदस्य उसमें अपना योगदान दे। हमें आपसी संवाद बनाए रखना है, मतभेदों को बातचीत से सुलझाना है और व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर सामूहिक हितों को प्राथमिकता देनी है। याद रखिए, एकता केवल नारा नहीं, बल्कि व्यवहार में उतारने योग्य जिम्मेदारी है। जब हमारा समाज संगठित होगा, तभी हमारी प्रतिभा को उचित मंच मिलेगा, हमारी आवाज प्रभावी बनेगी और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर अवसरों का निर्माण होगा।

आइए, इन पर्वों और महापुरुषों की प्रेरणा को जीवन में उतारते हुए संकल्प लें कि हम एक शिक्षित, संस्कारवान, कुरीतिमुक्त, आत्मनिर्भर और एकजुट जांगिड समाज के निर्माण में अपना पूरा योगदान देंगे।

आप सभी को शारदीय नवरात्र, दशहरा और दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

सामाजिक एकता अमर रहे! जांगिड समाज संगठित और सशक्त बने!

***

🙏 महासभा की विनम्र अपील 🙏

समाज की वास्तविक संख्या के लिए—जनगणना में मुख्य जाति के रूप में केवल "जांगिड" लिखें।

प्रिय समाज बंधुओं,

वर्तमान मे देश मे चल रही जनगणना हमारे समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण अवसर है। जनगणना में दर्ज होने वाली संख्या केवल एक आंकड़ा नहीं होती, बल्कि वह समाज की वास्तविक जनसंख्या, सामाजिक स्थिति और भविष्य की योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण आधार बनती है।

हमारी जनसंख्या सम्मानजनक संख्या में होते हुए भी अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग नामों से पहचान लिखे जाने के कारण हमारी वास्तविक संख्या एक साथ दिखाई नहीं पड़ती। देश के विभिन्न प्रांतों और क्षेत्रों में हमारे समाज के लोगों को अलग-अलग स्थानीय नामों से पुकारा जाता रहा है। इसके परिणामस्वरूप हमारी सामूहिक जनसंख्या का सही आंकड़ा सामने नहीं आ पाता।

अत: अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की ओर से सभी समाजबंधुओं से विनम्र अपील है कि आप देश के किसी भी प्रांत, जिले या क्षेत्र में रहते हों, जनगणना फॉर्म में अपनी मुख्य जाति के रूप में केवल **"जांगिड"** लिखें। हमारी पहचान अनेक स्थानीय नामों से हो सकती है, लेकिन हमारी सामाजिक एकता और सामूहिक पहचान को मजबूत करने के लिए **"जांगिड"** नाम को मुख्य जाति के रूप में दर्ज करना आवश्यक है।

आपका यह छोटा-सा प्रयास आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत बड़ा योगदान सिद्ध हो सकता है। जनगणना में **"जांगिड"** नाम के अंतर्गत हमारी वास्तविक संख्या स्पष्ट रूप से सामने आएगी और समाज की सामाजिक, शैक्षणिक एवं विकास संबंधी आवश्यकताओं को समझने और उनके लिए योजनाबद्ध प्रयास करने में भी सहायता मिलेगी।

आइए, हम सभी मिलकर इस महायज्ञ में अपनी आहुति दें। अपने परिवार, रिश्तेदारों और समाजबंधुओं को भी इसके लिए जागरूक करें और सुनिश्चित करें कि जनगणना में हमारी मुख्य जातीय पहचान **"जांगिड"** के रूप में दर्ज हो।

आपका एक प्रयास—समाज की आने वाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य योगदान।

सादर,

रामपाल शर्मा - प्रधान

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड़, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023
पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919


अंगिराऽसि जांगिड

Website: www.abjbmahasabha.com, E-mail: Jangid.mahasabha@gmail.com

रामपाल शर्मा	सांवरमल जांगिड	अरुण कुमार जांगिड	प्रवीण कुमार शर्मा
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष	मुख्य चुनाव अधिकारी
9844026161	9414003411	9810988553	9300905141

क्रमांक :- अ.भा.जा.ब्रा.म./मु.चु.अ./चु.अधिसूचना/3086/2026 दिनांक:-10 अक्टूबर, 2026

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली अंतर्गत प्रदेश सभाओं के प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव की अधिसूचना एवं चुनाव कार्यक्रम

****

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली की इंदौर (मध्य प्रदेश) में दिनांक 22 जून 2025 को आयोजित त्रैमासिक मीटिंग मे महासभा अंतर्गत प्रदेश सभाओ के प्रदेशाध्यक्ष पद के चुनाव हेतु प्रस्ताव पारित कर निर्धारित दिनांक पर चुनाव कराने का निर्णय लिया गया। महासभा कार्यकारिणी के निर्णय एवं महासभा प्रधान श्री रामपाल जी शर्मा के निर्देशानुसार **मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश** सभाओं के **"प्रदेशाध्यक्ष"** पद के चुनाव कराने हेतु चुनाव अधिसूचना जारी की जाती है। चुनाव अधिसूचना के परिपेक्ष्य में उपरोक्त सभी प्रदेश सभाओं के प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु चुनाव कार्यक्रम निम्नानुसार जारी किया जाता है।

*** चुनाव कार्यक्रम ***

****

* विज्ञप्ति प्रकाशन	:10 अक्टूबर 2026 शनिवार
* सदस्यता की अंतिम दिनांक	:09 नवंबर 2026 सोमवार
* सदस्यता सूची प्रकाशन की दिनांक	:16 नवंबर 2026 सोमवार
* सदस्यता सूची में संशोधन की दिनांक	:23 नवंबर 2026 सोमवार
* संशोधित सदस्यता सूची प्रकाशन की दिनांक	:30 नवंबर 2026 सोमवार
* नामांकन प्रक्रिया की दिनांक	:12 दिसम्बर शनिवार व 13 दिसम्बर, 2026 रविवार
* चुनाव यदि आवश्यक हो तो	:10 जनवरी, 2027 रविवार

प्रदेश सभाओं के प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव **"चुनाव निर्देशिका-2024"** में दिये गए नियम, सूचनाएं एवं समय समय पर महासभा कार्यकारिणी की मीटिंगों में अनुमोदित दिशा-निर्देश लागू होंगे और गुप्त मतदान प्रक्रिया द्वारा पारदर्शिता तथा निष्पक्षता से चुनाव संपन्न होंगे।

प्रवीण कुमार शर्मा
मुख्य चुनाव अधिकारी

महासभा अंतर्गत मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश प्रदेश सभाओं के प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव 2026 हेतु

-:: नामांकन- कार्यक्रम::-

1. नामांकन स्थल:-

प्रदेश सभा मध्य प्रदेश के'' प्रदेशाध्यक्ष पद'' चुनाव हेतु नामांकन स्थल "श्री जांगिड ब्राह्मण समाज, तोपखाना मंदिर इंदौर मध्यप्रदेश" में रहेगा।

प्रदेश सभा महाराष्ट्र के'' प्रदेशाध्यक्ष पद'' चुनाव हेतु नामांकन स्थल "जांगिड सेवा संघ, ए- 501/ए , सुमित समर्थ आर्य रोड़, जैन मंदिर के पास, गोरेगांव (वेस्ट) मुंबई 400062" में रहेगा।

प्रदेश सभा उत्तर प्रदेश के "प्रदेशाध्यक्ष" पद चुनाव हेतु नामांकन स्थल "महासभा प्रधान कार्यालय, रानीखेड़ा रोड, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास, मुंडका, नई दिल्ली" में रहेगा।

2. नामांकन की समय सीमा:-

नामांकन की समय सीमा चुनाव दिनांक से 1 माह पूर्व रहेगी। परिस्थिति अनुसार इस समय सीमा में कमी या वृद्धि की जा सकेगी। जिस पर किसी को आपत्ति का अधिकार नहीं रहेगा।

3. नामांकन अवधि एवं समय:-

अ) अवधि -

प्रदेश सभाओं के प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु नामांकन प्रक्रिया दो दिवसीय शनिवार एवं रविवार को होगी । प्रथम दिवस नामांकन पत्र भरे जाएंगे तथा द्वितीय दिवस नाम वापसी पश्चात प्रत्याशी घोषित होंगे।

ब). दिनांक एवं समय -

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश प्रदेश सभाओं के ''प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव'' हेतु नामांकन दिनांक एवं समय निम्नानुसार रहेगा::--

- नामांकन प्रस्तुति:- 12 दिसम्बर, 2026 शनिवार 10 AM से 4 PM तक
- नामांकन पत्रों की जांच :- 12 दिसम्बर, 2026 शनिवार 4 PM से 5.30 PM तक
- प्रत्याशी सूची का प्रकाशन:- 12 दिसम्बर, 2026 शनिवार 6 PM तक
- नाम वापसी दिनांक- 13 दिसम्बर, 2026 रविवार 9 AM से 3 PM तक
- प्रत्याशियों की घोषणा दिनांक- 13 दिसम्बर, 2026 रविवार, सायं 4 बजे
- चुनाव चिन्ह आवंटन दिनांक - 13 दिसम्बर, 2026 रविवार, सायं 5 बजे

स) मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश प्रदेशाध्यक्षों के चुनाव में नामांकन के पश्चात यदि सभी प्रत्याशी किसी एक प्रत्याशी के समर्थन में नाम वापस लेते हैं तो सभी प्रत्याशी एवं उपस्थित समाज बंधु संयुक्त रूप से हस्ताक्षरित आवेदन यदि चुनाव अधिकारी को प्रस्तुत करें तो नामांकन प्रक्रिया दो दिवस के स्थान पर चुनाव अधिकारी द्वारा एक दिवस में ही समाप्त की जा सकेगी।

4. नामांकन आवेदन पत्र का शुल्क :-

नामांकन आवेदन पत्र का शुल्क प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु ₹500/-रूपये रहेगा जो नकद या डिमांड ड्राफ्ट से जमा कराया जा सकता है।

5. नामांकन हेतु चुनाव व्यवस्था शुल्क:-

प्रदेशाध्यक्ष पद के प्रत्याशियों को नामांकन आवेदन पत्र के साथ चुनाव व्यवस्था शुल्क 41000/- रूपये (इकतालिस हज़ार रुपए) अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली के नाम से **"डिमांड ड्राफ्ट"** द्वारा जमा करना आवश्यक होगा। बिना इस शुल्क (राशि) के नामांकन आवेदन पत्र स्वीकार नहीं किया जावेगा। चुनाव व्यवस्था शुल्क केवल डिमांड ड्राफ्ट द्वारा ही स्वीकार होगा। यह किसी भी दशा में नगद, चेक, आरटीजीएस, पेटीएम, फोनपे, गुगल पे एवं अन्य किसी भी इलेक्ट्रानिक माध्यम, आनलाईन या मोबाइल आदि से स्वीकार नहीं होगा।

6. चुनाव व्यवस्था शुल्क वापसी योग्य नहीं:-

प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव में नामांकन आवेदन पत्र के साथ जमा किया गया चुनाव व्यवस्था शुल्क किसी भी दशा में वापस नहीं किया जावेगा। अतः प्रत्याशी इसका ध्यान रखते हुए ही नामांकन पत्र दाखिल करें।

7. नामांकन आवेदन पत्र की उपलब्धता:-

प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव हेतु नामांकन आवेदन पत्र नामांकन दिनांक को निर्धारित शुल्क जमा करने पर चुनाव अधिकारी द्वारा उपलब्ध कराया जावेगा।

8. नामांकन दाखिल करते समय आवश्यक दस्तावेज:-

प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु नामांकन आवेदन पत्र दाखिल करते समय पूर्ण रूप से भरे हुए तथा उस पर पासपोर्ट साइज की फोटो लगाकर निम्नलिखित दस्तावेज संलग्न करना अत्यंत आवश्यक है-

* **नोड्यूज प्रमाण पत्र**	(मूल प्रति)	* **शपथ पत्र**	(मूल प्रति)
* **त्यागपत्र या घोषणा पत्र**	(मूल प्रति)	* **स्वयं का शासकीय पहचान पत्र**	(प्रतिलिपि)
* **चुनाव व्यवस्था शुल्क राशि की रसीद**	(प्रतिलिपि)	* **स्वयं का महासभा पहचान पत्र**	(प्रतिलिपि)
* **पूर्व में निरंतर 2 बार से अधिक इसी पद पर नहीं रहे हैं का घोषणा पत्र**			(मूल प्रति)
* **प्रस्तावक एवं अनुमोदक के महासभा पहचान पत्र**	(प्रतिलिपि)		
* **प्रस्तावक एवं अनुमोदक के शासकीय पहचान पत्र**	(प्रतिलिपि)		
* **प्रत्याशी का आयु प्रमाण हेतु दस्तावेज**	(प्रतिलिपि)		

उपरोक्त सभी दस्तावेजों मैं आवश्यकतानुसार मूल प्रति साथ रखना आवश्यक है जिससे सत्यापन किया जा सके। सभी दस्तावेज स्वयं प्रत्याशी द्वारा प्रमाणित करने आवश्यक होंगे उपरोक्त दस्तावेजों के अभाव में नामांकन आवेदन पत्र निरस्त कर दिया जावेगा जिसकी जिम्मेदारी स्वयं प्रत्याशी की रहेगी और इस विषय पर किसी प्रकार का तर्क-वितर्क नहीं होगा।

9. नोड्यूज प्रमाण पत्र:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव हेतु नामांकन पत्र दाखिल करने वाले प्रत्याशी को महासभा के प्रधान / महामंत्री से नामांकन दिनांक से 7 दिवस पूर्व नोड्यूज प्रमाण पत्र प्राप्त करना आवश्यक होगा नोडयूज प्रमाण पत्र नामांकन आवेदन पत्र के साथ अनिवार्य रूप से संलग्न करना होगा।

10. अपने पद का त्याग पत्र:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु नामांकन आवेदन पत्र दाखिल करने वाले प्रत्याशी यदि महासभा की किसी भी इकाई में किसी भी पद पर हैं तो उन्हें अपना स्वीकृत त्यागपत्र नामांकन पत्र के साथ दाखिल करना होगा। त्यागपत्र का स्वीकार होना आवश्यक है।

11. किसी पद पर न होने की घोषणा:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद के प्रत्याशी यदि महासभा से संबंधित किसी भी सभा/संस्था में पदाधिकारी नहीं है तो उन्हें सादे कागज पर घोषित करना होगा कि **''मैं महासभा या इससे संबंधित किसी भी सभा में पदाधिकारी नहीं हूं''।** यह घोषणा नामांकन पत्र के साथ संलग्न करनी होगी।

12. नामांकन हेतु शपथ पत्र:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव हेतु नामांकन आवेदन पत्र के साथ प्रत्याशी को स्वयं द्वारा हस्ताक्षरित ₹500/- रूपयें के स्टांप पेपर पर नोटरी द्वारा प्रमाणित शपथ पत्र संलग्न करना अनिवार्य होगा। शपथ पत्र में यह उल्लेख होगा कि **''यदि मैं आवेदित पद पर निर्वाचित होता हूँ तो अपने स्वयं के 3 वर्षीय कार्यकाल उपरांत आने वाले नये प्रदेशाध्यक्ष को एक माह के भीतर प्रभार (चार्ज) सौंप दूंगा तथा मेरे कार्यकाल के दायित्वों की जवाबदारी भी मेरी ही होगी। मैं अपने कार्यकाल का दायित्व आगामी नये प्रदेशाध्यक्ष को नही दूंगा।"** इसके साथ में शपथ पत्र पर यह भी उल्लेख करना होगा कि **"चुनाव हेतु नामांकन के दिन चुनाव चिह्न आवंटन के समय मैं व्यक्तिगत रूप से उपस्थित रहूंगा। व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं रहने पर मेरा नामांकन आवेदन पत्र निरस्त किया जा सकेगा जिसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।"**

13. पात्रता संबंधित नियम:-

1) मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु प्रत्याशी को महासभा का न्यूनतम पत्रिका रहित (500/- रुपए) संरक्षक सदस्य होना आवश्यक है। परन्तु यहा स्पष्ट है कि महासभा के पत्रिका रहित 500/- रुपए वाले संरक्षक सदस्यों को चुनाव लड़ने की पात्रता इस शर्त के साथ दी जाती है कि चुनाव जीतने के बाद एक माह के भीतर 1600/- रुपए महासभा में जमा करा कर 2100/- रुपए का पत्रिका वाला सदस्य बनना अनिवार्य होगा। अन्यथा, उनका निर्वाचन इस अवधि के समाप्त होने ही निरस्त माना जाएगा।

2) मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु चुनाव दिनांक से 60 दिवस पूर्व बने हुए सदस्य या चुनाव अधिसूचना/ कार्यक्रम में वर्णित सदस्य बनने की अंतिम दिनांक तक बने हुए सदस्य ही पात्र होंगे।

3) मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु नामांकन दाखिल करते समय संबंधित प्रदेश की मतदाता सूची में प्रत्याशी का नाम होना आवश्यक है।

4) मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु नामांकन दिनांक को प्रत्याशी की आयु न्यूनतम 40 वर्ष या अधिक होना आवश्यक है।

5) मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु प्रत्याशी को न्यायालय द्वारा अपराधिक मामलों में दंडित, मानसिक रोग तथा लाईलाज बिमारी से ग्रसित एवं महासभा से निष्कासित नहीं होना चाहिए अन्यथा वे पात्र नहीं होगें।

14. नामांकन से संबंधित सामान्य नियम:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद के नामांकन हेतू नामांकन से संबंधित सामान्य नियम निम्नानुसार है:-

1) नामांकन आवेदन पत्र दाखिल करने,नाम वापसी या किसी भी प्रकार की घोषणा आदि जारी अधिसूचना में दर्शाई गई है।

2) जारी अधिसूचना में स्थान परिवर्तन, समय परिवर्तन, समयावधि परिवर्तन आदि का संपूर्ण अधिकार महासभा के मुख्य चुनाव अधिकारी का रहेगा।

3) प्रस्तावक व अनुमोदक को महासभा का न्यूनतम पत्रिका रहित संरक्षक सदस्य होना आवश्यक है।

4) प्रत्याशी के प्रस्तावक एवं अनुमोदक केवल एक ही नामांकन आवेदन पत्र में हो सकेंगे। किसी अन्य नामांकन आवेदन पत्र में नहीं। ऐसा होने की स्थिति में बाद में प्राप्त होने वाले नामांकन आवेदन पत्र को रद्द कर दिया जाएगा। जिसकी जिम्मेदारी स्वयं प्रत्याशी की होगी।

5) प्रत्याशी स्वयं किसी अन्य प्रत्याशी के प्रस्तावक एवं अनुमोदक नहीं हो सकेगे। ऐसा होने की स्थिति में प्रत्याशी का स्वयं का नामांकन आवेदन पत्र रद्द कर दिया जाएगा। जिसकी जिम्मेदारी स्वयं प्रत्याशी की रहेगी।

6) नामांकन आवेदन पत्र दाखिल करते समय प्रत्याशी को स्वयं उपस्थित रहना होगा साथ ही प्रत्याशी का एक प्रस्तावक एवं दो अनुमोदक जो कि नामांकन आवेदन पत्र में दर्शाये गये हैं उनको भी स्वयं उपस्थित रहना अनिवार्य होगा।

7) प्रत्याशी, प्रस्तावक व अनुमोदक को अपने पहचान पत्र की मूल प्रति नामांकन के समय सत्यापन हेतु दिखानी होगी।

8) नामांकन के समय प्रत्याशी,प्रस्तावक एवं अनुमोदक को परिचय के लिए महासभा द्वारा जारी परिचय पत्र के साथ ही सरकार द्वारा जारी पहचान पत्र (ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट, पैन कार्ड, आधार कार्ड, वोटर कार्ड अथवा अन्य कोई फोटो युक्त पहचान पत्र) की फोटो प्रति नामांकन पत्र के साथ संलग्न करना आवश्यक है। चुनाव अधिकारियो द्वारा मांगने पर मूल प्रति भी दिखाना आवश्यक है।

9) प्रत्याशी एक अथवा एक से अधिक नामांकन आवेदन पत्र दाखिल कर सकते है। एक से अधिक नामांकन आवेदन पत्र जमा होने की स्थिति में किसी भी एक सही नामांकन आवेदन पत्र को मान्यता देते हुए शेष को रद्द कर दिया जाएगा तथा जमा चुनाव व्यवस्था शुल्क वापस नहीं होगा। प्रत्याशी द्वारा यदि एक से अधिक नामांकन आवेदन पत्र दाखिल किया जाता हैं तो प्रत्येक के साथ चुनाव व्यवस्था शुल्क एवं आवश्यक दस्तावेज पृथक-पृथक जमा करना आवश्यक होगा।

10) नामांकन प्रक्रिया में अंतिम प्रत्याशी एक ही रहने की स्थिति में चुनाव अधिकारी द्वारा उसे मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश जेसी भी स्थिति हो उस प्रदेश सभा का प्रदेशाध्यक्ष घोषित करते हुए पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई जावेगी।

11) नामांकन प्रक्रिया में एक से अधिक प्रत्याशी अंतिम रहने की स्थिति में उन्हें चुनाव चिह्न आंवटित कर दिए जाएंगे और जारी अधिसूचना के अनुसार गुप्त मतदान द्वारा चुनाव संपन्न कराए जाएंगे। चुनाव चिन्ह अंग्रेजी के अलफावेट के अनुसार आंवटित होंगें।

15. नामांकन आवेदन पत्र रद्द होने के प्रमुख कारण:-

A नामांकन पत्र में कोई भी सूचना अपूर्ण होने पर।

B. प्रत्याशी, प्रस्तावक एवं अनुमोदक की सदस्यता संख्या का मिलान नहीं होने पर।

C. नामांकन नियमानुसार आवश्यक दस्तावेज नहीं होने पर।

D. प्रत्याशी, प्रस्तावक एवं अनुमोदक का उस क्षेत्र की मतदाता सूची में नाम नहीं होने पर ।

E. प्रत्याशी द्वारा महासभा प्रधान पद पर दो कार्यकाल पूर्ण कर निरंतर तीसरी बार नामांकन आवेदन पत्र दाखिल करने पर।

F. नामांकन आवेदन पत्र में गलत सूचना दर्शाए जाने पर।

G. प्रत्याशी की पात्रता नियमानुसार नहीं होने पर।

H. नामांकन आवेदन पत्र एवं प्रस्तुत दस्तावेजों में बदलाव करने अथवा काट छांट करने पर ।

I. प्रत्याशी द्वारा नामांकन आवेदन पत्र दाखिल करने और सही पाए जाने के पश्चात भी यदि उसके विरुद्ध लिखित शिकायत प्रमाण सहित प्राप्त होती है तो उस स्थिति में किसी भी स्तर उसे अयोग्य घोषित किया जा सकेगा। जिसकी जिम्मेदारी स्वयं प्रत्याशी की होगी। अतः प्रत्याशी सत्यता के आधार पर ही नामांकन आवेदन पत्र दाखिल करें।

J.. मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश प्रदेश सभा के प्रदेशाध्यक्ष पद के प्रत्याशियों को चुनाव चिह्न आवंटन के समय चुनाव अधिकारियों के समक्ष स्वयं उपस्थित रहना अनिवार्य है। यदि चुनाव चिह्न आवंटन के समय प्रत्याशी स्वयं उपस्थित नहीं रहते हैं तो उनका नामांकन आवेदन निरस्त कर दिया जाएगा और उनका नाम निर्वाचन प्रक्रिया में प्रत्याशी होने से हटा दिया जाएगा। जिसके लिए प्रत्याशी स्वयं जिम्मेदार होगा। इस पर कोई तर्क वितर्क नहीं हो सकेगा। अतः चुनाव चिह्न आवंटन के समय प्रत्याशी अनिवार्य रूप से उपस्थित रहे।

16. निरंतरता का नियम:-

महासभा का कोई भी सदस्य निरंतर (लगातार) 2 बार से अधिक प्रदेशाध्यक्ष नहीं बन सकेगा। इस शर्त के परिपेक्ष्य में यदि मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश का कोई सदस्य तीसरी बार निरंतर प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु नामांकन करता है तो उसका नामांकन निरस्त कर दिया जाएगा। यदि कोई सदस्य मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश का तीसरी बार प्रदेशाध्यक्ष बनना चाहता है तो उसे एक सत्र का गैप (ब्रेक) देना होगा। निरंतरता का यह नियम केवल चुनाव के माध्यम से पदाधिकारी बनने वाले सदस्यों के लिए ही हैं। महासभा या इसके अंतर्गत किसी भी सभा में किसी मनोनित पदाधिकारी पर निरंतरता का नियम लागू नही होगा।

17. मतदाता सूची संबंधित नियम:-

1) मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु निर्धारित दिनांक तक मतदाता सूची में संशोधन लिखित पत्र द्वारा एवं ईमेल पर प्राप्त शिकायत के आधार पर संभव हो सकेगा। अधिसूचना जारी होने के बाद सदस्यता स्थानांतरण का निवेदन मान्य नहीं होगा।

2) मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव हेतु मतदाता सूची का प्रकाशन चुनाव कार्यक्रम अनुसार निर्धारित दिनांक को महासभा की वेबसाइट पर किया जावेगा।

3) अंतिम संशोधित मतदाता सूची जारी होने के पश्चात किसी भी प्रकार का संशोधन एवं आपत्ति मान्य नहीं होगी और किसी भी न्यायालय में परिवाद हेतु वैद्य नहीं मानी जावेगी।

4) नामांकन के समय घोषित अंतिम सूची के प्रत्याशियों को मतदाता सूची निशुल्क दी जाएगी। मतदाता सूची केवल डिजिटल दी जावेगी।

5) इसके अतिरिक्त किसी को मतदाता सूची की आवश्यकता है तो सशुल्क रुपए 3/-प्रति पृष्ठ अनुसार महासभा कार्यालय से व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर प्राप्त की जा सकती है।

18. आवश्यक सूचीयो का प्रकाशन:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद के चुनाव हेतु मतदान केंद्र एवं मतदान स्थल सहित बूथ प्रभारियों की सूची पत्रिका/वेबसाईट/अन्य माध्यम से समयानुसार प्रकाशित की जावेगी।

19. बूथ निर्धारण:-

बूथ निर्धारण नामांकन पूर्व किया जाना प्रस्तावित है लेकिन देरी होने की अवधि में बूथ अनुसार मतदाता सूची तैयार करने मे भी समय लग सकता है। मतदाता सूची बूथ अनुसार तैयार होते ही सार्वजनिक कर दी जावेगी साथ ही प्रत्याशी की मांग पर उन्हे अलग से भी दी जाएगी।

20. मतपत्र का नमूना:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद के चुनाव हेतु मतपत्र का नमूना महासभा की पत्रिका में प्रकाशित किया जावेगा।

21. प्रदेशाध्यक्ष पद का कार्यकाल:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश प्रदेश सभा के प्रदेशाध्यक्ष पद का कार्यकाल उनके चुने जाने की दिनांक से 3 वर्ष का रहेगा।

22. मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश सभाओं के प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव में नामांकन दिनांक के बाद एवं चुनाव दिनांक के पूर्व:-

1) कोई प्रत्याशी अपना नाम किसी अन्य प्रत्याशी के पक्ष में वापस ले लेता है, तब भी मत पत्र पर उसका नाम प्रकाशित होगा। चाहे उसने चुनाव अधिकारी को इसकी सूचना दी हो या नहीं।

2) यदि चुनाव में सभी प्रत्याशी किसी एक प्रत्याशी के समर्थन में अपना नाम वापस ले लेते है या चुनाव लडना नहीं चाहते हैं तो इसकी लिखित सूचना **रुपये 500/- के स्टाम्प** पर नोटरी द्वारा प्रमाणित शपथ पत्र के साथ संबंधित चुनाव अधिकारी को दी जावेंगीं। ऐसी परिस्थिति में चुनाव में शेष रहे एक प्रत्याशी को चुनाव से पूर्व ही निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिया जावेगा और चुनाव दिनांक को चुनाव नहीं होंगे। चुनाव नहीं लडने या किसी अन्य प्रत्याशी के पक्ष के नाम वापस लेने की उपरोक्तानसुार सूचना मतदान प्रारम्भ होने के समय से 7 दिवस पूर्व देना आवश्यक होगा अन्यथा सूचना पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

23. चुनाव अधिसूचना:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद की चुनाव अधिसूचना एक बार जारी होने के बाद विशेष परिस्थितियो को छोडकर किसी भी दशा में बीच में नहीं रोकी जा सकेगी।

24. आदर्श आचार संहिता:-

1) मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशसभा के प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव हेतु अधिसूचना जारी होने की दिनांक से आदर्श आचार संहिता लागू मानी जावेगीं और सम्बन्धित पदाधिकारी तथा सभा द्वारा कोई नीतिगत निर्णय नहीं लिया जा सकेगा ओर ऐसा कोई कार्य नही किया जाएगा जिससे चुनाव प्रभावित होते हो या चुनाव में व्यवधान उत्पन्न होता हो।

2) सम्बन्धित पदाधिकारीयो द्वारा मुख्य चुनाव अधिकारी एवं चुनाव अधिकारीयो को सहयोग नहीं करना भी आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन माना जाएगा।

25. मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेश के प्रदेशाध्यक्ष पद के नामांकन प्रस्तुति के समय प्रत्याशी सहित अधिकतम 7 व्यक्ति ही चुनाव अधिकारियो के समक्ष उपस्थित हो सकेंगे जिससे नामांकन स्थल पर अनावश्यक भीड़ न हो तथा शांत वातावरण बना रहे और नामांकन कार्य में व्यवधान उत्पन्न ना हो।

26. मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद के प्रत्याशी नामांकन से पूर्व चुनाव संबंधित आवश्यक दिशा निर्देश, सूचना एवं नियमो का भली भांति अवलोकन एवं अध्ययन कर लेवे।

27. मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद के प्रत्याशियों की सुविधा के लिए "चुनाव निर्देशिका " महासभा की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

28. शिकायत एवं संशय:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव से संबंधित शिकायत एवं संशय का निराकरण अंतिम रूप से महासभा के प्रधान एवं मुख्य चुनाव अधिकारी द्वारा किया जाएगा। महासभा प्रधान एवं मुख्य चुनाव अधिकारी द्वारा संयुक्त रूप से दिया गया निर्णय अंतिम, सर्वसम्मत और सभी के लिए सर्वमान्य एवं बंधनकारी होगा।

29. अन्य सूचना, दिशा-निर्देश एवं नियम:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव से संबंधित उपरोक्त के अतिरिक्त तात्कालिक परिस्थितियों को देखते हुए और भी दिशानिर्देश, सूचना तथा नियम हो सकते हैं जो चुनाव प्रक्रिया के अनुक्रम में समयानुसार जारी किए जा सकेंगे। ऐसी सूचना तथा नियम भी निर्देशिका के भांति ही लागू एवं मान्य होगे।

30. न्याय क्षेत्र:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव के संबंध में किसी भी विवादित मामले के लिये न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

31. नोडल अधिकारी:-

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश के प्रदेशाध्यक्ष पद चुनाव संपन्न कराने हेतु महासभा महामंत्री श्री सांवरमल जांगिड "नोडल अधिकारी" रहेंगे।

32. चुनाव अधिकारी:-

समाज की प्रतिष्ठा को बनाए रखते हुए, प्रजातांत्रिक, शांतिपूर्ण एवं निष्पक्षता से प्रदेश सभा मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश के प्रदेशाध्यक्ष पद के चुनाव संपन्न कराने हेतु निम्नानुसार चुनाव अधिकारी मनोनीत किए गए हैं।

***** चुनाव अधिकारी *****

प्रदेश सभा मध्य प्रदेश हेतु:-

1. श्री रामजीलाल जांगिड	जयपुर मो.न.	9829654360
2. श्री मनोज कुमार जांगिड	जयपुर मो.न.	9414648088

प्रदेश सभा महाराष्ट्र हेतु:-

1. श्री बजरंग लाल शर्मा	दुर्ग मो.न.	9425246444
2. श्री सतीश जांगिड	धमतरी मो.न.	7000588224

प्रदेश सभा उत्तरप्रदेश हेतु:-

1. श्री राधेश्याम मांडन	सीकर मो.न.	8058101502
2. श्री ब्रह्मदेव शर्मा	ब्यावर मो.न.	9783694225

प्रतिलिपि :-
समस्त चुनाव अधिकारियों एवं सम्बन्धित प्रदेश
अध्यक्षों को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु

प्रवीण कुमार शर्मा
मुख्य चुनाव अधिकारी
महासभा-दिल्ली

॥ शुभ दीपावली ॥

॥ दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ ॥

सम्माननीय समाज बंधु, मातृ शक्ति, युवा शक्ति और महासभा के समस्त सदस्य गण प्रकाश का यह महापर्व आप सभी के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य और खुशहाली का नया उजाला लेकर आए। **माँ लक्ष्मी की कृपा से प्रत्येक परिवार आर्थिक रूप से सशक्त बने तथा भगवान श्री गणेश के आशीर्वाद से समाज प्रगति, प्रतिष्ठा और सफलता के नए आयाम स्थापित करे।**



दीपावली केवल दीप जलाने और खुशियाँ मनाने का पर्व नहीं है, बल्कि यह अंधकार से प्रकाश, निराशा से आशा और बिखराव से एकता की ओर बढ़ने की प्रेरणा भी देता है। यह पावन अवसर हमें आत्ममंथन करने और समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए ठोस कदम उठाने का संदेश देता है।आज आवश्यकता है कि हम सब मिलकर समाज की एकता को अपनी सबसे बड़ी शक्ति बनाएँ और समरसता, आर्थिक उन्नति, सामाजिक सशक्तीकरण तथा राजनीतिक भागीदारी के नए द्वार खोलें।

आओ हम सब मिलकर दीपावली के इस पावन पर्व पर कुछ संकल्प ले। हमारे समाज का प्रत्येक परिवार, प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक पीढ़ी समान सम्मान की अधिकारी है। ऊँच-नीच, आपसी मतभेद, क्षेत्रीय भेदभाव और व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर परस्पर प्रेम, सहयोग, सद्भाव और भाईचारे को मजबूत करें। समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर चलना ही सच्ची समरसता है।

शिक्षा, तकनीकी कौशल, व्यापार, उद्योग, स्वरोजगार और उद्यमिता को बढ़ावा देकर समाज के युवाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाएँ। समाज के संपन्न बंधु जरूरतमंद परिवारों, प्रतिभाशाली विद्यार्थियों और नवउद्यमियों के सहयोग के लिए आगे आएँ। आपसी सहयोग और सामूहिक प्रयासों से आर्थिक सशक्तीकरण का मजबूत आधार तैयार करें।शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। बेटियों की शिक्षा, युवाओं के कौशल विकास, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी तथा जरूरतमंद विद्यार्थियों के सहयोग के लिए संगठित प्रयास करें। विवाह में अनावश्यक खर्च, दहेज, मृत्युभोज, दिखावा और अन्य सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का संकल्प लें। सादा जीवन उच्च विचार और सुसंस्कारित एवं जागरूक समाज ही हमारी वास्तविक पहचान हैं।

लोकतंत्र में समाज की उचित भागीदारी, जागरूकता और नेतृत्व क्षमता अत्यंत आवश्यक है। युवाओं को राजनीति, प्रशासन और जनसेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें। योग्य, शिक्षित और समाजहित के प्रति समर्पित नेतृत्व तैयार करें। आपसी एकजुटता, संवाद और संगठनात्मक शक्ति के माध्यम से समाज की समस्याओं को प्रभावी ढंग से उठाएँ तथा संवैधानिक और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा समाज की एकता, जागरूकता और विकास का सशक्त माध्यम है।

आइए, महासभा के उद्देश्यों को जन-जन तक पहुँचाएँ, सदस्यता अभियान को गति दें, सामाजिक संस्थाओं को मजबूत बनाएँ और प्रत्येक समाज बंधु को संगठन से जोड़ें। आइए, हम सब मिलकर अपने समाज में प्रेम, विश्वास, सहयोग और सद्भाव के दीप प्रज्वलित करें। व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर सामूहिक हितों को प्राथमिकता दें और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक शिक्षित, संगठित, समृद्ध, संस्कारित तथा सशक्त समाज का निर्माण करें।

हम सब एक हैं, हमारी पहचान एक है और हमारे समाज की उन्नति का लक्ष्य भी एक है।

इसी विश्वास के साथ पुनः आप सभी समाज बंधुओं एवं आपके परिवारों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ। यह पर्व आपके जीवन में अनंत खुशियाँ लाए और हमारा समाज एकता एवं प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर रहे।

समाज की सेवार्थ तत्पर,

रामपाल शर्मा- प्रधान महासभा **सांवरमल जांगिड –महामंत्री महासभा**

एवं अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली की समस्त कार्यकारिणी

त्र्यंम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन के साथ ही भगवान शिव के आशीर्वाद की आत्मानुभूति

महासभा प्रधान, रामपाल शर्मा



भारत देश की महान संस्कृति और आध्यात्मिक ऊर्जा हमेशा ही हमें एक प्रेरणा देती रही क्योंकि संत महात्माओं और ऋषि मुनियों ने अपने अमृतमयी उपदेशों का माध्यम से इस धरा को पवित्र किया है। भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण ने अवतरित होकर अपनी लीलाओं के माध्यम से इस संसार को सन्मार्ग दिखाने का कार्य किया। देश की आध्यात्मिक सनातन संस्कृति बहुत ही महान रही है और सदियों से ही लोगों को आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान कर रही है। भारत की इसी धरा पर विभिन्न प्रदेशों में 12 ज्योतिर्लिंगों में से महाराष्ट्र प्रदेश में तीन ज्योतिर्लिंग हैं और उन तीनों ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करने का महाराष्ट्र प्रवास के दौरान दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हालांकि मैं पहले दो बार त्र्यंम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के लिए गया हूँ, लेकिन पहले दोनों बार ही दर्शन अकेले ही किए थे। इस बार भगवान भोलेशंकर की कृपा से मेरी अर्धांगिनी कृष्णाजी के साथ अचानक ही तीनों ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करने का कार्यक्रम बन गया। मैं समझता हूँ कि यह कार्यक्रम आध्यात्मिक चेतना की जागृति का एक सुखद अनुभव रहा है। सबसे पहले हम 19 सितंबर को पुणे पहुंचे और 20 सितंबर को पुणे में मिश्रीलाल जी दायमा के माध्यम से, भगवान भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग के दर्शन की समुचित व्यवस्था करवाई गई और मुझे अपनी जीवनसंगिनी कृष्णाजी के साथ दर्शन करके आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ, सुखद अनुभूति का अहसास हुआ। उसके बाद 20 सितंबर की रात को ही हम नाशिक पहुंचे और वहां पर रात्रि में समाज बंधुओं के साथ, समाज के उत्थान और नाशिक में बनने वाले प्रदेश सभा भवन के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा की महाराष्ट्र प्रदेश सभा द्वारा, प्रदेश सभा भवन बनाने के लिए 22.80 गूठां का एक प्लाट नाशिक - त्र्यंम्बकेश्वर रोड़ पर खरीदा गया है और उम्मीद है कि इस प्रदेश सभा भवन का लाभ अगले वर्ष होने वाले सिंहस्थ महाकुंभ में विभिन्न प्रदेशों से आने वाले समाज बंधुओं को मिलेगा।

21 सितंबर को वीआईपी दर्शन की व्यवस्था, महासभा के सम्पादक राम भगत शर्मा के सौजन्य से, महानगर पालिका नाशिक की आयुक्त मनीषा शर्मा द्वारा करवाई गई। भगवान त्र्यंबकेश्वर के दर्शन कर जलाभिषेक भी किया। ऐसा लगा कि साक्षात भगवान शिव का आशीर्वाद मिल गया है। मुझे एक दिव्य अनुभूति का अहसास हुआ। मैंने भगवान त्र्यंबकेश्वर के दर्शन करके अपनी आध्यात्मिक प्यास बुझाने के साथ ही जांगिड समाज की, सुख समृद्धि और शांति के लिए आशीर्वाद मांगा।

यह संयोग ही कहा जाएगा कि विघ्नहर्ता भगवान गणेश का उत्सव भी इस दौरान महाराष्ट्र में बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। 20 सितंबर को रात्रि में गणपति बप्पा के दर्शन करके आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति का अहसास हुआ और हमारी यह धार्मिक यात्रा एक प्रकार से सफल हो गई।

त्र्यंम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग एक प्राचीन मंदिर है, जो नाशिक से 28 किलोमीटर दूर त्र्यंम्बकेश्वर तहसील, त्र्यंम्बकेश्वर में स्थित है। यह नाशिक की पुण्य और पावन धरा कुंभ नगरी के नाम से विख्यात, धार्मिक आस्था और प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं और गौरवशाली इतिहास को अपने गर्भ में समाहित किए हुए हैं। **देश में कुल 12 ज्योतिर्लिंगो, जिनमें ॐ सोमनाथं नमः, ॐ मल्लिकार्जुन नमः, ॐ महाकालेश्वरं नमः, ॐ ओंकारेश्वरं नमः, ॐ केदारनाथं नमः, ॐ भीमाशंकरं नमः, ॐ विश्वनाथं नमः, ॐ त्रयम्बकेश्वरं नमः, ॐ वैद्यनाथं नमः, ॐ नागेश्वरं नमः, ॐ रामेश्वरं नमः, ॐ घुश्मेश्वरं नमःहै इनमें 8 वां स्थान त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग का आता है।** यह मंदिर ब्रह्मगिरी पर्वत की तलहटी मे बना है, यही से गोदावरी नदी का उद्गम स्थल भी है। यह

मन्दिर काले पत्थरों से बना हुआ है। **मन्दिर के अंदर गर्भगृह में प्रवेश करने के बाद एक कुण्ड दिखाई देता है और ध्यान से देखने पर इसके भीतर एक-एक इंच के तीन लिंग दिखाई देते हैं। इन लिंगों को ही त्रिदेव - ब्रह्मा - विष्णु और महेश का अवतार माना जाता है।**

ऐसा उल्लेख मिलता है कि इस मन्दिर का जीर्णोद्धार पेशवा राजाओं द्वारा सन 1755 में शुरू करवाया गया था और 1786 में इसका कार्य संपन्न हुआ। कुछ उपलब्ध तथ्यों के आधार पर आंकलन किया गया है कि इस भव्य प्राचीन मन्दिर के निर्माण कार्य में उस समय लगभग 16 लाख रुपए खर्च किए गए है। त्र्यम्बकेश्वर मन्दिर सुबह 5 बजे खुलता है और रात्रि 9 बजे तक दर्शन किए जा सकते हैं। लेकिन मुकुट हर सोमवार को सांयकाल 4 बजे से 5 बजे तक प्रदर्शित किया जाता है। यहां पर रुद्राभिषेक भी किया जा सकता है।

नाशिक में देश के कौने -कौने से आने वाले लोगों की भीड़ का मुख्य कारण यह है कि यहां पर लोग पूर्णमासी और अमावस्या को रामकुण्ड में स्नान करने के साथ - साथ, त्र्यंम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन के लिए भी आते हैं। त्र्यम्बकेश्वर मन्दिर में कई प्रकार की पूजा करवाई जाती हैं, जिनमें प्रमुख रूप से काल सर्प पूजा, नारायण नागबली पूजा, त्रिपिण्डी श्रद्धा पूजा और महामृत्युंजय पूजा की जाती है। यहां पर वैसे तो पूरे साल ही भीड़ रहती है, लेकिन सावन के महीने में हर सोमवार को रिकॉर्ड तोड़ भीड़ होती है।

नाशिक में हर 12 साल बाद महाकुंभ आयोजित होता है। देश में कुल चार जगह महाकुंभ होता है, जिनमें हरिद्वार, उज्जैन, प्रयागराज और नाशिक शामिल हैं। ऐसा उल्लेख मिलता है कि सतयुग में सिंहस्थ मेला, श्रीक्षेत्र कपिलधारा तीर्थ, सिंहस्थ मूल स्थान, कनवई, तहसील इगतपुरी जिला नाशिक में लगता था। नाशिक की यह पुण्य धरा भगवान श्री राम, आदिशक्ति माँ सीता और लक्ष्मण के 14 वर्षों के वनवास की साक्षी भी रही है। यही पर पंचवटी में सीता गुफा के साथ ही लक्ष्मण के द्वारा शरुपणखां की नाक काटी गई थी, वह स्थान भी दर्शनीय है। यहां पर गोदावरी नदी के किनारे भगवान कपालेश्वर महादेव का मन्दिर भी है। नाशिक से त्र्यंम्बकेश्वर जाते समय रास्ते में अंजनेरी पर्वत भी आता है, जो हनुमानजी की जन्म स्थली माना जाता है। त्र्यंम्बकेश्वर के साथ लगता हुआ ब्रह्मगिरी पर्वत भी है, जिसकी लोग परिक्रमा करते हैं,जहां से गोदावरी का उद्गम स्थल माना जाता है। ब्रह्मगिरी पर्वत पर चढ़ने के लिए 700 सीढियां बनाई गई हैं। इनके माध्यम से ही रामकुण्ड और लक्ष्मण कुण्ड पर पहुंचा जा सकता है और शिखर पर पहुंचने पर भगवती गोदावरी मां के दर्शन होते हैं।

हालांकि समय की व्यस्तता के कारण हमें ज्यादा घूमने-फिरने का अवसर तो नहीं मिल पाया, लेकिन महाराष्ट्र प्रदेश के कार्यकारी अध्यक्ष ताराचंद जांगिड, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण जांगिड, जिला अध्यक्ष गोपाल जांगिड और पूर्व जिला अध्यक्ष विनोद जांगिड तथा रामावतार जांगिड के सेवा भाव ने, मेरा दिल जीत लिया और इन सभी लोगों ने भी, हमारे साथ ही भगवान त्र्यंम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन किए।

उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया है, कि महाराष्ट्र प्रदेश सभा द्वारा हर सम्भव प्रयास किया जाएगा, कि महाराष्ट्र प्रदेश भवन सिंहस्थ कुंभ मेले से पहले बनकर तैयार हो जाए ताकि इसका लाभ देश के कौने - कौने से आने वाले समाज बंधुओं को मिल सके। त्र्यंम्बकेश्वर दर्शन के बाद, हम नाशिक - त्र्यंम्बकेश्वर रोड़ पर महाराष्ट्र प्रदेश सभा द्वारा प्रदेश भवन निर्माण के लिए खरीदे गए प्लॉट को देखने गए। यह बहुत ही रमणीय जगह पर खरीदा गया है। इस भवन की कंक्रीट की चार दिवारी बनाने का काम पूरा हो चुका है। मैं प्रदेश सभा महाराष्ट्र को यह प्लाट खरीदने पर महासभा की ओर से समस्त जांगिड समाज की ओर से बहुत - बहुत आभार व्यक्त करता हूँ और बधाई देता हूँ।

अन्त में मैं, केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि भगवान शिव ने जिस प्रकार से विष को अपने गले में ही रोक लिया था, उसी तरह अपनी बुराइयों को अपनी सफलता के कभी भी आडे नहीं आने देना चाहिए। मैं नाशिक, पुणे और अहमदनगर के सभी समाज बंधुओं का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि आपका यह असीम प्रेम और स्नेह सदैव ही मुझ पर इसी प्रकार से बना रहे। विपुल धन्यवाद।

****

महासभा की चेन्नई त्रैमासिक बैठक नए संकल्पों के साथ संपन्न



चेन्नई, 18 अक्टूबर, अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की त्रैमासिक बैठक 18 अक्टूबर 2026 को चेन्नई स्थित AMRK Banquet Hall में महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। यह बैठक तमिलनाडू प्रदेश सभा के तत्वाधान मे की गई। इस बैठक के साथ ही तमिलनाडू प्रदेश सभा की नवगठित कार्यकारिणी को भी शपथ दिलाई गई। बैठक में समाज की एकता, राजनीतिक भागीदारी, शिक्षा के विस्तार, सदस्यता अभियान, मातृशक्ति की सक्रिय भूमिका तथा सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर व्यापक विचार-विमर्श किया गया। बैठक में समाज के सर्वांगीण विकास के लिए नए संकल्पों के साथ संगठित प्रयास करने पर विशेष बल दिया गया।





कार्यक्रम में तेलंगना विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष मधुसूदन आचार्य, मुरुगासेल्वम विश्वकर्मा, चेयरमेन, विश्वकर्मा फेडरेशन ऑफ इंडिया तथा तमिलनाडू के पूर्व पुलिस महानिदेशक सांगाराम जांगिड, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष लादूराम जांगिड सहित विभिन्न प्रदेशों के अध्यक्ष, राष्ट्रीय महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्षा, उच्चस्तरीय समिति एवं कोर कमेटी के सदस्य, प्रदेश प्रभारी, विभिन्न प्रकोष्ठों के प्रभारी तथा महासभा कार्यकारिणी के विभिन्न पदाधिकारी, तमिलनाडू प्रदेश कार्यकारिणी के पदाधिकारी, यहाँ के समाज बंधु, मातृ शक्ति और युवाओं ने बैठक में भाग लिया।

सबसे पहले महासभा का झण्डा फहराया गया। उसके बाद भगवान श्री विश्वकर्मा के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं आरती के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। तत्पश्चात अतिथियों का सम्मान किया गया। महासभा के महामंत्री सांवरमल जांगिड ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए उपस्थित पदाधिकारियों एवं समाजबंधुओं का अभिनन्दन किया। उन्होंने त्रैमासिक कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा बैठक के निर्धारित एजेंडे पर चर्चा प्रारम्भ हुई। विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार रखते हुए समाज के वर्तमान स्वरूप, चुनौतियों एवं भविष्य की कार्ययोजना पर महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

विशिष्ट अतिथि मधुसूदन आचार्य ने अपने उद्बोधन में समाज की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि किसी भी समाज की प्रगति के लिए सामाजिक एकता और राजनीतिक जागरूकता दोनों आवश्यक हैं। जांगिड समाज का स्वर्णिम इतिहास रहा है और समाज को अपनी ऐतिहासिक विरासत से प्रेरणा लेकर वर्तमान समय की चुनौतियों का सामना करना चाहिए। उन्होंने समाज के लोगों से स्थानीय निकायों से लेकर विधानसभा एवं संसद तक लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया।







मुरुगा सेल्वम विश्वकर्मा ने समाज की जनसंख्या और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के बीच अंतर की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि समाज की जनसंख्या के अनुपात में राजनीतिक क्षेत्र में भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिए समाज को संगठित होकर दीर्घकालीन रणनीति बनानी होगी। उन्होंने विशेष रूप से मातृशक्ति की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए महिलाओं को सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों में आगे आने का आह्वान किया।

राष्ट्रीय महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्षा श्रीमती सविता जांगिड ने महासभा प्रधान रामपाल शर्मा के प्रति आभार व्यक्त किया कि वे मातृशक्ति को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। उन्होंने कहा कि समाज की उन्नति के लिए महिलाओं को उचित अवसर, सम्मान और निर्णय लेने में भागीदारी मिलनी चाहिए। उन्होंने सामाजिक आयोजनों में अनावश्यक दिखावे तथा कुरीतियों पर रोक लगाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने मातृशक्ति से सामाजिक सुधार के कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया।

महासभा के सलाहकार श्रीगोपाल जांगिड ने बैठक के भव्य आयोजन के लिए तमिलनाडू प्रदेश अध्यक्ष रामकिशोर आसलिया एवं उनकी टीम का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा देशभर के समाजबंधुओं को एक मंच पर लाने वाला महत्वपूर्ण संगठन है। उन्होंने महासभा की उपस्थिति देश के अधिकाधिक प्रदेशों में मजबूत करने तथा संगठनात्मक गतिविधियों का विस्तार करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती के लिए सदस्यता अभियान को व्यापक बनाना आवश्यक है। अधिकाधिक समाजबंधुओं को महासभा से जोड़कर संगठन की पहुंच और कार्यक्षमता बढ़ाई जा सकती है।

तमिलनाडू के पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री सांगाराम जांगिड ने समाज की सदस्यता को लेकर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि समाज की अनुमानित जनसंख्या और महासभा के सदस्यों की संख्या के बीच काफी अंतर है। उनके अनुसार यह स्थिति सदस्यता अभियान को अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता दर्शाती है। उन्होंने शिक्षा को समाज के विकास का प्रमुख आधार बताते हुए बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने पर विशेष बल दिया। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को सहायता, मेधावी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन तथा प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के लिए ठोस योजनाएं बनाने की आवश्यकता बताई।

महासभा राजनीतिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष, **राकेश जांगिड** ने समाज के अधिकाधिक लोगों से राजनीति में सक्रिय भागीदारी निभाने का



आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सामाजिक समस्याओं के समाधान और समाज के हितों को उचित मंच तक पहुंचाने के लिए राजनीतिक जागरूकता आवश्यक है। उन्होंने सभी समाजबंधुओं को नवरात्रि एवं दीपावली की शुभकामनाएं भी दीं।

राजेश विश्वकर्मा ने उत्तर प्रदेश में सरकार द्वारा विश्वकर्मा मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए दी जा रही आर्थिक सहायता का उल्लेख करते हुए कहा कि सामाजिक जागरूकता और संगठित प्रयासों से सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। उन्होंने समाज को प्रत्येक प्रदेश में अपनी राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने के लिए संगठित प्रयास करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि समाज को शिक्षा, संगठन, जनसंपर्क और लोकतांत्रिक भागीदारी के माध्यम से अपनी नेतृत्व क्षमता विकसित करनी चाहिए, ताकि भविष्य में विभिन्न स्तरों पर समाज का प्रतिनिधित्व बढ़ सके। **भंवरलाल गुगरिया** ने अपने उद्बोधन मे कहा कि समाज के युवाओं को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करने तथा उनके लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने की विशेष आवश्यकता है। गुगरिया ने शिक्षा, कौशल विकास, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और रोजगार के अवसरों के प्रति युवाओं को जागरूक बनाने की आवश्यकता बताई।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए महासभा प्रधान, रामपाल शर्मा ने भव्य आयोजन के लिए तमिलनाडू प्रदेश अध्यक्ष रामकिशोर आसलिया तथा उनकी पूरी टीम का आभार व्यक्त किया। उन्होंने तमिलनाडू प्रदेश की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए आशा व्यक्त की कि नई टीम संगठन को मजबूत बनाने तथा समाजहित के कार्यों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देगी। उन्होंने समाज की एकता को महासभा की सबसे बड़ी शक्ति बताते हुए कहा कि संगठन की वास्तविक मजबूती तभी संभव है, जब प्रत्येक समाजबंधु व्यक्तिगत मतभेदों से ऊपर उठकर सामूहिक हितों को प्राथमिकता दे। **सदस्यता विस्तार, शिक्षा, सामाजिक सुधार, मातृशक्ति की भागीदारी तथा राजनीतिक जागरूकता को उन्होंने समाज के विकास के प्रमुख आधार बताया।**

बैठक के दौरान अंगिरस भारती स्कूल के जीर्णोद्धार एवं विकास में योगदान देने वाले समाजबंधुओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनका सम्मान किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के लिए सहयोग करने वाले महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष लादूराम जांगिड को सम्मानित किया गया। **साथ ही भामाशाह और उच्च स्तरीय कमेटी सदस्य पी.एल.शास्त्री और कोर कमेटी सदस्य विद्यासागर को भी महासभा द्वारा सम्मानित किया गया।** महासभा द्वारा संगठनात्मक कार्यों में सक्रियता एवं योगदान को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से **वर्ष 2025 के लिए राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष घनश्याम शर्मा (पंवार) तथा वर्ष 2026 के लिए महाराष्ट्र प्रदेशाध्यक्ष नानूराम जांगिड** को सर्वश्रेष्ठ प्रदेशाध्यक्ष के रूप में नामित कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने अंगिरस भारती स्कूल के जीर्णोद्धार एवं विकास कार्यों के लिए समाज के भामाशाहों से आर्थिक सहयोग की अपील की। उन्होंने कहा कि शिक्षा किसी भी समाज की उन्नति का मूल आधार है। विद्यालयों को बेहतर सुविधाओं से युक्त बनाने तथा विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए समाज के समर्थ व्यक्तियों को आगे आना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में दिया गया सहयोग समाज की भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

बैठक में महासभा के पदाधिकारियों ने समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों एवं बदलती परिस्थितियों से उत्पन्न चुनौतियों पर गंभीरता से विचार-विमर्श किया। इस विषय पर आयोजित चर्चा में विभिन्न प्रदेशाध्यक्षों एवं प्रदेश प्रभारियों ने भाग लिया। सामाजिक सुधार को महासभा के प्रमुख दायित्वों में शामिल करते हुए अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर व्यापक चर्चा की गई।

बैठक में प्री-वेडिंग के बढ़ते प्रचलन, मृत्युभोज, दहेज प्रथा, विवाह एवं अन्य सामाजिक आयोजनों में अनावश्यक दिखावे तथा नवयुवकों में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति पर रोक लगाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। वक्ताओं ने कहा कि इन समस्याओं का समाधान केवल विचार-विमर्श से नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता, पारिवारिक सहयोग और सामूहिक संकल्प से संभव है।

युवाओं एवं युवतियों के अंतर्जातीय विवाह से जुड़े विषय पर भी चर्चा की गई। इस संदर्भ में परिवारों और युवाओं के बीच संवाद,



आपसी सम्मान, जिम्मेदारी तथा विवाह संबंधी निर्णयों में परिपक्वता को बढ़ावा देने की आवश्यकता रेखांकित की गई। साथ ही विवाह की उचित उम्र, वैवाहिक जीवन की जिम्मेदारियों और परिवार निर्माण के प्रति जागरूकता पैदा करने पर बल दिया गया।



बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित करने, परिवारों में नैतिक मूल्यों को मजबूत बनाने तथा नई पीढ़ी को सामाजिक दायित्वों से जोड़ने पर भी विचार रखे गए। वक्ताओं का मत था कि बच्चों को बचपन से ही सम्मान, सहयोग, अनुशासन, संवेदनशीलता और पारिवारिक जिम्मेदारियों का महत्व समझाया जाना चाहिए। बैठक में टूटते वैवाहिक रिश्तों तथा पारिवारिक विवादों के समाधान में महासभा की सकारात्मक भूमिका को लेकर भी विस्तार से चर्चा हुई। इस बात पर जोर दिया गया कि वैवाहिक जीवन में उत्पन्न मतभेदों को दूर करने के लिए संवाद, धैर्य, आपसी सम्मान और समझदारी को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

जहां पति-पत्नी दोनों की सहमति एवं सुरक्षा सुनिश्चित हो, वहां महासभा के माध्यम से निष्पक्ष संवाद और पारिवारिक परामर्श की व्यवस्था को प्रोत्साहित किया जा सकता है। गंभीर विवादों में संबंधित पक्षों की गरिमा, अधिकारों और सुरक्षा का ध्यान रखते हुए उचित सहायता उपलब्ध कराने की आवश्यकता भी महत्वपूर्ण मानी गई। यह विचार सामने आया कि समाज के आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को सहायता, प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन की व्यवस्था मजबूत की जानी चाहिए। शिक्षा और संस्कारों का समन्वय ही ऐसी पीढ़ी का निर्माण कर सकता है जो समाज के साथ-साथ राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाए।

सामाजिक कुरीतियों की रोकथाम, शिक्षा के विस्तार, युवा पीढ़ी के मार्गदर्शन, नशामुक्ति, विवाह संबंधी जागरूकता तथा पारिवारिक विवादों के समाधान जैसे विषयों पर महासभा की बैठक के साथ-साथ प्रदेशाध्यक्षों एवं प्रदेश प्रभारियों की बैठक में भी विस्तृत चर्चा की गई। उपस्थित पदाधिकारियों ने इन विषयों पर सामूहिक रूप से कार्य करने की आवश्यकता पर सहमति व्यक्त की। चर्चा का प्रमुख उद्देश्य समाज में सकारात्मक बदलाव लाना, अनावश्यक सामाजिक खर्चों को कम करना, परिवारों को सशक्त बनाना तथा नई पीढ़ी को शिक्षा, संस्कार और जिम्मेदारी के मार्ग पर आगे बढ़ाना रहा।

बैठक में यह भावना उभरकर सामने आई कि महासभा केवल एक संगठनात्मक मंच ही नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार, शिक्षा के प्रसार, आपसी सहयोग और समाज की भावी पीढ़ियों के बेहतर भविष्य के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। चेन्नई की यह त्रैमासिक बैठक सामाजिक एकता, संगठनात्मक विस्तार, शिक्षा, महिला सशक्तीकरण और राजनीतिक भागीदारी जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श का अवसर बनी। बैठक में प्रस्तुत सुझावों ने महासभा के आगामी कार्यों के लिए दिशा निर्धारित करने पर जोर दिया। बैठक का मूल संदेश यही रहा कि संगठन की मजबूती सदस्यता से, समाज की प्रगति शिक्षा से, सामाजिक परिवर्तन मातृशक्ति की भागीदारी से और लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व जागरूकता एवं सक्रिय सहभागिता से संभव है।

घनश्याम शर्मा ने मंच संचालन अत्यंत कुशल, प्रभावशाली एवं व्यवस्थित ढंग से किया। उनकी उत्कृष्ट शैली और विषयों को प्रस्तुत करने की सहजता सराहनीय रही।

समाजबंधुओं ने सामूहिक प्रयासों के माध्यम से महासभा को अधिक व्यापक, सक्रिय एवं प्रभावशाली बनाने की भावना के साथ समाजहित के कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया।

*****

संगठन से समाजोत्थान की ओर-

सुनील कुमार जांगिड, प्रवक्ता - जिला सभा सीकर

पिछले अंक से क्रमश:.....



संयुक्त परिवार – हमारी सामाजिक शक्ति: भारतीय समाज की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक रही है—संयुक्त परिवार व्यवस्था। आज इसके विखंडन पर गंभीर चिंतन आवश्यक है। संयुक्त परिवार केवल एक छत के नीचे रहने का नाम नहीं है। यह साझी जिम्मेदारी, पारस्परिक सहयोग, संस्कार, सुरक्षा और अनुभवों के हस्तांतरण की व्यवस्था है। परिवार की आय और संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है। संकट के समय एक व्यक्ति अधिकार से पहले दायित्व: आज हम अधिकारों की बात बहुत करते हैं। लेकिन समाज का स्वस्थ निर्माण तभी होगा जब हम पहले अपने दायित्वों को पूरा करें। पहले कर्तव्य, फिर अधिकार। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपना दायित्व ईमानदारी से निभाए, तो अधिकारों के लिए संघर्ष स्वतः कम हो जाएगा। संगठन में पद मिला है तो दायित्व भी मिला है। सदस्य बने हैं तो सहभागिता भी होनी चाहिए। समाज से सहयोग लेते हैं तो समाज को सहयोग भी देना चाहिए। यही सामाजिक न्याय का वास्तविक आधार है।

ऐसे निर्णय लें जिन्हें पीढ़ियाँ याद करें: हमारा लक्ष्य केवल आज की समस्या का समाधान करना नहीं होना चाहिए। हमें ऐसे निर्णय लेने चाहिए जिनका लाभ हमारी आने वाली पीढ़ियों को मिले। आज हम यदि—एक बच्चे को संस्कारित शिक्षा देते हैं, एक युवा को स्वरोजगार से जोड़ते हैं, एक परिवार को टूटने से बचाते हैं, एक व्यक्ति को नशे से बाहर लाते हैं, एक विवाह को सरल बनाते हैं, एक गरीब परिवार को सम्मान के साथ आगे बढ़ाते हैं, और एक गाँव को संगठन से जोड़ते हैं—तो हम केवल वर्तमान नहीं बदल रहे; हम भविष्य का निर्माण कर रहे हैं।

संगठन की सफलता केवल इस बात से नहीं मापी जानी चाहिए कि कितने पदाधिकारी हैं, कितनी बैठकें हुईं या कितने कार्यक्रम हुए। सफलता तब होगी जब— अंतिम व्यक्ति संगठन से जुड़े। प्रत्येक गाँव में सहभागिता हो। युवाओं को दिशा मिले। नारी शक्ति आगे आए। परिवार मजबूत हों। शिक्षा संस्कारयुक्त हो। युवा आत्मनिर्भर हों। नशामुक्ति का वातावरण बने। विवाह सरल और सामाजिक सहयोग से संपन्न हों और समाज का प्रत्येक व्यक्ति कह सके—**"यह संगठन मेरा है और मैं इस संगठन का हूँ।"**

आइए, हम आज केवल विचार न करें, बल्कि संकल्प लें— मैं समाज को समय दूँगा। मैं संगठन के प्रति समर्पित रहूँगा। मैं प्रत्येक व्यक्ति के प्रति समभाव रखूँगा। मैं महासभा का सक्रिय सदस्य बनूँगा। मैं नए सदस्यों को जोड़ूँगा। मैं युवाओं को शिक्षा, कौशल और स्वरोजगार के लिए प्रेरित करूँगा। मैं नशे और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता फैलाऊँगा। मैं संयुक्त परिवार और पारिवारिक संस्कारों की रक्षा का प्रयास करूँगा। मैं सामूहिक विवाह एवं परिचय सम्मेलन जैसे सामाजिक अभियानों में तन-मन-धन से सहयोग करूँगा। मैं समाज के लिए कार्य करूँगा और समाज के सुख-दु:ख में सहभागी बनूँगा।

"एकता में बल है"—यह केवल कहने की बात नहीं; इसे जीवन में उतारने की आवश्यकता है। आज हमें किसी एक व्यक्ति के पीछे चलने वाला समाज नहीं, बल्कि विचार के पीछे चलने वाला समाज बनना है। हमें पद नहीं, पथ चुनना है। हमें प्रसिद्धि नहीं, प्रभाव पैदा करना है। हमें केवल अपने परिवार का भविष्य नहीं, पूरे समाज की आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित करना है।

आइए, अपने भीतर से शुरुआत करें। मैं बदलूँगा—तो परिवार बदलेगा। परिवार बदलेगा—तो गाँव बदलेगा। गाँव बदलेगा—तो समाज बदलेगा। समाज बदलेगा—तो राष्ट्र मजबूत होगा।

सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु। मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

अर्थ:सभी सुखी हों, सभी रोग-मुक्त हों। सभी का कल्याण हो, और कोई भी दुखी न हो।

****

विचार-शक्ति और अन्तर्ज्ञान के माध्यम से सृजनात्मक परिकल्पना

सत्यपाल वत्स आर्य - अध्यक्ष, आध्यात्मिक प्रकोष्ठ -महासभा

जिस किसी भी व्यक्ति से भावात्मक रूप से हमारा मन जुड़ा हुआ होता है तब उसको भी वैसी ही अनुभूति होती है जैसे आपको हो रही है। इसीलिए कहा गया है कि हमारे मन भावनात्मक रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। कई बार यह सिद्ध भी हुआ है और इसका प्रमाण भी सामने आया है। कई बार सामने वाला व्यक्ति जो कुछ सोच रहा होता है, वह हमें पता लग जाता है कि इस समय उसके मन में क्या चल रहा है? कई बार हम किसी आदमी को याद करते हैं, तो याद करते ही हाजिर हो जाता है या उसका फोन आ जाएगा या कोई मैसेज आ जाएगा। यह सब भावनात्मक लगाव की निशानी है।

मनुष्य के मन में आध्यात्मिक शक्ति के रूप में निहित विचारों की तरंगें दूर-दूर तक चलती है। अक्सर हम जिसके बारे में सोचते हैं, वही तरंग उसको जगा देती है। जैसे एक विचार मेरे मन में आया और उसी समय वही विचार दूसरे के मन में भी आ जाता है। इसको एक दृष्टांत के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं। एक बूढ़ी माता अपनी पोती के साथ, एक गांव से दूसरे गांव की ओर जा रही थी। उस समय धूप काफी तेज थी, तभी अचानक पीछे से एक ऊँट वाला आया, जो उसी गांव की तरफ जा रहा था। बूढ़ी माता ने उस ऊँट वाले से कहा कि मेरी पोती को ऊँट पर बैठा लो और आगे गांव में उतार देना।

ऊँट वाले ने जबाब दिया कि वाह ! मैं इस लड़की को क्यों बैठाऊँ? अगर चला नहीं जाता तो अपनी कोई व्यवस्था कर लेती। यह कहते हुए, वह ऊँट वाला आगे बढ़ गया। तभी उसके मन में नकारात्मक विचार आया। उसने सोचा कि बूढ़ी माता को मेरा कोई अता-पता मालूम नहीं है। उसके साथ नौजवान लड़की है अगर उस लड़की को मैं बैठा लाता तो उसे कहीं पर बेच देता ? यह सोचकर वह लौटकर बूढिया के पास आया और बोला मुझे दया आ गई, इसीलिए मैं इस लड़की को वापिस लेने आया हूँ। इसे मैं ऊंट पर बिठा लेता हूँ अगले गांव में उतार दूंगा। इसके साथ ही बूढ़ी माता के मस्तिष्क में भी एक नकारात्मक विचार कोंध गया, उसने सोचा कि वह भी कितनी मूर्ख है। मेरे सारे बाल सफेद हो गए, लेकिन अक्ल की अभी भी कमी है। अगर यह ऊँट वाला, मेरी पोती को कहीं इधर-उधर ले गया तो फिर क्या होगा?

यह सोचकर उसने राहगीर कहा कि नहीं-नहीं अब मैं अपनी पोती को ऊँट पर नहीं बैठाती, हम दोनों पैदल ही चली जाएंगी। ऊँट वाले ने पूछा, तुम तो बोल रही थी इसको बैठा ले। उस समय मैं माना नहीं, अब मेरे हृदय में दया आई तो तू बैठाने को तैयार नहीं है। वृद्धा ने उससे कहा कि जो तेरे मन में बैठा है, वही मेरे मन में भी है। उसने जो बात तुझे कही, वही मुझे भी कही। अब जा अपने रास्ते पर वापस चला जा क्योंकि अब मुझे तेरी आवश्यकता नहीं है। इसीलिए कहा गया है कि जिस समय हम किसी के बारे में जैसा सोचते हैं, उसकी भाव रुपी तरंगें, सामने वाले तक पहुंच जाती है। इससे यह परिलक्षित होता है कि, नकारात्मक सोच वाले को, नकारात्मक विचारों वाला और सकारात्मक सोच वाले को, सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति सहज ही पहचान लेता है। इसलिए सभी के प्रति सकारात्मक सोच रखो, उससे जो भी ऊर्जा पैदा होगी, उससे दुश्मन सहित सभी का भला ही होगा।

अब प्रश्न यह है, कि आपके मन में यह विचार और सवाल आते कहां से हैं? इसके पीछे का रहस्य यह है कि, जब कोई भी इंसान विचार करता है, तब उसके विचारों की तरंगे पूरी पृथ्वी समेत इस ब्रह्माण्ड में घूमती है। अगर आपके दिमाग के आस पास यह विचारों की तरंग आएगी तो फ़ौरन आपके दिमाग में बैठ जाएगी। जैसे आपने कोई व्यवसाय करने का मन में विचार किया, तो आपके मन के विचार की तरंगें , उस व्यवसाय के बारे में ही सोचती रहती हैं और आपको वहां तक पहुंचा देती है। वह व्यवसाय किस तरह से करना है, कैसे ऊपर उठना है, कहां से सामान लेना है, कहां भेजना है। यह सब विचार अपने आप ही चले आते हैं और आप अपने व्यवसाय में कामयाब हो जाते हैं।

लेकिन एक बात का हमेशा ही ध्यान रखें कि विचार सदैव ही सकारात्मक होने चाहिए, नकारात्मक विचार, हमें उल्टी दिशा में ले जा सकते हैं। इसलिए जहां तक संभव हो सके अपने विचारों की सोच हमेशा ही सकारात्मक रखे। वास्तव में विचारों की शक्ति और विचारों की तरंग बहुत शक्तिशाली हैं। यही तरंगे पूरे ब्रह्मांड में घूमती रहती हैं। जो भी ज्ञानवान और विद्वान होते हैं, वह इन सकारात्मक विचारों के माध्यम से ही, इन तरंगों से फायदा उठाते हैं और निश्चित रूप से एक प्रशंसनीय ऊंचाई तक पहुंच जाते हैं। इस जीवन में हमें अपने सकारात्मक विचारों को आत्मसात करते हुए और उसको ध्यान में रखते हुए ही, इनका फायदा उठाना चाहिए, ताकि हमारा जीवन सार्थक हो सके।

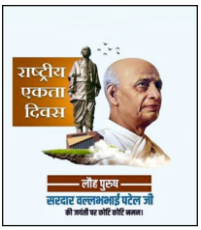
विपुल धन्यवाद ..

***

लौह पुरुष सरदार पटेल जयंती - राष्ट्रीय एकता दिवस (31 अक्टूबर)

युवा शक्ति को सही दिशा देना समय की आवश्यकता

सरदार पटेल के सपनों का भारत बनाने के लिए एकता, संस्कार और राष्ट्रभक्ति आवश्यक है , निश्चित ही भारत विश्व का एक युवा देश है। यहाँ के युवाओं में अपार ऊर्जा, प्रतिभा, परिश्रम करने की क्षमता और कुछ नया करने का उत्साह है। विज्ञान, तकनीक, खेल, शिक्षा, उद्योग और उद्यमिता जैसे अनेक क्षेत्रों में भारतीय युवाओं ने अपनी योग्यता सिद्ध की है। इसके बावजूद वर्तमान समय में युवाओं के एक वर्ग के सामने दिशाहीनता, नशे की प्रवृत्ति, सोशल मीडिया का अनुचित उपयोग, अनावश्यक प्रतिस्पर्धा, मानसिक दबाव और सामाजिक जिम्मेदारियों से दूरी जैसी चुनौतियाँ भी दिखाई देती हैं। ऐसे समय में राष्ट्रीय एकता दिवस का महत्व और बढ़ जाता है। **प्रत्येक वर्ष 31 अक्टूबर को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर मनाया जाने वाला यह दिवस हमें राष्ट्र की एकता और अखंडता के साथ-साथ युवा पीढ़ी के भविष्य पर गंभीरता से विचार करने की प्रेरणा देता है।** सरदार पटेल ने जिस दृढ़ इच्छाशक्ति, दूरदर्शिता और समर्पण से स्वतंत्र भारत की रियासतों को एक सूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उसी भावना की आज आवश्यकता है। उस समय चुनौती देश की राजनीतिक एकता स्थापित करने की थी, जबकि आज हमारी जिम्मेदारी सामाजिक सद्भाव को मजबूत करने, युवाओं को सकारात्मक दिशा देने और राष्ट्र निर्माण में उनकी भागीदारी बढ़ाने की भी है।



सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद में हुआ था। स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका, किसानों के अधिकारों के लिए संघर्ष और स्वतंत्रता के बाद रियासतों के एकीकरण में उनके योगदान ने उन्हें आधुनिक भारत के प्रमुख निर्माताओं में स्थान दिलाया। उनका जीवन हमें सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी दृढ़ संकल्प, अनुशासन, व्यावहारिक सोच और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से बड़े लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं। राष्ट्रीय एकता का अर्थ केवल भौगोलिक सीमाओं की रक्षा करना नहीं है। इसका अर्थ नागरिकों के बीच विश्वास कायम करना, सामाजिक विभाजन को कम करना, विविधताओं का सम्मान करना और साझा राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए मिलकर काम करना भी है। इस कार्य में युवाओं की भूमिका निर्णायक है, क्योंकि आज की युवा पीढ़ी ही आने वाले भारत की सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक दिशा निर्धारित करेगी। युवा अवस्था जीवन का वह महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें व्यक्ति अपने विचारों, आदतों, लक्ष्यों और व्यक्तित्व का निर्माण करता है। इस समय उसे उचित मार्गदर्शन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सकारात्मक वातावरण और अवसरों की आवश्यकता होती है।

1. सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव : मोबाइल और इंटरनेट ने ज्ञान, शिक्षा तथा रोजगार के अनेक नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। डिजिटल माध्यमों से युवा दुनिया भर की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और अपनी प्रतिभा को व्यापक मंच दे सकते हैं। लेकिन सोशल मीडिया का अत्यधिक या अनियंत्रित उपयोग समय की बर्बादी, ध्यान भटकने, अवास्तविक अपेक्षाओं और दूसरों से अनावश्यक तुलना का कारण भी बन सकता है। कई बार युवा वास्तविक उपलब्धियों के बजाय ऑनलाइन लोकप्रियता को अधिक महत्व देने लगते हैं। भ्रामक सूचनाएँ, अफवाहें और नफरत फैलाने वाली सामग्री भी युवाओं की सोच को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए आवश्यक है कि युवा तकनीक के उपयोग में विवेक रखें, सूचना की सत्यता जाँचें और डिजिटल माध्यमों को अपनी शिक्षा, कौशल तथा रचनात्मकता बढ़ाने का साधन बनाएँ।

2. नशे की प्रवृत्ति और गलत संगति: नशे की समस्या युवाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और पारिवारिक जीवन को प्रभावित कर सकती है। कभी साथियों के दबाव, कभी तनाव से बचने की कोशिश और कभी गलत संगति के कारण कुछ युवा नशीले पदार्थों की ओर आकर्षित हो जाते हैं। नशा व्यक्ति की निर्णय लेने की क्षमता, आर्थिक स्थिति और सामाजिक संबंधों को नुकसान पहुँचा सकता है। इससे परिवार भी प्रभावित होता है। इस समस्या का समाधान केवल आलोचना या दंड में नहीं है। परिवार, शिक्षण संस्थानों और समाज को जागरूकता, भावनात्मक सहयोग, खेलकूद, रचनात्मक गतिविधियों और आवश्यकता पड़ने पर विशेषज्ञ सहायता की व्यवस्था करनी चाहिए। युवाओं को यह समझना होगा कि वास्तविक साहस गलत आदतों के दबाव में आने में नहीं, बल्कि अपने विवेक के अनुसार सही निर्णय लेने में है।

3. दिशाहीन प्रतिस्पर्धा और सफलता का दबाव: आज शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ी है। अनेक युवा परीक्षा, नौकरी, आर्थिक सफलता और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए परिश्रम करते हैं। लक्ष्य निर्धारित करना और आगे बढ़ने की इच्छा रखना अच्छी बात है, लेकिन जब सफलता को केवल धन, पद या दूसरों से आगे निकलने के रूप में देखा जाता है, तो जीवन में असंतोष और तनाव बढ़ सकता है। युवाओं को अपनी रुचि, क्षमता और परिस्थितियों के अनुसार लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। कौशल विकास, व्यावसायिक शिक्षा,

उद्यमिता और तकनीकी प्रशिक्षण पर ध्यान देना चाहिए। असफलता को जीवन का अंत नहीं, बल्कि सीखने और आगे बढ़ने का अवसर समझना चाहिए। परिवारों को भी बच्चों की तुलना दूसरों से करने के बजाय उनकी प्रतिभा और प्रयासों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

4. सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों से दूरी: आधुनिक जीवनशैली में व्यस्तता बढ़ी है। कई बार परिवार के सदस्यों के बीच संवाद कम हो जाता है और युवा अपने सामाजिक परिवेश से कटने लगते हैं। परिवार के बुजुर्गों के अनुभव, माता-पिता के संघर्ष और समाज की आवश्यकताओं को समझना व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। युवाओं को अपने परिवार के प्रति जिम्मेदार रहने के साथ-साथ समाज की समस्याओं के समाधान में भी योगदान देना चाहिए।

युवा भटकाव के लिए केवल युवाओं को दोष देना उचित नहीं। यह भी समझना आवश्यक है कि युवाओं के सामने आने वाली सभी समस्याओं के लिए केवल उन्हें जिम्मेदार ठहराना उचित नहीं है। परिवार का वातावरण, शिक्षा की गुणवत्ता, रोजगार के अवसर, सामाजिक दबाव, आर्थिक परिस्थितियाँ और मार्गदर्शन की उपलब्धता भी उनके निर्णयों को प्रभावित करते हैं। यदि हम युवाओं से अनुशासन और जिम्मेदारी की अपेक्षा करते हैं, तो हमें उनके लिए अच्छे अवसर, सकारात्मक वातावरण और सही मार्गदर्शन भी उपलब्ध कराना होगा। माता-पिता को बच्चों के साथ संवाद बनाए रखना चाहिए। शिक्षकों को उनकी रुचियों और क्षमताओं को पहचानने का प्रयास करना चाहिए। सामाजिक संगठनों को युवाओं के लिए करियर मार्गदर्शन, कौशल विकास और व्यक्तित्व निर्माण के कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।

हमारे समाज का इतिहास शिल्पकला, तकनीकी दक्षता, परिश्रम, उद्यमशीलता और सृजनशीलता की गौरवशाली परंपरा से जुड़ा है। भगवान श्री विश्वकर्मा की कर्मप्रधान परंपरा हमें निर्माण, कौशल और उपयोगी कार्यों के महत्व की प्रेरणा देती है। इस विरासत को आगे बढ़ाने के लिए समाज को अपनी युवा पीढ़ी की शिक्षा, कौशल और रोजगार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। समाज के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रोत्साहन मिले, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वालों को मार्गदर्शन उपलब्ध हो और युवाओं को स्वरोजगार तथा उद्यमिता के अवसरों की जानकारी दी जाए।

महासभा और जिला सभाएँ समय-समय पर युवा संवाद कार्यक्रम आयोजित कर सकती हैं, जिनमें अनुभवी व्यक्तियों, शिक्षकों, उद्यमियों और विभिन्न क्षेत्रों में सफल युवाओं को आमंत्रित किया जाए। ऐसे कार्यक्रम युवाओं को अपनी समस्याएँ साझा करने, नए विचार प्राप्त करने और सकारात्मक लक्ष्य निर्धारित करने में मदद कर सकते हैं। हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि युवाओं को सामाजिक संगठनों में केवल श्रोता बनाकर न रखा जाए, बल्कि उन्हें जिम्मेदारियाँ और नेतृत्व के अवसर दिए जाएँ। युवा शक्ति का सही उपयोग राष्ट्र के भविष्य को बदल सकता है। इसके लिए युवाओं को कुछ मूलभूत बातों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। शिक्षा के साथ व्यावहारिक कौशल और नई तकनीकों का ज्ञान प्राप्त करें। सोशल मीडिया का उपयोग सोच-समझकर करें और अफवाहों से दूर रहें। नशे तथा हानिकारक आदतों से बचें और स्वस्थ जीवनशैली अपनाएँ। जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के आधार पर नफरत फैलाने के बजाय आपसी सम्मान को बढ़ावा दें। परिवार के बुजुर्गों का सम्मान करें और जरूरतमंदों की सहायता करें। संविधान, लोकतांत्रिक मूल्यों और नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहें। अपने क्षेत्र में स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सेवा के कार्यों में भाग लें। अपनी सफलता को केवल व्यक्तिगत उपलब्धि न मानें, बल्कि उससे समाज को लाभ पहुँचाने का प्रयास करें।

राष्ट्रीय एकता दिवस केवल सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रद्धांजलि देने का अवसर नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को वर्तमान जीवन में अपनाने का संकल्प दिवस भी है। आज देश को ऐसे युवाओं की आवश्यकता है, जो शिक्षित होने के साथ संस्कारित हों, महत्वाकांक्षी होने के साथ जिम्मेदार हों और आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए अपनी सांस्कृतिक विरासत तथा संवैधानिक मूल्यों का सम्मान करें।युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा देना परिवार, शिक्षण संस्थानों, सामाजिक संगठनों और सरकार की साझा जिम्मेदारी है। हमें युवाओं पर विश्वास करना होगा, उन्हें अवसर देने होंगे और उनके साथ मिलकर भविष्य की चुनौतियों का समाधान खोजना होगा। सरदार पटेल ने विविधताओं से भरे देश को एक सूत्र में बाँधने में ऐतिहासिक योगदान दिया। आज उसी एकता को सामाजिक जीवन में मजबूत करना और युवा पीढ़ी को राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित करना हमारा दायित्व है।

आइए! राष्ट्रीय एकता दिवस पर संकल्प लें कि हम युवाओं में शिक्षा, अनुशासन, चरित्र, सामाजिक संवेदनशीलता और राष्ट्रसेवा की भावना को प्रोत्साहित करेंगे। व्यक्तिगत स्वार्थ और संकीर्ण सोच से ऊपर उठकर समाज तथा राष्ट्र के हित में कार्य करेंगे। युवा शक्ति देश का भविष्य है। उसे सही दिशा, उचित अवसर और सकारात्मक संस्कार देना ही सशक्त, समरस और एकजुट भारत के निर्माण का आधार है। **एकता हमारी शक्ति, युवा हमारी ऊर्जा और राष्ट्रसेवा हमारा संकल्प है।**

जय हिंद! जय भारत!

1 नवंबर, 2026 को जांगिड ब्राह्मण सामुदायिक भवन, गुरुग्राम का भूमि पूजन एवं शिलान्यास समारोह का आयोजन

युवाओं के भविष्य की उम्मीद और उनके सपनों को उड़ान देने के लिए प्रतिबद्ध , जांगिड ब्राह्मण सामुदायिक जन सेवा ट्रस्ट, गुरुग्राम द्वारा समाज की एकता, संगठन एवं सामाजिक विकास को समर्पित जांगिड ब्राह्मण सामुदायिक भवन का भूमि पूजन एवं शिलान्यास समारोह का आयोजन **1 नवंबर, 2026 रविवार को आर.बी. प्लॉट नंबर 2, सेक्टर-37, गुरुग्राम में** समाज के गणमान्य महानुभावों की गरिमामय उपस्थिति में किया जाएगा। जिनमें विशेष रूप से महासभा प्रधान रामपाल शर्मा और जांगिड शिरोमणि सभा के प्रधान रमेश सरपंच सहित समाज के गणमान्य व्यक्ति, वरिष्ठ अधिकारीगण, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले समाज के गणमान्य व्यक्ति समारोह की शोभा को द्विगुणित करने तथा इसकी शोभा बढ़ाने के लिए अपना आशीर्वाद देंगे।



प्रस्तावित जांगिड ब्राह्मण सामुदायिक भवन, गुरुग्राम

इस गरिमामय समारोह में वरिष्ठ समाजबंधुओं की उपस्थिति समाज की एकजुटता, संगठनात्मक शक्ति और सामूहिक विकास के संकल्प को और अधिक सुदृढ़ करेगी। इस समारोह की अध्यक्षता पीकेएन मोटर्स, भिवाड़ी के मालिक सतीश शर्मा करेंगे तथा मुख्य यजमान के रूप मे जांगिड मोटर्स के श्रीमती संतोष जांगिड एवं राजेश जांगिड, गुरुग्राम की विशेष सहभागिता रहेगी। इस कार्यक्रम में कानपुर वाले, मदन शर्मा, जांगिड ब्राह्मण शिरोमणि सभा के चेयरमैन लीलूराम शर्मा, हरियाणा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष जय भगवान शर्मा, विश्वकर्मा एजुकेशन ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष कैलाश शर्मा जांगिड, दिल्ली तथा समाज के भामाशाहों, अतिविशिष्ट अतिथियों, विशिष्ट अतिथियों, सम्मानित अतिथियों, और इस सामुदायिक भवन में कमरे दानदाताओं को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है।

इसके अतिरिक्त भारतीय राजस्व सेवा के वरिष्ठ अधिकारी और जी एस टी के संयुक्त आयुक्त डॉ. दिनेश कुमार सांरग, महासभा के कार्यकारी प्रधान लादूराम जांगिड, प्रकाश मशीन टूल्स के नीरज जांगिड और धीरज जांगिड तथा विभिन्न प्रदेशों के अध्यक्षों और देश के विभिन्न शहरों से आने वाले समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों और वरिष्ठ प्रतिनिधियों की सहभागिता भी प्रस्तावित है ताकि इस समारोह की गरिमा को भव्यता प्रदान की जा सके।

इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य समाज को एक ऐसा स्थायी सामुदायिक केंद्र उपलब्ध कराना है, जहां पर सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं जनकल्याणकारी गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया जा सके। साथ ही यह भवन आने वाली पीढ़ियों के लिए सामाजिक एकता, सहयोग और संगठन का महत्वपूर्ण केंद्र बने। इसमें एक छात्रावास का भी निर्माण किया जाएगा ताकि न केवल राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के छात्रों को अपितु समाज के गरीब और प्रतिभावान छात्र-छात्राओं के सपनों को इस छात्रावास के माध्यम से मूर्त रुप दिया जा सके।

इस भव्य कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 9:15 बजे दीप प्रज्वलन एवं आरती के साथ ही शुरू होगा। इसके बाद प्रातः 9:30 बजे ध्वजारोहण, 10:15 बजे अतिथि सम्मान एवं उद्घाटन कार्यक्रम तथा दोपहर 1:30 बजे भोजन प्रसादी का भी आयोजन किया गया है। जांगिड ब्राह्मण सामुदायिक जन सेवा ट्रस्ट के चेयरमैन, लक्ष्मीनारायण शर्मा, जांगिड , ट्रस्ट के महामंत्री सत्यनारायण शर्मा एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य व ट्रस्टीगण ने समाज के सभी प्रतिष्ठित समाज बंधुओं से समारोह में अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित होकर इस पुनीत कार्य को सफल बनाने में भरपूर सहयोग और स्नेहपूर्ण आशीर्वाद देने की अपील की है। इस समारोह की आयोजक, जांगिड ब्राह्मण सामुदायिक जन सेवा ट्रस्ट, गुरुग्राम है तथा **समारोह स्थल -आर.बी. प्लॉट नंबर 2, सेक्टर-37, गुरुग्राम, हरियाणा है।** ट्रस्ट के समस्त कार्यकारिणी सदस्य एवं सभी ट्रस्टीगण आपके आगमन की पलक पांवड़े बिछाए हुए इन्तजार कर रहे हैं।

अनिल एस जांगिड -

जांगिड ब्राह्मण सामुदायिक जन सेवा ट्रस्ट के सलाहकार और समारोह के संयोजक

पोलियो से निजात - विश्व पोलियो दिवस पर विशेष

हर बच्चे का अधिकार—स्वस्थ जीवन और पोलियोमुक्त संसार।

टीकाकरण, जनजागरूकता और सामूहिक प्रयासों से ही संभव है,

पोलियो का पूर्ण उन्मूलन

प्रवीण कुमार शर्मा , मुख्य चुनाव अधिकारी-महासभा



विश्व पोलियो दिवस प्रत्येक वर्ष 24 अक्टूबर को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य पोलियो जैसी गंभीर संक्रामक बीमारी के प्रति जनजागरूकता बढ़ाना, टीकाकरण के महत्व को समझाना और विश्व को पोलियोमुक्त बनाने के प्रयासों को गति देना है। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि बच्चों का स्वस्थ जीवन केवल परिवार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज, सरकार और संपूर्ण मानवता का साझा दायित्व है। पोलियो उन्मूलन के लिए दुनिया भर में दशकों से प्रयास किए जा रहे हैं। फिर भी जब तक विश्व में कहीं भी पोलियो वायरस का प्रसार जारी है, तब तक इस बीमारी का खतरा पूरी तरह समाप्त नहीं माना जा सकता।

1. पोलियो क्या है: पोलियो, जिसे चिकित्सा विज्ञान में पोलियोमाइलाइटिस (Poliomyelitis) कहा जाता है, पोलियो वायरस से होने वाला एक अत्यधिक संक्रामक रोग है। यह मुख्य रूप से पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों को प्रभावित करता है। यह वायरस मुख्य रूप से दूषित पानी, भोजन और संक्रमित व्यक्ति के मल के माध्यम से फैलता है। संक्रमित व्यक्ति से संपर्क तथा अस्वच्छ परिस्थितियाँ इसके प्रसार में योगदान दे सकती हैं। गंभीर स्थिति में साँस लेने वाली मांसपेशियाँ भी प्रभावित हो सकती हैं, जिससे मृत्यु का खतरा उत्पन्न हो जाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, पोलियो वायरस के लगभग 200 संक्रमणों में से एक संक्रमण के परिणामस्वरूप अपरिवर्तनीय लकवा हो सकता है। लकवे से प्रभावित व्यक्तियों में लगभग 5 से 10 प्रतिशत की मृत्यु हो सकती है, जब उनकी साँस लेने वाली मांसपेशियाँ काम करना बंद कर देती हैं। ये तथ्य बताते हैं कि पोलियो कोई सामान्य बीमारी नहीं है। इससे बचाव के लिए समय पर टीकाकरण और सतत जनजागरूकता अत्यंत आवश्यक है।

2. विश्व पोलियो दिवस का महत्व: विश्व पोलियो दिवस मनाने की पहल रोटरी इंटरनेशनल ने की थी। 24 अक्टूबर की तिथि पोलियो वैक्सीन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले वैज्ञानिक जोनास साल्क के जन्मदिन से जुड़ी है। वर्ष 1988 में वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल (Global Polio Eradication Initiative—GPEI) शुरू की गई। इस अंतरराष्ट्रीय प्रयास में विभिन्न देशों की सरकारों, विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनिसेफ, रोटरी इंटरनेशनल और अन्य सहयोगी संस्थाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस पहल का उद्देश्य दुनिया के प्रत्येक बच्चे तक पोलियो का टीका पहुँचाना, संक्रमण की पहचान करना और वायरस के प्रसार को रोकना है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, वर्ष 1988 के बाद से जंगली पोलियो वायरस के मामलों में 99 प्रतिशत से अधिक की कमी आई है। इस अभियान के कारण लाखों बच्चों को लकवे से बचाने में सफलता मिली है। विश्व पोलियो दिवस केवल उपलब्धियों का उत्सव नहीं है, बल्कि यह शेष चुनौतियों के प्रति सतर्क रहने और पोलियो के पूर्ण उन्मूलन के लिए निरंतर प्रयास करने का अवसर भी है।

3. पोलियो से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय: टीकाकरण: पोलियो से बचाव के लिए टीकाकरण सबसे प्रभावी उपाय है। वर्तमान में पोलियो से सुरक्षा प्रदान करने वाले दो प्रमुख प्रकार के टीके उपयोग में आते हैं।

पहला—ओरल पोलियो वैक्सीन (OPV): यह मुँह से पिलाई जाती है। भारत में पल्स पोलियो अभियान के अंतर्गत बच्चों को पोलियो की अतिरिक्त खुराकें दी जाती हैं।

दूसरा—इनएक्टिवेटेड पोलियो वैक्सीन (IPV): यह इंजेक्शन के माध्यम से दी जाती है और नियमित टीकाकरण कार्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा है। दोनों प्रकार के टीके पोलियो से सुरक्षा प्रदान करते हैं। बच्चे को कौन-सा टीका और कितनी खुराकें दी जानी चाहिए, यह राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम और स्वास्थ्य विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार निर्धारित होता है। माता-पिता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके बच्चे को निर्धारित समय पर सभी आवश्यक टीके मिलें। केवल पल्स पोलियो अभियान में खुराक दिलवाना पर्याप्त नहीं है; नियमित टीकाकरण भी पूरा होना चाहिए। यदि किसी बच्चे की कोई खुराक छूट गई हो, तो अभिभावकों को स्वास्थ्यकर्मी से सलाह लेकर टीकाकरण पूरा करवाना चाहिए।

4. भारत में पोलियो उन्मूलन की ऐतिहासिक सफलता: भारत में पोलियो उन्मूलन का अभियान जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में एक

उल्लेखनीय उपलब्धि है। एक समय ऐसा था, जब देश में पोलियो के मामले बड़ी संख्या में सामने आते थे और हजारों परिवार इस बीमारी के कारण कठिनाइयों का सामना करते थे। भारत ने 2 अक्टूबर 1994 को पल्स पोलियो टीकाकरण कार्यक्रम की शुरुआत की। इसके बाद केंद्र और राज्य सरकारों, स्वास्थ्यकर्मियों, स्वयंसेवी संगठनों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने व्यापक स्तर पर अभियान चलाया। रेलवे स्टेशनों, बस अड्डों, सीमावर्ती क्षेत्रों, दूरदराज के गाँवों और शहरी बस्तियों तक टीकाकरण सेवाएँ पहुँचाई गईं। घर-घर जाकर बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने की व्यवस्था की गई। इस अभियान में जनप्रतिनिधियों, शिक्षकों, धार्मिक नेताओं और स्थानीय समुदायों ने भी योगदान दिया। भारत में जंगली पोलियो वायरस का अंतिम पुष्ट मामला 13 जनवरी 2011 को पश्चिम बंगाल के हावड़ा में सामने आया था। इसके बाद 27 मार्च 2014 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत सहित दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र के 11 देशों को जंगली पोलियो वायरस के प्रसार से मुक्त प्रमाणित किया। यह सफलता दिखाती है कि दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, प्रभावी स्वास्थ्य व्यवस्था और जनसहयोग से कठिन से कठिन सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती का सामना किया जा सकता है।

5. पोलियोमुक्त भारत की स्थिति बनाए रखना क्यों जरूरी है?: भारत ने पोलियो उन्मूलन के क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि हासिल की है, लेकिन वैश्विक स्तर पर वायरस का अस्तित्व चिंता का विषय बना हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, जंगली पोलियो वायरस का प्रसार अभी भी अफगानिस्तान और पाकिस्तान में बना हुआ है। जब तक दुनिया के किसी भी हिस्से में वायरस मौजूद है, तब तक अन्य देशों में भी इसके पहुँचने का जोखिम बना रहता है। आज अंतरराष्ट्रीय यात्राएँ, लोगों का आवागमन और प्रवास पहले की तुलना में अधिक व्यापक है। इसलिए भारत को नियमित टीकाकरण, पोलियो निगरानी और आवश्यकतानुसार विशेष टीकाकरण अभियान जारी रखने की जरूरत है। पोलियोमुक्त स्थिति बनाए रखना केवल स्वास्थ्य विभाग का काम नहीं है। इसमें प्रत्येक परिवार, सामाजिक संगठन और जागरूक नागरिक की भूमिका महत्वपूर्ण है।

6. स्वच्छता और जनजागरूकता की भूमिका: पोलियो से बचाव में टीकाकरण सर्वोपरि है, लेकिन स्वच्छता और साफ-सफाई की आदतें भी संक्रमण के प्रसार को रोकने में मदद करती हैं। हमें अपने घरों और आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखना चाहिए। शौचालय का उपयोग, शौच के बाद और भोजन से पहले साबुन से हाथ धोना, स्वच्छ पेयजल का उपयोग तथा खाद्य पदार्थों को सुरक्षित रखना आवश्यक है। माता-पिता को पोलियो के संबंध में प्रचलित भ्रांतियों से बचना चाहिए। यह मानना गलत है कि बच्चा स्वस्थ दिखाई दे रहा है, इसलिए उसे टीके की आवश्यकता नहीं है। संक्रमण के शुरुआती चरण में लक्षण न दिखने पर भी वायरस का संक्रमण संभव है। इसलिए बीमारी होने की प्रतीक्षा करने के बजाय पहले से सुरक्षा प्रदान करना अधिक महत्वपूर्ण है।

7. समाज और सामाजिक संगठनों की जिम्मेदारी: सामाजिक संगठनों की ताकत जनसंपर्क, विश्वास और सामूहिक सहयोग में निहित होती है। जांगिड ब्राह्मण समाज सहित सभी सामाजिक संगठनों को स्वास्थ्य जागरूकता के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी करनी चाहिए। समाज की बैठकों, सम्मेलनों और अन्य सामूहिक आयोजनों में बच्चों के नियमित टीकाकरण के महत्व पर चर्चा की जा सकती है। स्थानीय स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से जागरूकता शिविर आयोजित किए जा सकते हैं। अभिभावकों को टीकाकरण संबंधी सही जानकारी उपलब्ध कराने के साथ-साथ जरूरतमंद परिवारों को स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में सहायता दी जा सकती है।

हमें यह सुनिश्चित करने की दिशा में काम करना चाहिए कि आर्थिक स्थिति, शिक्षा या सामाजिक परिस्थितियों के कारण कोई भी बच्चा आवश्यक टीकाकरण से वंचित न रहे। बच्चों का स्वास्थ्य समाज की अमूल्य पूँजी है। एक भी बच्चा बिना टीकाकरण के नहीं रहना चाहिए

विश्व पोलियो दिवस हमें यह संकल्प लेने का अवसर देता है कि हम पोलियो के विरुद्ध मिली उपलब्धियों को सुरक्षित रखेंगे और इसके वैश्विक उन्मूलन में अपनी भूमिका निभाएँगे। अब आवश्यकता है कि हम अपनी सतर्कता बनाए रखें, बच्चों का नियमित टीकाकरण पूरा करवाएँ और समाज में वैज्ञानिक सोच तथा स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा दें। हमें याद रखना चाहिए कि किसी भी बच्चे का पोलियो से प्रभावित होना केवल एक परिवार की समस्या नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए चिंता का विषय है। प्रत्येक बच्चे को स्वस्थ जीवन का अवसर मिलना चाहिए और प्रत्येक परिवार को बीमारी से बचाव के साधन उपलब्ध होने चाहिए।

आइए, विश्व पोलियो दिवस पर हम संकल्प लें—न कोई बच्चा टीकाकरण से वंचित रहेगा, न पोलियो के प्रति लापरवाही बरती जाएगी और न ही जनजागरूकता के हमारे प्रयास रुकेंगे। पोलियोमुक्त बचपन, स्वस्थ परिवार और सुरक्षित भविष्य—यही हमारा लक्ष्य, यही हमारी जिम्मेदारी और यही मानवता के प्रति हमारा सच्चा योगदान है। ****

-::माता-पिता की सेवा ही सर्वोपरी सेवा है::-

पी. एल. शास्त्री, गुरुग्राम

प्रत्येक वर्ष एक अक्टूबर को, अन्तर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस मनाया जाता है और यह दिवस माता-पिता सहित उन महान् विभूतियों और वरिष्ठ नागरिकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है, जिन्होंने अपने बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए अपने अरमानों का गला घोंट कर अपने बच्चों के सपनों को मूर्त रूप देने के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर दिया। अन्तर्राष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस मनाने का एक मात्र उद्देश्य भी यही है कि आने वाली पीढ़ियों को, अपने कर्तव्य बोध का ज्ञान करवाया जाए ताकि उन्हे भविष्य में उन पीड़ादायक और कष्टदायक क्षणों का सामना न करना पड़े, जिनका सामना आज वृद्ध और वरिष्ठ नागरिक, वृद्ध आश्रमों में अपना जीवन व्यतीत करने के लिए विवश और लाचार हो कर कर रहे हैं। आज यक्ष प्रश्न नहीं है कि उनके बच्चों के पास पैसों का अभाव है, लेकिन आज मुख्य समस्या यह है कि न्यूक्लियर फैमिली की परम्परा बढ़ती जा रही है और जिस माता-पिता ने अपने बच्चों को उंगली पकड़कर चलना सिखाया और अपनी जरूरतों का गला घोंट कर अपने बच्चों की सभी जरुरतों को पूरा किया, उनके साथ ऐसा व्यवहार अकल्पनीय है।



आज उन बदनसीब बुजुर्ग नागरिकों का दुर्भाग्य देखिए कि जिन्होंने अपने चार पांच बच्चों को एक साथ पाला हो और आज वही बच्चे अपने बुढ़े माँ - बाप का भरण पोषण भी नहीं कर सकते और उनको वृद्धाश्रमों में छोड़ने को प्राथमिकता दे रहे हैं इसी कारण आज देश में वृद्धाश्रमों की संख्या में निरंतर अभिवृद्धि हो रही है और पता नहीं यह अभिशाप कहां पर जाकर रुकेगा। आज के युवाओं की विकृत सोच पर, इस कदर पर्दा पड़ चुका है कि वह इस बात को भूल जाते हैं कि उसकी माँ ने न, केवल उनको असीम प्यार और प्रेम दिया, बल्कि आप गीले में सोती रही और अपने बच्चे को सूखें में सुलाती थी। जब कभी उसका बच्चा बीमार हो जाता तो वह सारी - सारी रात जागकर परमात्मा से उसके स्वस्थ होने की मनोकामना करती रहती और उसके लिए दुआएं मांगती रहती थी। लेकिन इस भौतिकवादी युग ने उन सभी परिभाषाओं को बदल दिया है।



आज इस कलियुग में, वरिष्ठ नागरिकों की परिभाषा भी बदल रही है। पहले जहां पर संयुक्त परिवार होते थे, उनमें एक वृद्ध व्यक्ति, जो परिवार का मुखिया होता था, उसको परिवार के सदस्य एक वरदान समझते थे, क्योंकि वह अपने विवेक और दूरदर्शिता तथा अनुभव के आधार पर न केवल घर के सदस्यों को उनकी योग्यता के आधार पर कुछ जिम्मेदारियों को सौंपता था बल्कि सामाजिक रिश्तों का ताना बाना मजबूत बनाए रखने में भी अपनी महत्ती भूमिका निभाने का काम करता था। लेकिन आज दुर्भाग्यवश एकल परिवार की इस अवधारणा ने उन परिस्थितियों को बदल कर रख दिया है और आज परिवार का अर्थ पति पत्नी और बच्चों तक ही सीमित होकर के रह गया है। यही कारण है कि आज हमारे सामाजिक रिश्तों में निरन्तर खटास पैदा हो रही है। भाई को भाई देखकर राजी नहीं, पिता और पुत्र में छोटी - छोटी बातों को लेकर अक्सर विवाद होता रहता है।

आज भारत की आध्यात्मिक संस्कृति और धार्मिक परंपराओं से अभिप्रेरित होकर विदेशी लोग भारत की संस्कृति को आत्मसात कर रहे हैं लेकिन हमारी नौजवान पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति को अपना रही है। इसीलिए हमारे बच्चों में संस्कार और नैतिकता का निरन्तर पतन हो रहा है और आने वाले समय में यह समस्या और भी अधिक विकराल रूप धारण करने वाली है क्योंकि आज का व्यक्ति आत्म केन्द्रित होता जा रहा है। आज देश में लगभग 10 करोड़ आबादी बुजुर्गों की है और सन् 2030 तक इनकी आबादी बढ़कर लगभग 15 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है।

एक बार मैं लन्दन गया हुआ था और मेरी एक युवा वैभव शर्मा से बात हो रही थी, जो एक कम्पनी में बहुत बड़े पद पर कार्यरत है। **मैंने उनसे पूछा कि आपके पिता जी और माता कहां पर रहते हैं और क्या करते हैं?** इतना सुनते ही वह जोर- जोर से रोने लगा और उसने बताया कि मैं इस संसार में एक अभागा प्राणी हूँ जो न चाहते हुए भी अपने बूढ़े माता पिता को भारत में वृद्धाश्रम में जाने से नहीं रोक सका। मेरे पिता जी एक अनपढ़ किसान हैं , लेकिन उनके सपने बड़े थे। इसलिए उन्होंने मुझे पढ़ने के लिए लन्दन भेजा और आज मेरे पास धन दौलत और शौहरत सब कुछ है लेकिन अभाव है तो, केवल उस माँ की गोद का जो मुझे लोरी देकर सुलाया करती थी और पिता के स्नेह भरे आशीर्वाद का, जिनके बल पर मैं यहां तक पहुंचा हूँ।

उसने कहा कि मेरे दो भाई हैं जो बैंगलूरू में रहते हैं और उनको माता - पिता से इस बात की इर्ष्या है कि माता- पिता ने हमारे लिए तो कुछ नहीं किया और बड़े भाई वैभव को पढ़ने के लिए लन्दन भेज दिया। यह मेरा एक तरह से सौभाग्य ही था कि मैं पढ़ाई में हमेशा ही प्रथम आता था, जिसके कारण मुझे यहां लन्दन में मनपसंद संस्थान में दाखिला बड़ी आसानी से मिल गया और मेहनत और लगन से कार्य करते हुए मैं आज इस मुकाम पर पहुंचा हूँ।

वैभव शर्मा ने कहा कि मैं उस समय स्तब्ध रह गया जिस समय मुझे पता चला कि मेरे दोनो भाईयों ने मिलकर पिताजी और मम्मीजी को वृद्ध आश्रम में छोड़ दिया हैं और सारी सम्पत्ति दोनों ने आपस में आधी-आधी बांट ली है। मेरी धर्मपत्नी पार्वती भी यह खबर सुनकर बहुत अधिक विह्वल हो गई और मेरे साथ ही फूट फूटकर रोने लगी। उसने मुझे सांत्वना देते हुए कहा कि आपको तुरन्त ही अपने माता - पिता को लन्दन लाने का समुचित प्रबंध करना चाहिए। वैभव ने कहा कि मैं मेरे मम्मी पापा को लेने लंदन से सीधे ही वृद्धाश्रम में पहूंचा तो दोनों मुझे देख कर फूट -फूटकर रोने लगे।

अचानक यह सब देखकर वृद्धाश्रम में रहने वाले सहयोगियों की भीड़ एकत्रित हो गई। मैंने अपने माँ बाप को अपने साथ लन्दन चलने का आग्रह किया तो माँ ने कहा, बेटा अब तो यह वृद्धा आश्रम ही हमारा घर है और यहां पर रहने वाले महानुभाव हमारा परिवार है। तुम अपनी पत्नी और बच्चों के साथ लन्दन मे खुश रहो। हम दोनों को आपसे कोई शिक़ायत नहीं है और हमारा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है।

बेटे वैभव शर्मा का हृदय ग्लानि से पसीजा जा रहा था और बेटे के लाख मिन्नतें करने पर भी माता -पिता उसके साथ लन्दन जाने के लिए तैयार नहीं हो रहे थे। तब वैभव ने कहा कि पिताजी मैं तो यहां अपनी खोई अनमोल संपति पाने के लिए आया हूँ। मैं वापस खाली हाथ लन्दन कैसे लौट सकता हूँ। बेटे की ज़िद को देखकर आश्रम के लोगों का मन भी पसीज गया और उन सभी लोगों ने मेरे माता-पिता को मेरे साथ चलने के लिए मना लिया। अभी उनके पासपोर्ट के नवीनीकरण की प्रक्रिया जारी है और आशा है कि मेरे बुजुर्ग माता पिता जल्दी ही मेरे पास यहां लन्दन में होंगे और वह दिन मेरे लिए ज़िन्दगी का सबसे अनमोल दिन होगा। वैभव शर्मा ने कहा कि भगवान ने हमारी सुन ली और उनके लन्दन आने पर मुझे उनकी गोद में लेटकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। मेरी पत्नी और दोनों बच्चों को भी उत्तम संस्कार रुपी अमृत रस पान करने का अवसर मिलेगा।

आज के बदलते हुए इस परिवेश में माता पिता और बुजुर्गो की सेवा करना कई बार परिस्थितियों के कारण मुश्किल भी हो जाता है। वह परिस्थितियां समझ कर वृद्धाश्रम जाने के लिए भी तैयार हैं। लेकिन अपनी स्वार्थ पूर्ति और आजादी के लिए बुजुर्गो को वृद्धाश्रम में भेजना उनके साथ अन्याय ही होगा और उनकी आत्मा क्रंदन करती रहेगी।

इसलिए अपने वृद्ध माता - पिता का अपमान करने से पहले एक मिनट के लिए यह भी सोचने का कष्ट करें कि आज जो कुछ आप अपने माता-पिता के साथ व्यवहार कर रहे हो, आने वाले समय में आपके बच्चे भी आपके साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे।

इसीलिए कहा गया है कि - जैसी करनी वैसी भरनी, इसमें कभी कोई भी नहीं है मीन मेख।
माता-पिता परमात्मा के रूप में विद्यमान, तू देख सके तो देख।।

जीवन में बुजुर्गो की सेवा करने का मौका सौभाग्यशाली संतानों को ही मिलता है।

अंत मे मैं, केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि आधुनिक युग में बुजुर्गो के प्रति युवाओं को अपनी सोच बदलनी होगी। आप एक बार अपने माता-पिता को प्यार और सम्मान देकर तो देखो, आपकी किस्मत बदल जाएगी। बुजुर्ग माता-पिता और दादा-दादी आपकी अनमोल विरासत हैं। उनको आपका पैसा नहीं चाहिए, केवल प्यार स्नेह और आत्मीयता पूर्ण व्यवहार चाहिए। भगवान शंकर ने तो कहा है कि, जिसके घर में माता-पिता हैं, उनकी सेवा करो वही सबसे बड़ा तीर्थ है। इसलिए मैं तो सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि अपने माता-पिता को वृद्धाश्रमों में छोड़ने की परिकल्पना भी कभी भी मत करना, क्योंकि माता-पिता का त्याग और बलिदान भगवान की दी हुई एक अनमोल धरोहर हैं, जो आपके दुःख सुख में हर समय आपके साथ खड़े मिलेंगे।

विपुल धन्यवाद।***

27 सितंबर को मनाए गए अन्तर्राष्ट्रीय बेटी दिवस के अवसर पर नारी शक्ति को हृदय के अन्त:करण से नमन।

अनूसुईया शर्मा शास्त्री, गुरुग्राम।

बेटी का नाम सुनते ही, एक माता-पिता की आंखों के सामने **"यत्र नारी पूजन्ते तत्र देवता वसन्ते",** विचार के साथ ही शक्ति स्वरूपा माँ दुर्गा का स्वरूप दिखाई देने लगता है। यह अपने आप में नारी के सम्मान का अद्वितीय उदाहरण है। वास्तव में, बेटियां ही भारतीय संस्कृति की आन बान और शान हैं। वह हर काम में निपुण और सद्गुणों की खान हैं। हमारी बेटियां, महालक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती और दुर्गा का रुप हैं। इसीलिए भगवान के नाम के आगे पहले शक्ति स्वरूपा का नाम लिया जाता है जैसे राधा-कृष्ण, सीता-राम, लक्ष्मी-नारायण। वेद-शास्त्रों तथा पुराणों में भी धर्म पत्नी को अर्धांगिनी का दर्जा दिया गया है।

जब हम बेटियों की महिमा का आकलन करते हैं तो, बेटियों को घर आंगन की निराली खुशबु कहा जाता है। अधिकतर बेटियां अपने पिता के माथे का तिलक बनकर पिता की आंखों का तारा बन जाती हैं। बेटियां ही हैं जो पीहर मे बेटी, बहिन, बुआ आदि बनकर तथा ससुराल में पत्नी,माँ, बहू, चाची, बड़ी माँ, दादी माँ के रूप मे अपना प्यार और दुलार लुटाती रहती है। इसीलिए जीवन में सभी को बेटी की चाह होती है, क्योंकि बेटियां ही वंश को भी चलाती हैं। बेटियां परमेश्वर का अंश होती हैं और माता - पिता कन्यादान करके अपना फर्ज निभाते हैं। बेटियां माता-पिता की मुसीबत में भी सहारा बन कर साथ देती हैं।

बेटी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर भी महत्व दिया गया है। हर वर्ष सितंबर महीने के चौथे रविवार को अन्तर्राष्ट्रीय बेटी दिवस मनाया जाता है। यह अन्तर्राष्ट्रीय बेटी दिवस हमें अपनी बेटियों पर गर्व करने का एक स्वर्णिम अवसर प्रदान करता है। आज की बेटियां, अपने अदम्य साहस और संकल्प के बल पर, प्रत्येक क्षेत्र में नया इतिहास रच रही हैं। चाहें वह राजनीति का क्षेत्र हो, चाहे खेल का क्षेत्र हो, चाहे विज्ञान या टैक्नोलॉजी का क्षेत्र हो या तीनों सेनाओं के माध्यम से देश की सीमाओं की रक्षा करने का मामला हो या विनम्रता, सहनशीलता और धैर्य तथा अदम्य साहस को परिलक्षित करने की बात हो, बेटियां कही पर भी किसी से कम नहीं हैं। भारत देश का ही उदाहरण लें, तो यहां पर भी प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और राज्यपाल तथा मुख्यमंत्रियों और मंत्रियों से लेकर बड़े-बड़े पदों पर रहते हुए भारत माँ की बेटियों ने, अपनी दक्षता और विवेक को सिद्ध किया है। अब तो बेटियां प्रत्येक क्षेत्र में नए- नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं और इनकी इसी उदारता और सहृदयता का लाभ उठाने के उद्देश्य से भारत की संसद ने सर्वसम्मति से महिलाओं के हित के लिए एक बिल भी पास कर दिया है जिसके तहत महिलाओं को लोकसभा और विधानसभा सभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा ताकि उनको और अधिक सशक्त , जागरूक और समृद्ध बनाया जा सके। आज के इस आधुनिक डिजीटल युग में बेटियों को सम्मान देने के साथ ही उनको बेहतर संस्कारवान बनाने की भी महत्ती आवश्यकता है। एक बेटी में बेहतर संस्कारों का बीजोंरोपण करने के साथ ही उनको शिक्षित करने की भी महत्ती आवश्यकता है, क्योंकि एक शिक्षित बेटी पहले अपने भाई बहन को पढ़ाती है और शादी के बाद अपने परिवार और बच्चों को पढ़ाने के साथ ही उनको संस्कारवान भी बनाती है।

मुझे भी तीन बेटियों की माँ बनने का सौभाग्य मिला है और मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि तीनों बेटियों में हमारे प्रति जो सहज और स्वाभाविक रूप से लगाव और आत्मीयता है, उसका कोई भी सानी नहीं है। मैं भी, किसी की बेटी हूँ और एक बेटी होने के नाते, मैंने अपने माता-पिता के प्रति जो, आत्मीयता और संवेदनशील व्यवहार किया था, उसी के फल के रूप मे मुझे भी अपनी तीनों बेटियों से, वहीं आत्मीयता और संवेदनशीलता का व्यवहार मिल रहा है। लेकिन आज बदलते परिवेश में सभी पुरानी मान्यताएं निरन्तर बदल रहीं हैं। जहां तक हम देख रहे हैं कि आधुनिक युग में, समाज में अधिकतर अपराधों के मूल में अपराधों की जन्मदात्री संस्कार हीनता ही है।

भगवान ने मानव को अध्यात्म के माध्यम से उसके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है, वहीं वेदों और शास्त्रों में अपने लक्ष्य से विमुख होने के कारण पतन के कारण भी बताए गए हैं। मनुष्य के समक्ष दो ही मार्ग है, पहला संस्कारवान बनने का और दूसरा संस्कारहीन बनने का और यह बेटियों के विवेक पर निर्भर करता है कि वह कौन सा मार्ग आत्मसात करना चाहती हैं। बेटियों में संस्कार निर्माण में , दो कारक बड़े ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पहला कारक है पैतृक गुण और दूसरा है, परिव्याप्त वातावरण, आचरण और व्यवहार। आज संस्कारों के अभाव के कारण परिवार टूट रहें हैं। आज परिवार टूटने का मुख्य कारण यही है कि आज मर्यादाएं टूट रही हैं तथा परिवार बिखर रहें हैं।

अंत में, मैं इस आधुनिक युग की अपनी बेटियों को यही कहना चाहूँगी कि जब भी बेटियों को मौका मिले, वह अपने माता- पिता द्वारा दिए गए अच्छे संस्कारों को अपने ससुराल में लागू करे।

***

रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर :-

लघु व्यवसाय एवं स्वरोजगार के लिए सर्वोत्तम योजना- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY)

छोटे व्यवसायियों के लिए ₹20 लाख तक का ऋण — प्रमुख बिंदु, पात्रता एवं आवेदन प्रक्रिया



प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (Pradhan Mantri Mudra Yojana) भारत सरकार की एक महत्त्वपूर्ण ऋण योजना है। इसकी शुरुआत 8 अप्रैल 2015 को की गई थी। इसका उद्देश्य छोटे व्यापारियों, दुकानदारों, कारीगरों, सेवा प्रदाताओं तथा सूक्ष्म उद्यमियों को अपना व्यवसाय शुरू करने अथवा उसका विस्तार करने के लिए बैंक ऋण उपलब्ध कराना है।

इस योजना के अंतर्गत पात्र व्यक्तियों को व्यवसाय के लिए ₹50,000 से लेकर ₹20 लाख तक का ऋण मिल सकता है। हालांकि, ₹20 लाख तक का ऋण सभी आवेदकों को नहीं मिलता। इसके लिए विशेष पात्रता शर्तें लागू होती हैं।

1. मुद्रा योजना की चार श्रेणियाँ: योजना के अंतर्गत ऋण को चार श्रेणियों में बाँटा गया है। ये ऋण सीमाएँ केंद्र सरकार के वित्तीय सेवा विभाग द्वारा प्रकाशित विवरण पर आधारित हैं।

श्रेणी	ऋण की सीमा रू.	किसके लिए
शिशु	50,000	छोटे स्तर पर व्यवसाय शुरू करने वालों के लिए
किशोर	50,001-5,00,000	व्यवसाय स्थापित करने या आगे बढ़ाने के लिए
तरूण	5,00,001-10,00,000	कारोबार का विस्तार करने के लिए
तरूण प्लस	10,00,001-20,00,000	पहले तरुण श्रेणी का ऋण लेकर सफलतापूर्वक चुकाने वाले उद्यमियों के लिए

विशेष ध्यान दें: तरुण प्लस श्रेणी में ₹10 लाख से अधिक का ऋण लेने के लिए पहले तरुण श्रेणी के ऋण का सफलतापूर्वक पुनर्भुगतान करना आवश्यक है।

2. किन व्यवसायों के लिए ऋण मिल सकता है? मुद्रा योजना के अंतर्गत आय उत्पन्न करने वाले पात्र छोटे व्यवसायों के लिए ऋण लिया जा सकता है। प्रमुख उदाहरण:-

2a. व्यापार:- किराना दुकान, कपड़े की दुकान, स्टेशनरी एवं जनरल स्टोर, अन्य पात्र खुदरा व्यापार

2b. विनिर्माण उद्योग:- फर्नीचर निर्माण, सिलाई एवं कपड़ा निर्माण, छोटी उत्पादन इकाइयाँ, हस्तशिल्प एवं कुटीर उद्योग

3c. सेवा क्षेत्र:- मोबाइल एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की मरम्मत, कंप्यूटर एवं प्रिंटिंग सेंटर, ब्यूटी पार्लर, वाहन मरम्मत केंद्र, अन्य पात्र सेवा व्यवसाय

4d. कृषि से जुड़ी गतिविधियाँ:- डेयरी, मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन, अन्य पात्र कृषि-संबद्ध

आय सृजन गतिविधियाँ ऋण का उपयोग व्यवसाय की आवश्यकताओं, जैसे उपकरण खरीदने, मशीनरी लगाने, कार्यशील पूँजी जुटाने या कारोबार बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। अंतिम पात्रता बैंक द्वारा निर्धारित की जाती है।

3. कौन व्यक्ति इस योजना का लाभ ले सकता है? योजना के अंतर्गत सामान्यतः निम्नलिखित लोग आवेदन कर सकते हैं:

छोटे दुकानदार एवं व्यापारी, स्वरोजगार शुरू करने वाले पात्र व्यक्ति, कारीगर एवं हस्तशिल्प से जुड़े लोग, छोटे विनिर्माण उद्योगों के संचालक, सेवा क्षेत्र में काम करने वाले उद्यमी, पात्र कृषि-संबद्ध व्यवसाय करने वाले व्यक्ति।

आवेदक के पास व्यवहार्य व्यवसाय योजना होनी चाहिए और वह बैंक की ऋण संबंधी शर्तों को पूरा करता हो। भारतीय नागरिक अपने व्यवसाय की वित्तीय आवश्यकता के अनुसार बैंक, सूक्ष्म वित्त संस्था या पात्र गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी से संपर्क कर सकते हैं।

4. क्या मुद्रा ऋण के लिए जमीन या मकान गिरवी रखना पड़ता है? मुद्रा योजना का प्रमुख उद्देश्य छोटे व्यवसायों को बिना अतिरिक्त जमानत के ऋण उपलब्ध कराना है। योजना के अंतर्गत ऋण सामान्यतः बिना कोलेटरल अर्थात अतिरिक्त संपत्ति गिरवी रखे दिया जाता है। बैंक व्यवसाय की व्यवहार्यता, आय की संभावना, दस्तावेज और ऋण चुकाने की क्षमता की जाँच करता है। बिना जमानत ऋण होने का अर्थ यह नहीं है कि बैंक हर आवेदन को मंजूरी देने के लिए बाध्य है। ऋण की स्वीकृति बैंक के मूल्यांकन एवं लागू नियमों पर निर्भर करती है।

5. मुद्रा योजना का लाभ उठाने के लिए आवेदन कैसे करें? :-

पहला चरण: व्यवसाय का चयन करें: सबसे पहले तय करें कि आप कौन-सा व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं अथवा वर्तमान व्यवसाय का विस्तार करना चाहते हैं।

दूसरा चरण: लागत का अनुमान तैयार करें: व्यवसाय के लिए कितनी राशि चाहिए, इसका विवरण बनाएँ, इसमें मशीनरी, उपकरण, दुकान, कच्चा माल और कार्यशील पूँजी की आवश्यकताएँ शामिल करें।

तीसरा चरण: परियोजना रिपोर्ट तैयार करें: परियोजना रिपोर्ट में निम्न जानकारी रखें: व्यवसाय का नाम एवं स्वरूप, कुल अनुमानित लागत, आवश्यक ऋण राशि, संभावित बिक्री एवं आय, मासिक खर्च, ऋण चुकाने की क्षमता।

चौथा चरण: आवश्यक दस्तावेज तैयार करें: बैंक की आवश्यकतानुसार सामान्यतः निम्न दस्तावेज माँगे जा सकते हैं: आधार कार्ड, पैन कार्ड, निवास प्रमाण, बैंक खाते का विवरण, व्यवसाय संबंधी जानकारी, मशीनरी या उपकरणों के अनुमानित खर्च का विवरण, परियोजना रिपोर्ट, बैंक द्वारा माँगे गए अन्य वित्तीय दस्तावेज।

पाँचवाँ चरण: बैंक या ऑनलाइन पोर्टल से आवेदन करें: आवेदन करने के लिए निम्न आधिकारिक पोर्टल उपयोगी हैं: जनसमर्थ पोर्टल: JanSamarth पोर्टल (https://www.jansamarth.in)। वित्तीय सेवा विभाग, भारत सरकार: प्रधानमंत्री मुद्रा योजना की आधिकारिक जानकारी। आप अपने नजदीकी बैंक की शाखा में जाकर भी मुद्रा ऋण के लिए आवेदन प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

6. ब्याज दर कितनी होती है? मुद्रा योजना में सभी बैंकों के लिए एक समान ब्याज दर निर्धारित नहीं होती। ब्याज दर संबंधित बैंक या ऋणदाता संस्था, ऋण की राशि, व्यवसाय की प्रकृति तथा लागू नियमों के अनुसार तय होती है।

इसलिए आवेदन करने से पहले बैंक से निम्न जानकारी अवश्य लें: वार्षिक ब्याज दर। ऋण चुकाने की अवधि। मासिक किस्त की राशि। अन्य लागू शुल्क। विलंब से भुगतान करने पर लगने वाले शुल्क।

उदाहरण से समझिए: मान लीजिए कोई व्यक्ति ₹4 लाख की लागत से कंप्यूटर एवं प्रिंटिंग सेंटर शुरू करना चाहता है। उसे कंप्यूटर, प्रिंटर, फर्नीचर, बिजली व्यवस्था और शुरुआती कार्यशील पूँजी के लिए धन चाहिए। ऐसी स्थिति में वह अपनी परियोजना रिपोर्ट और आवश्यक दस्तावेजों के साथ बैंक में किशोर श्रेणी के अंतर्गत ₹4 लाख के ऋण के लिए आवेदन कर सकता है।

बैंक व्यवसाय की व्यवहार्यता और आवेदक की ऋण चुकाने की क्षमता की जाँच करेगा। इसके बाद ही ऋण की स्वीकृति और वास्तविक राशि तय होगी। यह केवल उदाहरण है; ऋण स्वीकृति की गारंटी नहीं है।

7. मुद्रा योजना के प्रमुख लाभ: छोटे व्यवसायों को औपचारिक बैंकिंग व्यवस्था से ऋण प्राप्त करने का अवसर मिलता है। व्यवसाय शुरू करने या उसका विस्तार करने में वित्तीय सहायता मिल सकती है। पात्र मामलों में अतिरिक्त संपत्ति गिरवी रखे बिना ऋण मिल सकता है। महिलाओं सहित विभिन्न वर्गों के उद्यमियों को स्वरोजगार के अवसर मिलते हैं। विनिर्माण, व्यापार और सेवा क्षेत्र में रोजगार सृजन को प्रोत्साहन मिलता है।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना छोटे कारोबारियों एवं स्वरोजगार करने वाले लोगों के लिए उपयोगी ऋण व्यवस्था है। इसकी सहायता से पात्र व्यक्ति अपनी आर्थिक क्षमता और व्यवसाय की जरूरतों के अनुसार ऋण प्राप्त करने का प्रयास कर सकते हैं।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात: ऋण लेने से पहले व्यवसाय की वास्तविक जरूरत का आकलन करें, परियोजना रिपोर्ट तैयार करें और बैंक से ब्याज दर तथा पुनर्भुगतान की शर्तों की पूरी जानकारी लें।

यदि आप अपना व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं, तो सबसे पहले यह तय करें कि आपको कितनी राशि की आवश्यकता है और उस राशि से कितनी आय उत्पन्न होने की संभावना है। यही सही वित्तीय योजना बनाने का आधार है। **यह आपकी सामान्य जानकारी के लिए दिया गया है। अधिक जानकारी अपने नजदीक की बैंक शाखा मे जाकर प्राप्त की जा सकती है।** *****

ऋषिप्रकाश जांगिड- कार्यालय अधिक्षक - महासभा

हमारा स्वास्थ्य :-

मधुमेह रोग (डायबिटीज – Diabetes) : बचाव, कारण और उपचार

दैनिक दिनचर्या में सुधार से मधुमेह से बचाव की राह

मधुमेह अर्थात डायबिटीज आज तेजी से बढ़ती हुई जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों में से एक है। पहले इसे मुख्यतः उम्र बढ़ने के साथ होने वाला रोग माना जाता था, लेकिन आज बदलती जीवनशैली, खान-पान की आदतों, शारीरिक निष्क्रियता, तनाव और अनियमित दिनचर्या के कारण कम उम्र के लोगों में भी इसका खतरा बढ़ रहा है। मधुमेह केवल रक्त में शर्करा बढ़ने का नाम नहीं है, बल्कि लंबे समय तक नियंत्रित न रहने पर यह हृदय, आंखों, गुर्दों, नसों और शरीर के अन्य अंगों को प्रभावित कर सकता है। इसलिए बचाव, समय पर जांच और उचित उपचार तीनों अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।



जब शरीर में रक्त शर्करा को नियंत्रित करने वाला हार्मोन इंसुलिन पर्याप्त मात्रा में नहीं बनता या शरीर उसका प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं कर पाता, तब रक्त में ग्लूकोज का स्तर बढ़ने लगता है। इसी स्थिति को मधुमेह कहा जाता है। इसके प्रमुख प्रकारों में टाइप-1, टाइप-2 और गर्भावधि मधुमेह शामिल हैं। इनमें टाइप-2 मधुमेह जीवनशैली और आनुवंशिक कारणों से सबसे अधिक जुड़ा हुआ है।

मधुमेह के प्रमुख कारण और जोखिम

मधुमेह होने के पीछे केवल एक कारण जिम्मेदार नहीं होता। परिवार में मधुमेह का इतिहास, बढ़ता वजन, शारीरिक गतिविधि की कमी, अत्यधिक कैलोरी और मीठे खाद्य पदार्थों का सेवन, लगातार तनाव, अपर्याप्त नींद तथा अनियमित जीवनशैली इसके जोखिम को बढ़ा सकते हैं।

आज की व्यस्त दिनचर्या में घंटों बैठकर काम करना, पैदल चलने की आदत कम होना, बाहर का तला-भुना भोजन, मीठे पेय और अत्यधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का सेवन सामान्य हो गया है। इन आदतों में लगातार सुधार न किया जाए तो मधुमेह का खतरा बढ़ सकता है।

दैनिक दिनचर्या में सुधार से बचाव

मधुमेह से बचाव की शुरुआत किसी कठिन उपचार से नहीं, बल्कि छोटी-छोटी अच्छी आदतों से की जा सकती है।

1. संतुलित भोजन अपनाएं: भोजन में हरी सब्जियां, दालें, साबुत अनाज, फल, पर्याप्त प्रोटीन और फाइबर को उचित मात्रा में शामिल करें। अत्यधिक मीठे खाद्य पदार्थ, शक्करयुक्त पेय, मैदा और अत्यधिक तले-भुने भोजन को सीमित करना उपयोगी है। भोजन की मात्रा और नियमितता पर भी ध्यान दें।

2. रोज शारीरिक गतिविधि करें: लंबे समय तक लगातार बैठे रहने के बजाय बीच-बीच में उठकर चलें। नियमित तेज चाल से चलना, साइकिल चलाना, तैरना या अपनी क्षमता के अनुसार अन्य व्यायाम लाभकारी हो सकते हैं। व्यायाम का प्रकार और मात्रा व्यक्ति की उम्र व स्वास्थ्य के अनुसार तय करना बेहतर है।

3. वजन को स्वस्थ सीमा में रखें: यदि किसी व्यक्ति का वजन अधिक है, तो चिकित्सकीय सलाह के अनुसार धीरे-धीरे वजन कम करना टाइप-2 मधुमेह के जोखिम को कम करने में मदद कर सकता है।

4. पर्याप्त नींद लें: नियमित और पर्याप्त नींद स्वस्थ जीवनशैली का महत्वपूर्ण हिस्सा है। देर रात तक जागने और अनियमित सोने की आदतों में सुधार करना चाहिए।

5. तनाव को नियंत्रित करें: लगातार तनाव जीवनशैली और स्वास्थ्य दोनों पर असर डाल सकता है। योग, ध्यान, प्राणायाम, परिवार के साथ समय बिताना, रुचि के कार्य और प्रकृति के बीच समय बिताना तनाव प्रबंधन में सहायक हो सकते हैं।

6. धूम्रपान और तंबाकू से दूरी रखें तथा शराब से बचें: ये आदतें समग्र स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकती हैं और मधुमेह से जुड़ी

जटिलताओं का जोखिम बढ़ा सकती हैं। समय-समय पर जांच जरूरी।

मधुमेह की शुरुआत में कई लोगों में स्पष्ट लक्षण नहीं होते। इसलिए केवल लक्षणों के आधार पर निर्भर रहना उचित नहीं है। जिन लोगों में जोखिम अधिक है, उन्हें चिकित्सक की सलाह के अनुसार रक्त शर्करा और HbA1c जैसी जांच करवानी चाहिए। अत्यधिक प्यास लगना, बार-बार पेशाब आना, असामान्य थकान, धुंधला दिखाई देना या बिना प्रयास वजन कम होना जैसे लक्षण दिखाई दें तो चिकित्सकीय सलाह लेना आवश्यक है।

उपचार क्या है?

मधुमेह का उपचार व्यक्ति की स्थिति, उम्र, मधुमेह के प्रकार और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं के आधार पर अलग-अलग हो सकता है। आहार में सुधार, नियमित शारीरिक गतिविधि, वजन प्रबंधन और चिकित्सक द्वारा निर्धारित दवाएं उपचार के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। कुछ लोगों को इंसुलिन की आवश्यकता भी हो सकती है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि डॉक्टर द्वारा निर्धारित दवाएं स्वयं से बंद या कम नहीं करनी चाहिए। रक्त शर्करा की नियमित निगरानी और चिकित्सकीय सलाह के अनुसार आंखों, गुर्दों, पैरों तथा हृदय संबंधी स्वास्थ्य की जांच भी आवश्यक हो सकती है।

मधुमेह से बचाव का सबसे प्रभावी रास्ता है—संतुलित भोजन, नियमित व्यायाम, स्वस्थ वजन, पर्याप्त नींद, तनाव पर नियंत्रण और समय-समय पर स्वास्थ्य जांच। मधुमेह हो जाने के बाद भी घबराने की आवश्यकता नहीं है। अनुशासित जीवनशैली और उचित चिकित्सा से रक्त शर्करा को नियंत्रित रखते हुए स्वस्थ और सक्रिय जीवन जिया जा सकता है।

हमें यह समझना होगा कि स्वास्थ्य केवल बीमारी का इलाज करने से नहीं, बल्कि बीमारी को आने से रोकने की सोच से बनता है। आज की अच्छी आदतें ही कल के बेहतर स्वास्थ्य की नींव हैं।अच्छा स्वास्थ्य ही जीवण का आधार है।

***

बैंगलूरू मे प्रथम नवरात्रा को भव्य कलश यात्रा

नवरात्र महापर्व के प्रथम दिवस पर कर्नाटक प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल शर्मा (जांगिड), खैरथल ज़िलाध्यक्ष नरेश जी की अध्यक्षता में एवं कर्नाटक प्रदेश की महिला प्रकोष्ठ अध्यक्षा श्रीमती मुन्नी देवी की अगुवाई में बैंगलूरू मे M R कॉम्प्लेक्स से शुरू कर किठगनूर माता चोडेशवरी देवी मंदिर तक भव्य कलश यात्रा निकाली गई। हम सभी महिला अध्यक्षा एवं उनकी समस्त टीम को नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएँ देते हैं एवं सभी के जीवन में सदैव मंगल व सुख समृद्धि हो ऐसी कामना करते हैं और भविष्य में भी इनकी अगुवाई में ऐसे धार्मिक आयोजनों की कामना करते हैं।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा प्रदेश सभा कर्नाटक प्रदेश की समस्त टीम की तरफ़ से आप सभी समाज बंधुओं को नवरात्रि के प्रथम दिवस माता शैलपुत्री के आशीर्वाद की शुभकामनाओं के साथ पावन पर्व शारदीय नवरात्र की हार्दिक शुभकामनाएँ



बाबूलाल शर्मा (जांगिड) -प्रदेशाध्यक्ष कर्नाटक प्रदेश

भगवान विश्वकर्मा पूजन दिवस पर देवास शहर में निकली भव्य शोभायात्रा

रथ, घोड़ी, चलित झांकी, पारंपरिक आकर्षक परिधान रहे आकर्षण का केंद्र,
विभिन्न संस्थाओं ने मार्ग में जगह-जगह किया स्वागत।



सर्वश्री विश्वकर्मा वंशज संगठन जिला देवास के तत्वावधान में देवास शहर में पिछले वर्ष की तरह इस बार भी सर्व विश्वकर्मा समाज ने संगठित होकर विश्वकर्मा पूजन दिवस मनाया। महावीर नगर स्थित भगवान विश्वकर्मा मंदिर से चल समारोह धूमधाम से निकाला गया। प्रारंभ में महावीर नगर स्थित श्री विश्वकर्मा मंदिर में भगवान श्री विश्वकर्मा का पूजन, अभिषेक और आरती हुई। इसके बाद चल समारोह प्रारंभ हुआ जो शहर के विभिन्न चौराहों और स्थलों से होते हुए श्री विश्वकर्मा मंदिर महावीर नगर पर समाप्त हुआ। चल समारोह के दौरान गोपाल विश्वकर्मा और साथियों के भजनों पर महिलाओं ने जमकर नृत्य किया पूरे चल समारोह मार्ग में उत्साह का वातावरण रहा। विभिन्न सामाजिक धार्मिक संस्थाओं ने चल समारोह का स्वागत किया।

चल समारोह के समापन अवसर पर आयोजित समारोह के अतिथि विधायक प्रतिनिधि दुर्गेश अग्रवाल, भाजपा महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष मनोरमा सोलंकी, अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, प्रदेश सभा मध्यप्रदेश के अध्यक्ष प्रभूदयाल बरनेला, सर्वश्री विश्वकर्मा वंशज संगठन जिला देवास के अध्यक्ष पीडी शर्मा, अध्यात्मिक गुरु इंद्रजीत नागर आदि थे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री बरनेला ने कहा कि देवास के विश्वकर्मा वंशजों ने बहुत बढ़िया काम किया है। पिछले वर्ष की तुलना में इस बार और अधिक बेहतर तरीके से उल्लास के साथ शोभायात्रा निकाली है। इसमें समाज की महिलाओं का योगदान अनुकरणीय रही है। इसके लिए समाजजन बधाई के पात्र हैं। खासकर मैं सर्वश्री विश्वकर्मा वंशज संगठन जिला देवास के अध्यक्ष पीडी शर्मा को बधाई देता हूँ कि उन्होंने सर्व विश्वकर्मा वंशजों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया है जिसमें वे सफल हुए हैं। उन्होंने विधायक प्रतिनिधि दुर्गेश अग्रवाल का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि समाजजनों की एक प्रमुख समस्या थी, मंदिर तक का पहुंच मार्ग। इस मार्ग के अतिक्रमण को हटाकर यहां सीमेंटीकृत सड़क बनाने पर नगर निगम सहित विधायक श्रीमंत गायत्री राजे पवार का धन्यवाद। समाज की एक और मांग है कि देवास शहर में किसी चौराहा का नामकरण भगवान विश्वकर्मा के नाम पर किया जाए।



साथ ही श्री बरनेला ने महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष श्रीमती सोलंकी को कहा कि समाज की युवा प्रतिभा एंकर साक्षी शर्मा के सामाजिक तथा नगर को दिए जा रहे योगदान के बदले महिला मोर्चा में उसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी जाए।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में संबोधित करते हुए विधायक प्रतिनिधि श्री अग्रवाल ने कहा यह गर्व का विषय है कि सर्वश्री विश्वकर्मा वंशज संगठन एक मंच पर आकर एक कार्यक्रम कर रहे हैं। इससे दूसरे समाज को भी प्रेरणा लेनी चाहिए। जब समाज द्वारा पूर्व में नगर निगम और विधायकजी के संज्ञान में मार्ग की समस्या लाई गई तो समाजहित को प्राथमिकता देते हुए इस समस्या का निदान किया। अब समाज की मांग अनुसार किसी एक चौराहे का नामकरण भगवान विश्वकर्मा के नाम पर करने के लिए समाज स्थान चिन्हित कर प्रस्ताव भेजेगा तो इस पर तत्काल अमल किया जाएगा। साथ ही उस चौराहे का सौंदर्याकरण भी किया जाएगा। श्री अग्रवाल ने भी साक्षी शर्मा को महिला मोर्चा की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी देने की मंशा जताई तो महिला मोर्चा अध्यक्ष श्रीमती सोलंकी ने साक्षी शर्मा को दुपट्टा ओढ़ाकर अभिवादन किया। अध्यात्मिक गुरु इंद्रजीत नागर ने भी संबोधित करते हुए कहा कि भगवान विश्वकर्मा ने हर युग में प्रमुख भवनों, नगरों का निर्माण कार्य किया है। इसलिए उनकी हर युग में पूजा होती है। कार्यक्रम का संचालन साक्षी शर्मा ने किया।

***

विश्वकर्मा समाज सेवा समिति रतनगढ़ की ओर से सम्मान समारोह में 175 प्रतिभाओं का सम्मान किया और 11 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी गई।

रतनगढ़ मे सरदारशहर बाइपास स्थित, **जांगिड अतिथि भवन में, विश्वकर्मा समाज सेवा समिति** की ओर से प्रतिभा सम्मान समारोह हुआ। समिति अध्यक्ष सुखाराम राजोतिया की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि बच्चों की शिक्षा की तरफ अभिभावक गंभीरता से ध्यान देवें, क्योंकि शिक्षा समाज के सुदृढ़ीकरण की मूल धूरी है। **बच्चे शिक्षित होंगे, तो समाज शिक्षित होगा और समाज का विकास होगा।**





पूर्व जिला शिक्षाधिकारी ओमप्रकाश बरवाड़िया ने बताया कि कार्यक्रम में राजकीय सेवा में चयनित कर्मचारियों, कक्षा 10 व 12, स्नातक, स्नातकोत्तर तथा अन्य उपलब्धियों में अव्वल प्रदर्शन करने वाली 175 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। समिति की ओर से 11 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति (प्रति छात्र 5100 रु.) दी गई। समाज के गोपालाराम लदरेचा का बेटे का दहेज मुक्त विवाह करने पर अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम में शंकरलाल डाडीवाल, कन्हैयालाल, नरेंद्र पटवारी, जगदीश डाडीवाल, लिखमीचंद काला, धन्नाराम लदरेचा, सीताराम रोलीवाल, सांवरमल सीलक, हीरालाल अड़ीचवाल, कनक चॉयल, भंवरलाल धामू, शंकरलाल बादनू, लालचंद डाडीवाल, चंद्रप्रकाश धामू, मनफूल दादर, मनोज धामू, पूसाराम बोदलिया, बाबूलाल सेहला आदि उपस्थित थे।

संचालन प्रधानाचार्य विनोद बोदलिया, महेंद्र कुमार व बजरंगलाल ने किया।

****

रतलाम में ब्रह्म ऋषि अंगिरा जयंती पर निकली गई भव्य शोभा यात्रा









दीपावली

परंपरा, आध्यात्मिक चेतना और सामाजिक समरसता का महापर्व।

यह पर्व हमे अंधकार से प्रकाश, अज्ञान से ज्ञान और निराशा से आशा की ओर बढ़ने का संदेश देता है। भारत उत्सवों और पर्वों की समृद्ध परंपरा वाला देश है। यहाँ प्रत्येक त्योहार अपने भीतर ऐतिहासिक घटनाओं, धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक विरासत और जीवनोपयोगी शिक्षाओं को समेटे हुए है। दीपावली भारतीय संस्कृति का ऐसा ही एक प्रमुख पर्व है, जो केवल दीप जलाने और मिठाइयाँ बाँटने तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव जीवन में ज्ञान, सदाचार, समृद्धि, परिश्रम, आत्मविश्वास और सामाजिक सद्भाव का प्रकाश फैलाने की प्रेरणा देता है। कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाने वाला यह पर्व भारत सहित विश्व के अनेक देशों में उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है।

दीपावली शब्द संस्कृत के 'दीप' और 'आवली' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है—दीपों की पंक्ति। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि चाहे अंधकार कितना भी गहरा क्यों न हो, एक छोटा-सा दीप भी प्रकाश फैलाने की क्षमता रखता है। दीपावली के इतिहास और परंपराओं का संबंध भारतीय धर्मग्रंथों, लोककथाओं तथा विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक मान्यताओं से है। इसके साथ अनेक ऐतिहासिक और धार्मिक प्रसंग जुड़े हुए हैं।

भगवान श्रीराम की अयोध्या वापसी: दीपावली से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध मान्यता रामायण की कथा है। मान्यता के अनुसार, भगवान श्रीराम चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण करके तथा रावण पर विजय प्राप्त करने के बाद माता सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे थे। उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने दीप जलाए और नगर को प्रकाश से सजाया। यह प्रसंग अधर्म पर धर्म, अन्याय पर न्याय तथा अहंकार पर मर्यादा की विजय का प्रतीक बन गया।

भगवान श्रीकृष्ण और नरकासुर की कथा: दक्षिण भारत सहित देश के कई क्षेत्रों में दीपावली से पहले मनाई जाने वाली नरक चतुर्दशी का संबंध भगवान श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर के वध की पौराणिक कथा से जोड़ा जाता है। यह प्रसंग अत्याचार और अन्याय के अंत का प्रतीक है।

समुद्र मंथन और माता लक्ष्मी: हिंदू धार्मिक परंपरा में कार्तिक अमावस्या को माता लक्ष्मी की पूजा का विशेष महत्त्व है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, समुद्र मंथन से माता लक्ष्मी प्रकट हुई थीं। दीपावली पर लक्ष्मी-गणेश पूजन के माध्यम से धन, विवेक, शुभता और मंगलमय जीवन की कामना की जाती है। इसका व्यापक संदेश यह है कि धन के साथ बुद्धि, नैतिकता और सदाचार का होना भी आवश्यक है।

भगवान महावीर का निर्वाण: जैन परंपरा में दीपावली का विशेष ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्त्व है। जैन मान्यता के अनुसार, भगवान महावीर ने कार्तिक अमावस्या को पावापुरी में निर्वाण प्राप्त किया था। उनके निर्वाण के अवसर पर दीप जलाने की परंपरा का उल्लेख जैन धार्मिक साहित्य में मिलता है। दीपावली का उत्सव सामान्यतः पाँच दिनों की परंपरा से जुड़ा है। क्षेत्रीय परंपराओं के अनुसार इनमें कुछ भिन्नताएँ भी देखने को मिलती हैं। **1. धनतेरस: 2. नरक चतुर्दशी: 3. दीपावली: 4. गोवर्धन पूजा और 5. भाई दूज:** इस प्रकार दीपावली केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, समृद्धि, प्रकृति-संरक्षण, पारिवारिक प्रेम और सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करने वाली परंपराओं का समूह है।

दीपावली भारतीय अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस अवसर पर बाजारों में रौनक बढ़ती है। कुछ व्यापारिक समुदायों में इसे नए वित्तीय वर्ष के शुभारंभ के रूप में भी मनाया जाता है। भारतीय दर्शन में प्रकाश को ज्ञान और अंधकार को अज्ञान का प्रतीक माना गया है। उपनिषदों की प्रार्थना—**'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** अर्थात् मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो—मानव जीवन के लिए एक शाश्वत संदेश प्रस्तुत करती है। आज हमारे समाज में ईर्ष्या, द्वेष, भ्रष्टाचार, नशे की प्रवृत्ति, सामाजिक भेदभाव, दिखावा और स्वार्थ जैसी अनेक चुनौतियाँ मौजूद हैं। केवल घरों में दीप जलाने से समाज का अंधकार दूर नहीं होगा। इसके लिए हमें अपने विचारों और व्यवहार में भी प्रकाश उत्पन्न करना होगा।

यदि हम झूठ के स्थान पर सत्य, घृणा के स्थान पर प्रेम, भेदभाव के स्थान पर समानता और स्वार्थ के स्थान पर सेवा को अपनाएँ, तो दीपावली का उद्देश्य सार्थक हो सकता है। वास्तविक समृद्धि केवल बैंक खाते या संपत्ति में वृद्धि से नहीं, बल्कि परिवार के सुख, समाज की प्रतिष्ठा और मन की शांति से भी मापी जाती है। हमें इस अवसर पर पुराने विवाद समाप्त करने, जरूरतमंदों की सहायता करने, निर्धन बच्चों को शिक्षा के साधन उपलब्ध कराने और बुजुर्गों का सम्मान करने का संकल्प लेना चाहिए। आइए, इस दीपावली पर हम संकल्प लें कि अन्याय का विरोध करेंगे, जरूरतमंदों की सहायता करेंगे, पर्यावरण की रक्षा करेंगे और समाज में एकता को मजबूत बनाएँगे।

याद रखें, दीपावली की सार्थकता दीपों की संख्या से नहीं, बल्कि उन जीवनों की संख्या से बढ़ती है जिनमें हम आशा, ज्ञान और खुशियों का प्रकाश पहुँचा पाते हैं।इसी भावना के साथ आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ। यह पावन पर्व प्रत्येक परिवार के जीवन में सुख, शांति, स्वास्थ्य, समृद्धि और सद्भाव का नया उजाला लेकर आए।

शुभ दीपावली

विजय दशमी:
धर्म, कर्म और चरित्र की विजय का पर्व



विजय दशमी केवल एक पर्व नहीं, बल्कि मानव जीवन का दिव्य संदेश है। सत्य की असत्य पर, धर्म की अधर्म पर और आत्मबल की अहंकार पर विजय। इस दिन भगवान श्रीराम ने रावण पर विजय प्राप्त की और माँ दुर्गा की महिषासुर पर विजय का स्मरण किया जाता है। रावण का पुतला जलाना केवल परंपरा नहीं है; यह हमारे भीतर बसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, भय, आलस्य, छल और अन्याय को जलाने का संकल्प है। रावण विद्वान और शक्तिशाली था, पर अहंकार और अधर्म ने उसका सर्वनाश किया। इसीलिए विजय दशमी सिखाती है कि ज्ञान और शक्ति तभी पूजनीय बनते हैं, जब वे विनम्रता, न्याय और धर्म के मार्ग पर चलें।

जब भगवान श्रीराम को लंका जाने के लिए विशाल समुद्र पार करना था, तब देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा जी के पुत्र नल और नील ने अपनी शिल्प-विद्या, योजना और अद्भुत कौशल से रामसेतु का निर्माण किया। वाल्मीकि रामायण में नल को विश्वकर्मा वंश का प्रमुख सेतु-निर्माता बताया गया है। यह प्रसंग हमें बताता है कि भगवान राम की विजय केवल युद्ध-शक्ति से नहीं, बल्कि सहयोग, कुशल कर्म, नेतृत्व और निर्माण की भावना से भी संभव हुई। जहाँ श्रीराम ने संकल्प और धर्म का नेतृत्व दिया, वहीं नल-नील ने कौशल और श्रम से उसे साकार किया। यही संतुलन आज भी हमारे समाज के लिए आदर्श है।

हमारा जांगिड ब्राह्मण समाज भगवान विश्वकर्मा जी की शिल्प-परंपरा से गहराई से जुड़ा है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमारे पूर्वजों ने मंदिर-निर्माण, मूर्तिकला, काष्ठकला, वास्तुविद्या और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में असाधारण योगदान दिया है। समाज की पहचान आज भी कला, कौशल, मेहनत और निर्माण की क्षमता से जुड़ी है। भारत के प्रसिद्ध मंदिरों, मूर्तियों, राजमहलों और कलात्मक भवनों के निर्माण में विश्वकर्मा-परंपरा से जुड़े शिल्पियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है; जांगिड समाज इसी धरोहर का गर्वित उत्तराधिकारी है। यह केवल पेशे की बात नहीं है यह हमारा सांस्कृतिक गौरव, आध्यात्मिक आस्था और राष्ट्र-निर्माण का संकल्प है।

आज जब हमारे समाज के युवा इंजीनियरिंग, चिकित्सा, शिक्षा, प्रशासन, व्यवसाय, सेना, कला और तकनीक के क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा बिखेर रहे हैं, तो वे वास्तव में अपने पूर्वजों की शिल्प-विरासत को आधुनिक रूप में आगे बढ़ा रहे हैं। यही विश्वकर्मा तत्व की सच्ची विजय है। विजय दशमी और भगवान विश्वकर्मा जी का संदेश हमें प्रेरित करता है कि हम अज्ञान, संकीर्णता, भेदभाव और निराशा के रावण को चुनौती दें। शिक्षा और कौशल को शक्ति बनाएँ: बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, तकनीकी ज्ञान और आत्मविश्वास दें। कर्म को पूजा मानें: विश्वकर्मा जी की भाँति ईमानदारी, निपुणता और निरंतर परिश्रम से राष्ट्र-निर्माण में योगदान दें।

वास्तुकला, डिजाइन, निर्माण, कला और तकनीक में समाज की पारंपरिक दक्षता को नई पीढ़ी तक पहुँचाएँ। जाति, क्षेत्र या विचार के भेद से ऊपर उठकर समाज की एकता सुदृढ़ करें। चरित्र को पहचान बनाएँ: व्यक्ति की सच्ची पहचान उसकी उपाधि नहीं, उसका आचरण होती है। युवाओं को नेतृत्व दें: युवा पीढ़ी को संस्कार, स्वावलंबन और सामाजिक उत्तरदायित्व की ओर प्रेरित करें। सेवा को धर्म मानें: जरूरतमंद की सहायता, शिक्षा और समान अवसर ही सच्ची ब्राह्मणता की परीक्षा है। विजय दशमी के बाद दीपावली की ओर उत्सव का सफर बढ़ता है। यह समय हमें यह सोचने का अवसर देता है कि हमने अपने भीतर के किस रावण को जलाया और किस राम-तत्व सत्य, सेवा, साहस और संयम को जीवन में स्थापित किया। नल-नील के रामसेतु की तरह, हमें भी अपने समाज के भीतर ज्ञान, एकता और उन्नति का सेतु बनाना है।

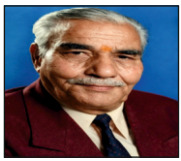
आइए, इस विजय दशमी पर हम सब प्रण करें कि हमारा जांगिड समाज शिक्षित बने, संगठित बने, स्वावलंबी बने और अपनी शिल्प-परंपरा, संस्कारों तथा सामाजिक सेवा के बल पर राष्ट्र-निर्माण में सदैव अग्रणी रहे। यही श्रीराम को सच्ची श्रद्धांजलि, भगवान विश्वकर्मा जी को सच्चा सम्मान और विजय दशमी का सार्थक संदेश है।

"जहाँ धर्म है वहीं विजय है; जहाँ कुशल कर्म है, वहीं निर्माण है; और जहाँ एकता है, वहीं समाज की शक्ति है।

ब्रह्मानंद शर्मा,
महामंत्री प्रदेश सभा दिल्ली

इंदौर मे तोपखाना स्थित श्री राम मंदिर और विश्वकर्मा मंदिर , समाज की ऐतिहासिक धरोहर

मोहन शर्मा पत्रकार, इन्दौर



भगवान की अनुकम्पा से सभी ग्रह पक्ष में हो जाते हैं और रुके हुए सभी काम अनायास ही पूरे हो जाते हैं। तोपखाना इंदौर मे स्थित भगवान श्री राम मंदिर, भगवान श्री विश्वकर्मा मंदिर एवं धर्मशाला इसका ज्वलंत उदाहरण है।

यह इंदौर मे जांगिड ब्राह्मण समाज की एक ऐतिहासिक धरोहर है। इस मंदिर और भवन को समाज के लोगों ने उस समय बड़ी आस्था, श्रद्धा और विश्वास के साथ बनाया था। लेकिन बाद मे इस मंदिर का पुजारी ही इसका मालिक बन बैठा था। उसने समाज के साथ विश्वासघात किया। लेकिन समाज के उन सभी कर्णधारों और समाज हित को सर्वोपरि समझने वाले समाज बंधुओं को धन्य है, जिन्होंने इस विरासत को सहजने और वापस लेने के उद्देश्य से एक लम्बी कानूनी प्रक्रिया के तहत संघर्ष किया और माननीय न्यायालय ने समाज हित मे निर्णय दिया।

कोर्ट के आदेश होने बाद भी पुजारी ने कब्जा नहीं छोड़ा। लेकिन इस अभियान में समाज की एकता और आपसी समन्वय की भावना रंग लाई। समाज ने संगठित होकर उस पुजारी पर दबाव बनाया और इसमें सफलता भी मिली। इस अभियान में अपनी महत्ती भूमिका निभाने वाले समाज बंधुओं में, **मुख्य रुप से मदनलाल मंडावाला, मोहनलाल बडवाल, शंकरलाल चंदेवा, चौथमल बडवाल, मोहन शर्मा पत्रकार, बालकिशन, उदयभानु अमेरिया, ओमप्रकाश अमेरिया, नाथूलाल डेरोलिया, मोटूराम, नारुलाल गोठडीवाल, रामचन्द्र जांगिड** इत्यादि समाज के अनेक महानुभावों की महती भूमिका रही। इनके संगठित प्रयासों की वजह से पुजारी को विवश होकर झुकना ही पड़ा और मंदिर का कब्जा छोड़ना पड़ा।

यह सन् 1980-82 की बात है, जब लंबी कानूनी लड़ाई के बाद पर कोर्ट का आदेश हुआ और समाज को इस जगह का कब्जा मिला। उस समय मन्दिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। उस समय महासभा की जांगिड ब्राह्मण पत्रिका के तत्कालीन सम्पादक ओमदत्त जांगिड द्वारा कब्जा मिलने के बाद पहली बार हवन यज्ञ और पूजन किया गया था। उसके बाद समाज के बुद्धिजीवी लोग सक्रिय हुए और सभी ने अपने सामर्थ्य के अनुसार चन्दा इकट्ठा किया। धीरे-धीरे, मन्दिर निर्माण का कार्य पूरा किया गया।

यह सब समाज सेवा की प्रतिमूर्ति और भामाशाह **स्वर्गीय भागीरथमल बरनेला, नाथूलाल डेरोलिया, मदनलाल मंडावाला** की प्रेरणा और सक्रियता से सम्भव हुआ। भागीरथ बरनेला के सतत् प्रयासों से इस संस्था का **"श्री जांगिड ब्राह्मण समाज पंचायत, तोपखाना इन्दौर"** के नाम से विधिवत रूप से रजिस्ट्रेशन करवाया गया।

मोहनलाल बडवाल, मदनलाल मंडावाला, बजरंगलाल दायमा, सुरेन्द्र शर्मा, शिवलाल राजोतिया कल्याण, रामेश्वरलाल इत्यादि अनेक समाज बंधुओं ने मिलकर इस महापुण्य के कार्य को आगे बढ़ाते हुए, इस संस्था के विकास में अमूल्य योगदान दिया। कार्य समिति का गठन किया गया और विधिवत ढंग से चुनाव द्वारा अध्यक्ष और कार्य समिति के पदाधिकारियो का चुनाव सम्पन्न करवाया गया। इसके बाद इस भवन और मंदिर का शिलान्यास मध्यप्रदेश के तत्कालीन राजस्व मंत्री मुनि प्रसाद शुक्ल द्वारा 3 मार्च, 1984 को किया गया। शिलान्यास के बाद लगभग 42 वर्षों के इस सफर में समाज के उदारमना और समाज सेवी महान् विभूतियों ने आपसी सहयोग, सौहार्द और समरसता की अनूठी मिसाल कायम करते हुए इस ऐतिहासिक धरोहर को सहेज कर रखने का प्रयास किया है।

इस मंदिर के शिलान्यास के बाद इसमें भगवान श्री राम, श्री राधा - कृष्ण, शिव परिवार, हनुमान जी, श्री विश्वकर्मा और महर्षि अंगिरा ऋषि की मूर्तियाँ स्थापित की गई। सन् 1984 में जो पौधा लगाया गया था, अब उसके कायाकल्प के लिए उदारमना और समाजसेवी बंधुओं के सहयोग से इस मंदिर और भवन का नवीनीकरण किया गया है। अब श्री राधा-कृष्ण, भगवान श्री विश्वकर्मा और अंगिरा ऋषि की बड़ी प्रतिमाएं लगाई गई हैं और अब शनिदेव की प्रतिमा भी स्थापित की गई है।

सभी समाज बंधुओं के सहयोग द्वारा इस मंदिर का नवीनीकरण कर, इसका कायाकल्प किया गया। इस मंदिर के नवीनीकरण के लिए उदारमना भामाशाहों ने सच्ची श्रद्धा के साथ मंदिर के नवीनीकरण में भरपूर आर्थिक सहयोग दिया है। वर्तमान मे मंदिर के भवन में 9 वातानुकूलित कमरे, दो साधारण कमरे और अन्य 11 कमरे हैं, जो सभी आधुनिक सुविधाओं और साज सज्जा से सुसज्जित हैं। साथ ही दो बड़े हाल तथा दो छोटे हाल भी बनाए गए हैं। इस मंदिर परिसर मे समिति के कार्यालय के साथ ही एक आधुनिक किचन सहित डाइनिंग हॉल का भी नवीनीकरण किया गया है।

वर्तमान मे समिति के अध्यक्ष अशोक रोडवाल की अध्यक्षता में बेहतरीन कार्य किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि भविष्य मे समाज बंधु इस नवीनीकृत मंदिर और भवन में परिव्याप्त सभी सुविधाओं का लाभ उठा सकेंगे। विपुल धन्यवाद .. *****

सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार :
हिमाचल से शुरूआत, जांगिड ब्राह्मण समाज को इससे प्रेरणा लेने की आवश्यकता

हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले के शिलाई क्षेत्र के 52 गांवों द्वारा विवाह समारोहों में फिजूलखर्ची, दहेज प्रथा और सामाजिक दिखावे को रोकने के लिए लिए गए सामूहिक निर्णय पूरे समाज के लिए प्रेरणादायक हैं। दैनिक भास्कर समाचार दिनांक 24 अक्टूबर, 2026 के अनुसार, इन गांवों ने बारात में अधिकतम 100 व्यक्तियों और 10 वाहनों की सीमा निर्धारित करने, दहेज के लेन-देन पर प्रतिबंध लगाने तथा शराब, नशे और नाचने के दौरान पैसे लुटाने जैसी प्रवृत्तियों को रोकने सहित 17 सामाजिक नियम बनाए हैं। नियमों के उल्लंघन पर जुर्माने का भी प्रावधान किया गया है। यह पहल बताती है कि जब समाज एकजुट होकर दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ निर्णय लेता है, तो वर्षों से चली आ रही कुरीतियों को भी चुनौती दी जा सकती है।

आज आवश्यकता है कि जांगिड ब्राह्मण समाज भी इस पहल से प्रेरणा लेकर विवाह, जन्म दिन, शादी की सालगिरह और अन्य समारोहों में बढ़ते दिखावे, अनावश्यक खर्च, दहेज, महंगे आभूषणों की प्रतिस्पर्धा और सामाजिक प्रतिष्ठा के नाम पर होने वाली फिजूलखर्ची को रोकने के लिए ठोस कदम उठाए।

विवाह दो परिवारों के मिलन और नए जीवन की शुरुआत का पवित्र संस्कार है, न कि आर्थिक सामर्थ्य का प्रदर्शन। लेकिन वर्तमान में कई परिवार सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने के दबाव में अपनी सामर्थ्य से अधिक खर्च करते हैं। इससे मध्यमवर्गीय और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों पर अनावश्यक बोझ पड़ता है। विशेष रूप से बेटियों के विवाह को लेकर माता-पिता की चिंता बढ़ जाती है। दहेज और दिखावे की प्रवृत्ति समाज की समानता, आत्मसम्मान और पारिवारिक सुख के लिए भी उचित नहीं है।

हमारा उद्देश्य विवाह की खुशियों को कम करना नहीं, बल्कि उन्हें अनावश्यक आर्थिक बोझ से मुक्त करना होना चाहिए। सादगीपूर्ण विवाह, सीमित बारात, आवश्यक खर्च, आभूषणों में अनावश्यक प्रतिस्पर्धा से दूरी और दहेज का पूर्ण बहिष्कार ऐसे कदम हैं, जिनसे समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा एक व्यापक सामाजिक संगठन है। महासभा के राष्ट्रीय पदाधिकारियों, प्रदेश अध्यक्षों, जिला अध्यक्षों, महिला प्रकोष्ठ, युवा प्रकोष्ठ और सभी सामाजिक संस्थाओं से विनम्र निवेदन है कि वे हिमाचल प्रदेश के इन 52 गांवों की पहल का अध्ययन करें और समाज की परिस्थितियों के अनुरूप ऐसे नियम बनाने की दिशा में पहल करें। इस विषय पर राष्ट्रीय स्तर पर विचार-विमर्श कर सर्वसम्मति से एक सामाजिक आचार-संहिता तैयार की जा सकती है, जिसे प्रदेश और जिला स्तर पर समाजबंधुओं के सहयोग से लागू करने का प्रयास किया जाए।

इस अभियान में समाज के प्रत्येक परिवार, युवाओं, अभिभावकों और विवाह योग्य युवक-युवतियों की सहभागिता आवश्यक है। युवाओं को स्वयं संकल्प लेना चाहिए कि वे दहेज नहीं लेंगे और न ही अपने विवाह में अनावश्यक प्रदर्शन करेंगे। अभिभावकों को भी अपने बच्चों के निर्णय का सम्मान करते हुए सादगीपूर्ण विवाह के लिए आगे आना चाहिए। नियम बनाना पर्याप्त नहीं है; उनका पालन स्वेच्छा, जागरूकता और सामाजिक सहमति से सुनिश्चित करना अधिक महत्वपूर्ण है।

हम सभी मिलकर समाज में जनजागरण अभियान चलाए, आदर्श सादगीपूर्ण विवाह करने वाले परिवारों और को सम्मानित करे तथा स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार उचित और सर्वसम्मत नियम बनाए।

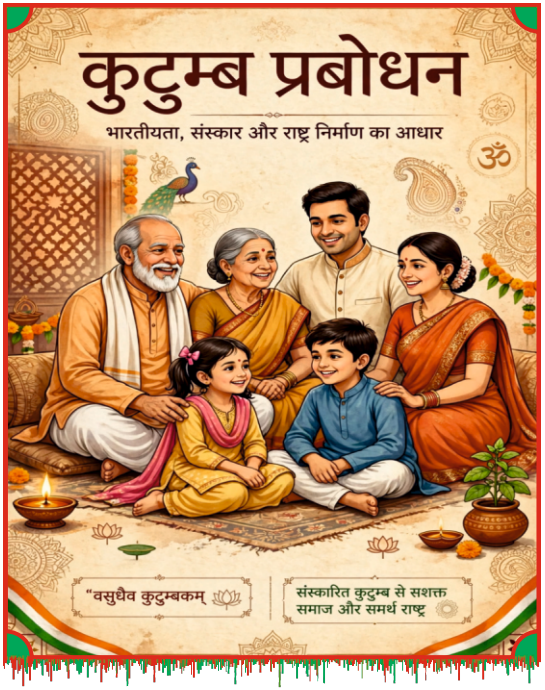
आइए, हम सभी जांगिड ब्राह्मण बंधु संकल्प लें कि विवाह को प्रतिष्ठा की प्रतिस्पर्धा नहीं, संस्कार का उत्सव बनाएँगे; दहेज को स्वीकार नहीं करेंगे; अनावश्यक खर्च से बचेंगे और समाज के प्रत्येक परिवार को सम्मानपूर्वक विवाह करने का अवसर देंगे।

याद रखिए:- समाज की वास्तविक प्रतिष्ठा महंगे विवाह समारोहों में नहीं, बल्कि उसके संस्कारों, एकता और सामाजिक सुधार के संकल्प में निहित होती है।

समाज की एकता ही हमारी शक्ति है। आइए, हिमाचल के 52 गांवों से प्रेरणा लेकर जांगिड़ ब्राह्मण समाज को सामाजिक कुरीतियों से मुक्त, संस्कारित, संगठित और प्रगतिशील बनाने के लिए मिलकर आगे बढ़ें।

कुटुम्ब प्रबोधन : भारतीयता, संस्कार और राष्ट्र निर्माण का आधार

संस्कारवान कुटुम्ब से ही सशक्त समाज और समर्थ राष्ट्र का निर्माण संभव है।



भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि हजारों वर्षों की सांस्कृतिक चेतना, जीवन मूल्यों, आध्यात्मिक परंपराओं और सामाजिक आदर्शों से निर्मित एक महान राष्ट्र है। भारतीय सभ्यता की सबसे बड़ी विशेषता उसकी कुटुम्ब व्यवस्था रही है। यहाँ परिवार को केवल साथ रहने वाले व्यक्तियों का समूह नहीं, बल्कि संस्कारों, सद्भाव, त्याग, सेवा, अनुशासन और कर्तव्यबोध की प्रथम पाठशाला माना गया है। इसी पारिवारिक व्यवस्था ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखा है। आज बदलते सामाजिक परिवेश में कुटुम्ब प्रबोधन भारतीयता के संरक्षण, पारिवारिक मूल्यों के संवर्धन और राष्ट्र निर्माण की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक हो गया है।

भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है, **"वसुधैव कुटुम्बकम्"**, अर्थात संपूर्ण विश्व एक परिवार है। यह विचार हमारी उदारता, सहिष्णुता और विश्वकल्याण की भावना को प्रकट करता है। भारतीय जीवन-दृष्टि में व्यक्ति केवल अपने लिए नहीं जीता, बल्कि परिवार, समाज, राष्ट्र और समस्त मानवता के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करता है।

हमारे यहाँ परिवार का अर्थ केवल माता-पिता और बच्चों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि दादा-दादी, चाचा-चाची, भाई-बहन तथा अन्य संबंधियों के बीच आत्मीयता और सहयोग की परंपरा भी रही है। संयुक्त परिवारों ने बच्चों को बड़ों का सम्मान करना, छोटों से स्नेह रखना, कठिन परिस्थितियों में एक-दूसरे का साथ देना और सामूहिक हितों को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखना सिखाया। समय के साथ परिवारों का स्वरूप बदला है, लेकिन इन मूल्यों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

कुटुम्ब प्रबोधन का अर्थ केवल परिवार को एक साथ बैठाना या पुरानी परंपराओं का पालन करना नहीं है। इसका वास्तविक उद्देश्य परिवार के प्रत्येक सदस्य में भारतीय जीवन मूल्यों, सांस्कृतिक गौरव, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रीय चेतना का विकास करना है।

परिवार में ऐसा वातावरण बनाना आवश्यक है, जहाँ प्रत्येक सदस्य अपनी बात कह सके, दूसरों की भावनाओं को समझे और पारस्परिक सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करे। परिवार में प्रेम हो, संवाद हो, सहयोग हो तथा सुख-दुःख में एक-दूसरे का साथ देने की भावना हो। परिवार के सदस्य केवल अधिकारों की चर्चा न करें, बल्कि अपने कर्तव्यों को भी समझें। **कुटुम्ब प्रबोधन का सार है: परिवार को संस्कारवान बनाना, संबंधों को संवेदनशील बनाना और जीवन को समाजोपयोगी बनाना।**

बालक के व्यक्तित्व का निर्माण परिवार से ही प्रारंभ होता है। वह जो कुछ अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों को करते हुए देखता है, उसका प्रभाव उसके विचारों और व्यवहार पर पड़ता है। यदि घर में सत्य, ईमानदारी, अनुशासन, परिश्रम और सेवा का वातावरण है, तो बच्चों में भी इन गुणों के विकसित होने की संभावना बढ़ती है।

हमारी संस्कृति में **"मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव"** के माध्यम से माता, पिता और गुरु के प्रति सम्मान का संदेश दिया गया है। इसी प्रकार **"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"** का भाव हमें समस्त प्राणियों के कल्याण की प्रेरणा देता है। परिवार में बच्चों को रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, संतों के जीवन, स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग और महापुरुषों के आदर्शों से परिचित कराया जाना चाहिए। इसका उद्देश्य केवल धार्मिक जानकारी देना नहीं, बल्कि उनके जीवन से सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता, साहस, त्याग और न्याय जैसे गुणों को ग्रहण करना है।

आज विज्ञान, तकनीक, शिक्षा और संचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन हो रहे हैं। मोबाइल फोन और सोशल मीडिया ने ज्ञान तथा सूचनाओं तक पहुँच आसान बनाई है, लेकिन इनके अनियंत्रित उपयोग से परिवार में संवाद की कमी, समय का दुरुपयोग और पीढ़ियों के बीच दूरी जैसी समस्याएँ भी सामने आती हैं।

पहले परिवार के सदस्य साथ बैठकर भोजन करते थे, दिनभर के अनुभव साझा करते थे और बुजुर्गों से जीवनोपयोगी बातें सीखते थे। आज कई घरों में एक ही कमरे में बैठे सदस्य भी अपने-अपने मोबाइल में व्यस्त रहते हैं। ऐसी स्थिति में परिवार के लिए प्रतिदिन कुछ समय संवाद, सामूहिक भोजन और पारिवारिक गतिविधियों के लिए निर्धारित करना उपयोगी होगा।

आधुनिकता का विरोध करना कुटुम्ब प्रबोधन का उद्देश्य नहीं है। हमें आधुनिक विज्ञान, शिक्षा, तकनीक और प्रगतिशील विचारों को अपनाते हुए अपनी सांस्कृतिक पहचान तथा नैतिक मूल्यों को सुरक्षित रखना है। आधुनिक साधनों का उपयोग करें, लेकिन अपने जीवन का संचालन विवेक, संस्कार और मानवीय संवेदनाओं से करें।

भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति, सृजन और संवेदना का प्रतीक माना गया है। परिवार के निर्माण और संस्कारों के संरक्षण में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है, लेकिन परिवार को संस्कारित करना केवल महिला की जिम्मेदारी नहीं है। पुरुष और महिला दोनों को इस दायित्व में समान रूप से सहभागी होना चाहिए।

बेटा और बेटी दोनों को समान शिक्षा, अवसर और सम्मान मिलना चाहिए। घरेलू जिम्मेदारियों का निर्वहन परस्पर सहयोग से होना चाहिए। परिवार में महिलाओं की राय को महत्व देना, उनकी स्वतंत्रता और गरिमा का सम्मान करना तथा उनके व्यक्तित्व विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनाना आवश्यक है। इसी प्रकार बच्चों और बुजुर्गों की आवश्यकताओं को समझना, दिव्यांग सदस्यों के प्रति संवेदनशील रहना और परिवार के प्रत्येक सदस्य को अपनत्व देना भारतीय पारिवारिक संस्कृति को सुदृढ़ बनाता है।

परिवार केवल संस्कार देने का केंद्र नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी है। दहेज प्रथा, नशाखोरी, दिखावा, अनावश्यक खर्च, भेदभाव और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए प्रतिस्पर्धा जैसी बुराइयों को समाप्त करने की शुरुआत घर से ही होनी चाहिए।

विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर आर्थिक प्रदर्शन के स्थान पर सादगी, पारस्परिक सम्मान और पारिवारिक सद्भाव को महत्व दिया जाना चाहिए। बच्चों को समझाना होगा कि व्यक्ति की प्रतिष्ठा उसके धन, पद या दिखावे से नहीं, बल्कि उसके चरित्र, व्यवहार और समाज के प्रति योगदान से निर्धारित होती है। परिवार में बचपन से ही बचत, परिश्रम, समय की पाबंदी, पर्यावरण संरक्षण और जरूरतमंदों की सहायता के संस्कार विकसित किए जाएँ। त्योहारों को केवल उपभोग और खर्च का अवसर न बनाकर परिवार तथा समाज में प्रेम, सेवा और सद्भाव बढ़ाने का माध्यम बनाया जाए।

भारतीयता का अर्थ केवल अपनी परंपराओं पर गर्व करना नहीं, बल्कि उनके श्रेष्ठ मूल्यों को अपने व्यवहार में उतारना है। सत्य बोलना, अपने कार्य के प्रति ईमानदार रहना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना, कानून का पालन करना, प्रकृति का सम्मान करना और समाज के कमजोर वर्गों की सहायता करना भी भारतीय संस्कारों की अभिव्यक्ति है।

जब परिवार में देशभक्ति, सामाजिक समरसता और नागरिक कर्तव्यों की भावना विकसित होती है, तब बच्चे जिम्मेदार नागरिक बनते हैं। वे जाति, भाषा, क्षेत्र और आर्थिक स्थिति के आधार पर दूसरों के प्रति भेदभाव करने के स्थान पर समानता, सद्भाव और सहयोग को महत्व देना सीखते हैं। हमारे राष्ट्रीय जीवन की मजबूती परिवारों की नैतिक शक्ति पर भी निर्भर करती है। इसलिए कुटुम्ब प्रबोधन को केवल व्यक्तिगत या पारिवारिक गतिविधि न मानकर सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्व के रूप में देखना चाहिए।

आज आवश्यकता है कि प्रत्येक परिवार अपनी दिनचर्या में भारतीयता के श्रेष्ठ मूल्यों को स्थान दे। परिवार के सदस्य नियमित रूप से साथ बैठें, बुजुर्गों के अनुभवों का सम्मान करें, बच्चों को संस्कार दें, महिलाओं को समान अवसर प्रदान करें और सामाजिक दायित्वों के प्रति सजग रहें।

आइए, हम संकल्प लें कि अपने परिवार को प्रेम, सद्भाव, सेवा, अनुशासन और सांस्कृतिक गौरव का केंद्र बनाएँगे। हम आधुनिकता को अपनाएँगे, लेकिन अपनी जड़ों से जुड़े रहेंगे। हम अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों का पालन करेंगे और व्यक्तिगत उन्नति के साथ समाज के कल्याण को भी महत्व देंगे।

क्योंकि संस्कारित कुटुम्ब से चरित्रवान व्यक्ति, चरित्रवान व्यक्तियों से सशक्त समाज और सशक्त समाज से समर्थ राष्ट्र का निर्माण होता है। यही कुटुम्ब प्रबोधन का उद्देश्य है और यही भारतीयता की आत्मा है।

*****

विकास जांगिड ने उप मण्डल अधिकारी सिविल (एस डी एम) बन कर अपने दादा के सपनों को पूरा किया।

8 अक्टूबर, 2026 को घोषित हरियाणा सिविल सर्विसेज परीक्षा परिणाम मे विकास जांगिड का चयन हरियाणा सरकार में उप मण्डल अधिकारी सिविल (एस डी एम) के पद पर हुआ है। झज्जर जिले के गांव जमालपुर में पिता राम भगत जांगिड और माता श्रीमती संगीता जांगिड के घर सन् 1991 में पैदा हुए विकास जांगिड ने अपने माता-पिता और जांगिड समाज का गौरव बढ़ाया है और विशेषकर अपने दादा के सपनों को साकार किया है।



विकास जांगिड ने बताया कि उसने सन् 2010 में सोनीपत के सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा किया। सन् 2023 में हरियाणा सिविल सर्विसेज परीक्षा की तैयारी शुरू की और पहली बार मे ही सन् 2024 में मुख्य परीक्षा पास करने मे सफल रहा, लेकिन दुर्भाग्य वश साक्षात्कार में सफल नहीं हो सका। इसके बावजूद मैंने अपनी उच्च क्षमता का भली भांति उपयोग किया और आखिर में इस परीक्षा में सफलता हासिल हुई है।

विकास ने बताया कि उसकी खेलों में भी विशेष अभिरुचि रही है और वह एक रजिस्टर्ड बैडमिंटन खिलाड़ी है और उसने कुछ सीनियर लैवल की प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया है। इस संघर्ष के दौरान विकास की जीवन संगिनी सुचिन्या जांगिड ने उनका कदम-कदम पर साथ दिया है। उसने अपनी दो बेटियों समायरा और यानवी जांगिड के पालन पोषण के साथ ही निरन्तर विकास का होंसला बढ़ाने का काम किया।

विकास के पिता राम भगत जांगिड ने कहा कि मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि मेरा बेटा आज हरियाणा सरकार में उप मण्डल अधिकारी सिविल (एस डी एम) बन गया है। यह मेरे लिए एक सपने से कम नहीं है और विकास ने अपनी योग्यता सिद्ध करके एक अमिट छाप छोड़ी है। मुझे अपने बेटे पर गर्व है। **विकास के 88 वर्षीय दादा** ने कहा कि मुझे गर्व है कि मेरे पोते ने आर्थिक सहित अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य को हासिल किया और इसके लिए इसके माता-पिता के आशीर्वाद के साथ ही भगवान की विशेष अनुकम्पा भी रही है। भगवान का मैं लाख-लाख शुक्रिया अदा करता हूँ।

डॉ. प्राधि जांगिड विश्वकर्मा स्किल यूनिवर्सिटी दूधोला, पलवल में निवासी चिकित्सा अधिकारी (RMO) बनी।

पलवल की रहने वाली डॉक्टर प्राधि जांगिड की नियुक्ति विश्वकर्मा स्किल यूनिवर्सिटी दूधोला, जिला पलवल में एक रेजिडेंट मेडिकल आफिसर के पद पर हुई है। डॉ. प्राधि जांगिड के लिए यह दोहरी खुशी वाला दिन रहा, एक ओर जहां उसने 17 सितंबर को अपनी ड्यूटी ज्वाइन की, वही दूसरी ओर भगवान विश्वकर्मा पूजा दिवस मनाया जा रहा था। यह एक संयोग ही है कि इस विश्वविद्यालय का नाम भी **"श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय"** दुधोला रखा गया है।



डॉ. प्राधि जांगिड का जन्म, शशीभूषण जांगिड और श्रीमती भावना जांगिड के यहाँ हुआ। माता-पिता ने उनको बेहतर संस्कार दिए हैं। उनको आत्मसात करते हुए ही उन्होंने जीवन में सफलता हासिल की है। डॉ. प्राधि बचपन से ही पढ़ाई में होशियार रही है। उसने हमेशा ही उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। प्राधि ने 12 वीं कक्षा मे 90 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल करके अपनी अद्वितीय प्रतिभा का परिचय दिया।

प्राधि ने सन् 2018 में नीट की परीक्षा पास करके यूक्रेन देश से एम डी फिजिशियन की पढ़ाई शुरू की और सन् 2024 में भारत वापस आकर, सन् 2025 में (एफ एम जी ई) की परीक्षा में 300 में से 235 अंक हासिल करके हरियाणा में तीसरी और सम्पूर्ण भारत देश में 16 वीं रैंक हासिल करके न केवल जांगिड समाज का गौरव बढ़ाया अपितु माता पिता का भी नाम गौरवान्वित किया है।

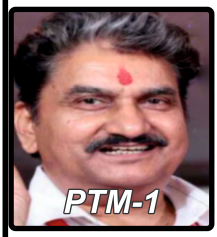
डॉ. प्राधि ने कहा कि मैं मानवता और इंसानियत के नाते समाज के गरीब व्यक्तियों की सेवा करना चाहती हूँ ताकि इलाज के अभाव में उनको किसी भी प्रकार की परेशानी ना हो। मेरे लिए सेवा, समर्पण और निष्ठाभाव का संदेश मेरे माता-पिता ने दिया है और एक डाक्टर की असली सफलता वही है, जो एक मरीज की दैहिक और मानसिक परेशानी को समाप्त कर सके। **उन्होंने कहा कि मैं भविष्य में रेडियोलॉजी या मैडिसन में एम डी करना चाहती हूँ।**

प्रधान रामपाल शर्मा ने प्राधि जांगिड को उसकी सफलता पर बधाई देते हुए कहा है कि एक डॉक्टर भगवान का रुप होता है इसलिए उसे हर कार्य ईमानदारी से और निस्वार्थ भाव से करते हुए मरीजों की सेवा करनी चाहिए।

मैं डॉ. प्राधि जांगिड के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

रमेश शर्मा, आनंद पर्वत नई दिल्ली

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य



श्री कैलाश चन्द्र बरनेला, (इन्दौर)



श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स, दिल्ली



श्री अशोक कुमार बरनेला, इन्दौर



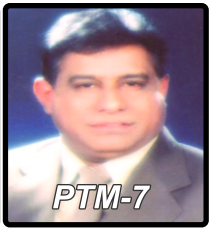
श्री राम कुमार शर्मा,भरथल,दिल्ली



श्री पी.एल.शाखी, गुड़गांव



श्री देबूराम जांगिड, दिल्ली



श्री रामनिवास शर्मा, दिल्ली



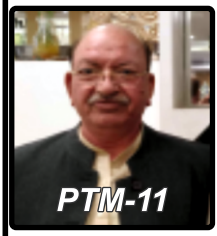
श्री राजेन्द्र शर्मा, इन्दौर



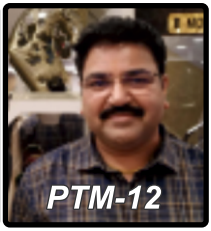
श्री निर्मल कुमार जांगिड, इन्दौर



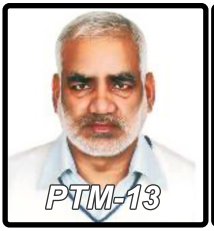
श्री लीलू राम शर्मा, दिल्ली



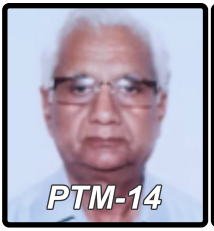
श्री रमेशचन्द शर्मा 'सरपंच', दिल्ली



श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, दिल्ली



श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली



श्री पूरनचन्द शर्मा, दिल्ली



श्री पाली राम शर्मा, आनंद पर्वत दिल्ली



श्री प्रकाश शर्मा, नारायणा, दिल्ली



श्री श्रीगोपाल चोयल, अजमेर



श्री कृष्ण कुमार शर्मा, मुम्बई



श्री माला राम शर्मा, वाली नगर,दिल्ली



श्री विद्यासागर जांगिड, गुड़गांव



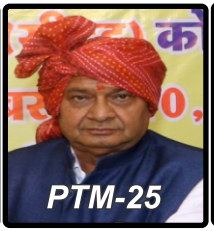
श्री सुशील कुमार शर्मा, कोलकता



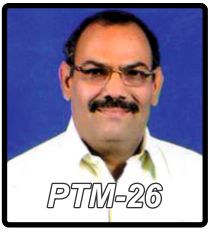
श्री रघुवीर सिंह आर्य, शामली



श्री वेदप्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

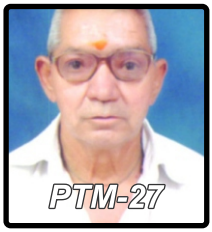


श्री प्रभुदयाल शर्मा, देवास



श्री प्रहलादराय शर्मा, इन्दौर

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य



श्री मोहन लाल जांगिड, जोधपुर



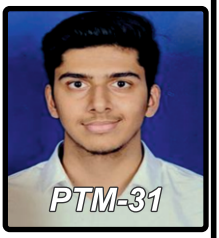
श्री पूनाराम जांगिड, जोधपुर



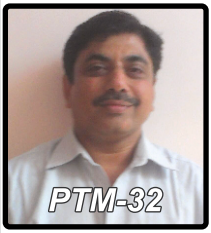
श्री ललित जड़वाल, अजमेर



श्री मीता राम जांगिड, मुम्बई



श्री यश अजय शर्मा, मुम्बई



श्री रविन्द्र शर्मा, बीकानेर



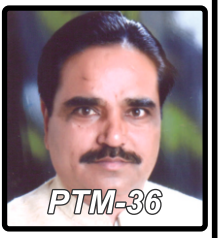
श्री जवाहरलाल जांगिड, उज्जैन



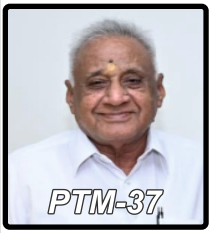
श्री नरेश जांगिड, गुड़गांव



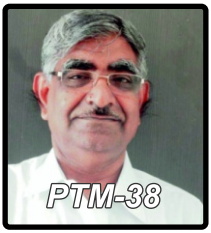
श्री भुवन जांगिड, गुड़गांव



श्री कृष्ण कुमार जांगिड, गुड़गांव



श्री किशन लाल शर्मा, नागपुर



श्री गिरधारी लाल जांगिड,बेंगलुरु



श्री किशोर जी मोखा, नागपुर



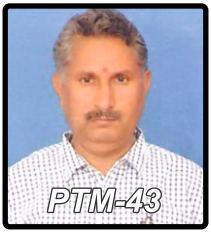
श्री बाबू लाल शर्मा, अहमदाबाद



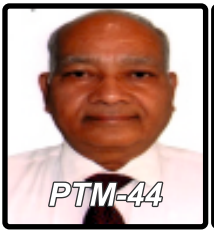
श्री नारायण दत्त, साड़ीवाले, दिल्ली



श्री ओमप्रकाश जांगिड, दिल्ली



श्री धनपत शर्मा, फरीदाबाद

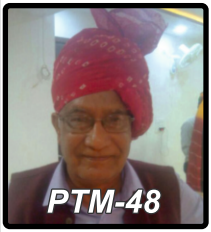


श्री सुरेन्द्र शर्मा, अहमदाबाद

फोटो उपलब्ध नहीं है
PTM-46
श्री दीपक भारद्वाज, दिल्ली



श्री सोमदत्त शर्मा, दिल्ली



श्री बी.सी. शर्मा, जयपुर



श्री सुरेश शर्मा, नीमच



श्री नितिन शर्मा, इन्दौर

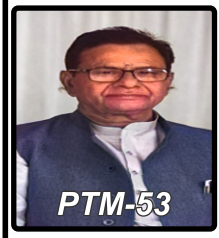


श्री प्रमोद कुमार जांगिड, सूरत



श्री हुकुमचन्द जांगिड, इन्दौर

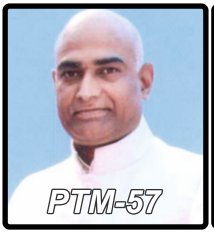
महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य



श्री सत्यनारायण जांगिड, इन्दौर



श्री अशोक कुमार मोखा, नागपुर



श्री देवमणि जांगिड, दिल्ली



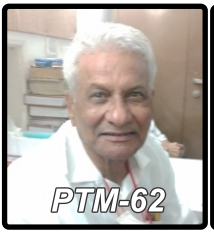
श्री फूलकुमार शर्मा, द्वारका-दिल्ली



श्री अमराराम जांगिड, जोधपुर



श्री रविशंकर शर्मा, जयपुर



श्री कांति प्रसाद जांगिड, करौली



श्री यादराम जांगिड, दिल्ली



श्री अशोक दत्तु राम, अहमदाबाद



श्री दयानन्द शर्मा, दिल्ली



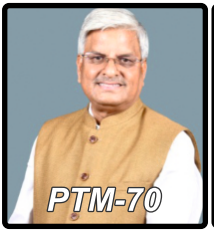
श्री यशवंत नेपालिया, अजमेर



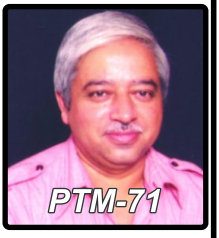
श्री राधेश्याम शर्मा, वापी



श्री जितेंद्र धामू, बीकानेर,राज.



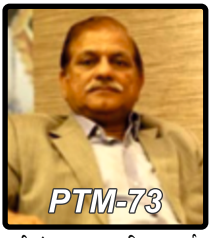
श्री रामपाल शर्मा, बैंगलुरू



श्री दिनेश नेपालिया, अजमेर



श्री गोपाल शर्मा, कोरबा



श्री भंवर लाल कुलरिया, मुम्बई

वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए इक्यावन हजार रुपये के स्वर्ण सदस्य



श्री प्रेमाराम जांगिड
अहमदाबाद



श्रीमती संतोष शर्मा
धमतरी,छत्तीसगढ



श्री मनोहर लाल शर्मा (दूरदर्शन वाले)
जयपुर, राजस्थान

वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए पच्चीस हजार रुपये के रजत सदस्य



श्री रामदयाल जांगिड, दुर्ग



श्रीमती लीलावती शर्मा, नीमच



श्री निकुंज शर्मा, लखनऊ

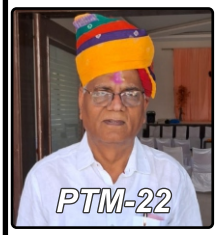


श्रीमती निति रनसीवाल, लखनऊ

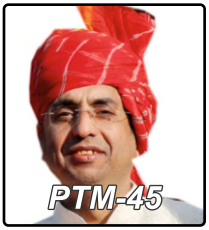


श्री राजेन्द्र कुमार जांगिड,धुले,महाराष्ट्र

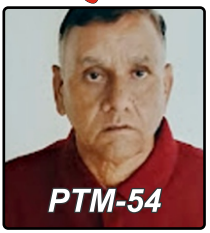
वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य



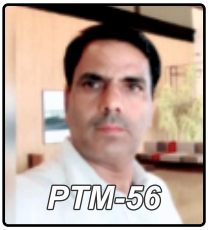
श्री सांवरमल जांगिड, सीकर



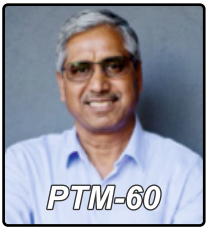
श्री सत्यनारायण शर्मा, दिल्ली



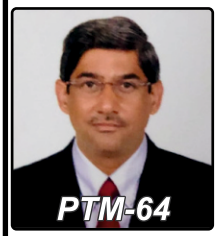
श्री गजानन जांगिड, जालना



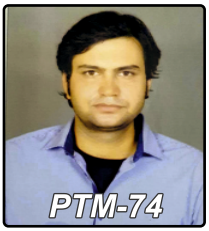
श्री घनश्याम जांगिड, बैंगलुरू



श्री रमेश शर्मा, बैंगलुरू



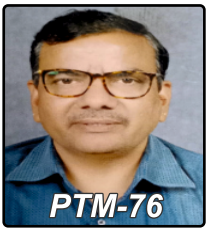
श्री बाबू लाल, बैंगलुरू



श्री अमित कुमार शर्मा, जयपुर



श्री नरेश चन्द्र शर्मा, बैंगलुरू



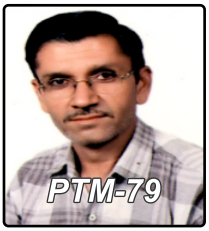
श्री भीमराज शर्मा, जयपुर



श्री रवि जांगिड, बैंगलुरू



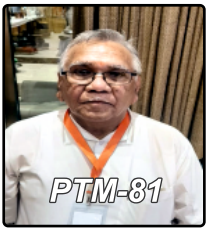
श्री भंवरलाल सुथार, गोवा



श्री रामनिवास शर्मा, भिलाई



श्री शुभम शर्मा, कोरबा



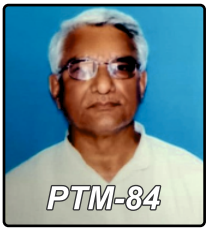
श्री नानूराम जांगिड, धुलिया



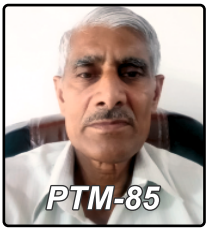
श्री प्रहलाद शर्मा, जयपुर



श्री रीछपाल शर्मा, बिलासपुर, छ.ग.



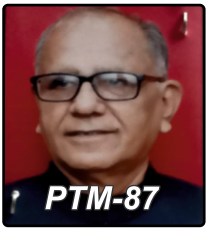
श्री धर्मचन्द शर्मा, बस्तर



श्री राधेश्याम जांगिड, रेनवाल



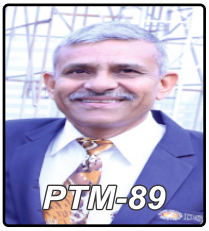
श्री कन्हैया लाल खाती, अजमेर



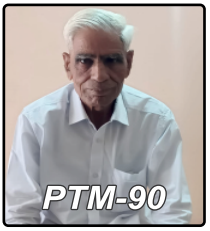
श्री कन्हैया लाल सिलक, अजमेर



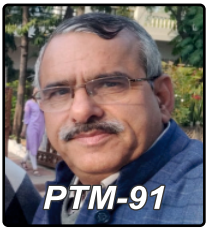
श्री अनिल शर्मा, इन्दौर



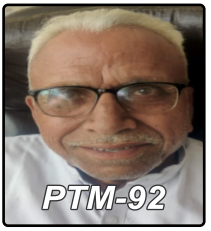
श्री धन सिंह जांगिड, फरीदाबाद



श्री लालचन्द जांगिड, नारनौल



श्री रोहिताश जांगिड, औरंगाबाद



श्री सांवरमल जांगिड, बांसवाडा

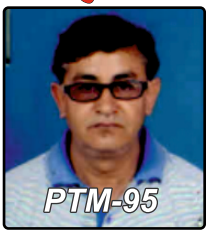
वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य



श्री महावीर प्रसाद जांगिड,अहमदाबाद



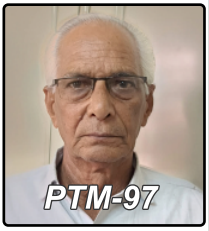
श्री शंकरलाल जांगिड, जयपुर



श्री संजय शर्मा, चित्तौड़गढ़



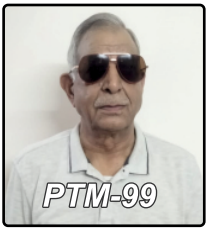
श्री जगतराम भद्रेचा, बैंगलुरु



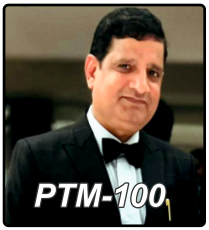
श्री पुरुषोत्तम लाल जांगिड, जयपुर



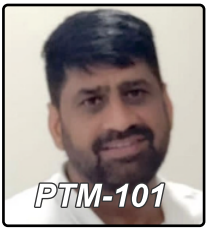
श्री अनिल शर्मा, चंडीगढ़



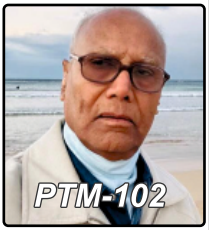
श्री लक्ष्मीनारायण जांगिड, गुरूग्राम



श्री नेमीचन्द जांगिड, सूरत



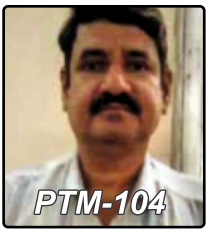
श्री चिरंजीलाल जांगिड, इन्दौर



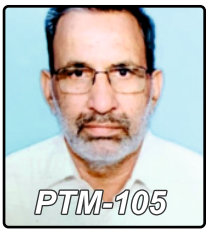
श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, सूरत



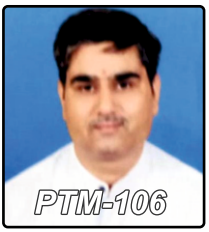
श्री सत्यपाल वत्स, बहादुरगढ़



श्री सोमदत्त शर्मा, लखनऊ



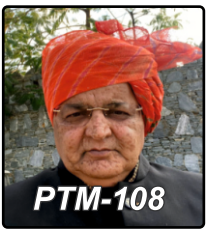
श्री ओम प्रकाश जांगिड, दिल्ली



श्री अनिल शर्मा, तेलंगाना



श्री मुकेश जांगिड, तेलंगाना



श्री भंवरलाल जांगिड, सूरत



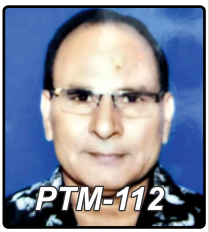
श्री जगदीश खण्डेलवाल, दिल्ली



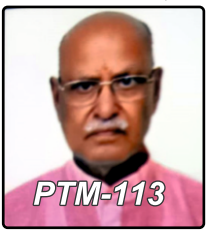
श्री भंवरलाल शर्मा, पाली,राज0



श्री प्रहलाद चन्द शर्मा, बेंगलुरू



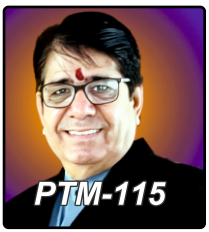
श्री नानूराम जांगिड, हिंगोली



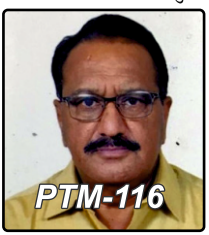
श्री रामानन्द शर्मा, सागरपुर, दिल्ली



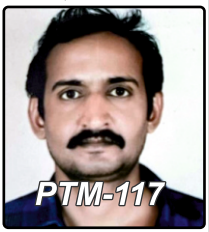
श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली



श्री कैलाश जांगिड, सूरत



श्री मदन लाल शर्मा, वडोदरा

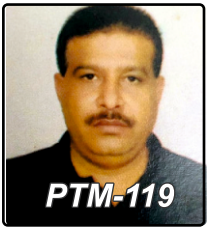


श्री गजानन्द जांगिड, सूरत

वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य



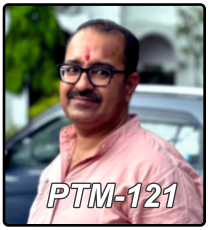
श्री हरिराम शर्मा, सागरपुर, दिल्ली



श्री सतवीर शर्मा, गुरूग्राम



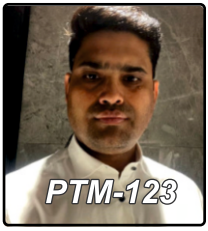
श्री किशोरी लाल शर्मा, सागरपुर, दिल्ली



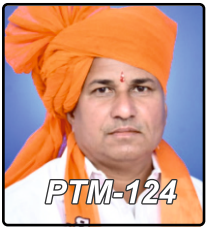
श्री सुनील सिद्धड़, चिड़ावा, झुंझुनू



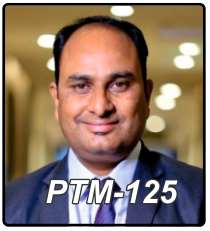
श्री सुरेश कुमार जांगिड, नजफगढ़



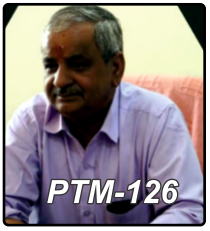
श्री मोहन पंवार, सागरपुर दिल्ली



श्री रामावतार जांगिड, सरदारशहर, चूरू



श्री राजील कुमार जांगिड, सूरत



श्री सादीराम जांगिड, हनुमानगढ़,रा0



श्री मामराज मिस्त्री, सूरत



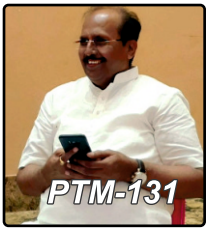
श्री सागरमल जांगिड, वडोदरा



श्री सुनील कुमार जांगिड, महाराष्ट्र



श्री महेश कुमार शर्मा, दिल्ली



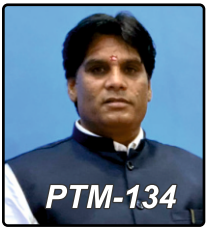
श्री किशन लाल जांगिड, जयपुर



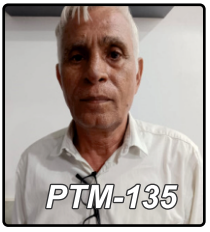
श्री एकलिंग प्रसाद सुथार, सूरत



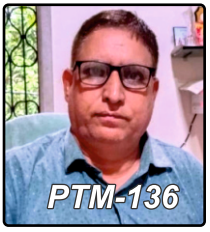
श्री राजेश जांगिड, हैदराबाद



श्री सियाराम जांगिड, हैदराबाद



श्री रामवतार शर्मा, तिरूवल्लुर,तमिलनाडू



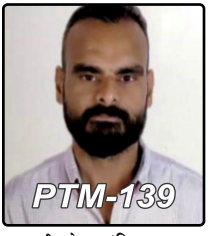
श्री सतीश कुमार जांगिड,(किशनगढ़ वास) वलसाड



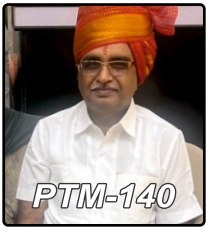
श्री शंकरलाल माकड़, हैदराबाद



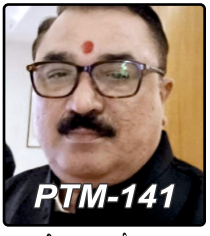
श्री महेश चन्द शर्मा, साध नगर, दिल्ली



श्री राकेश जांगिड, सूरत



श्री देवकरण जांगिड, हैदराबाद

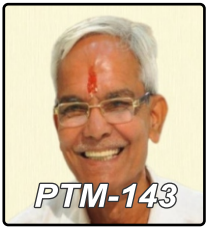


श्री सुभाष शर्मा, भरूच

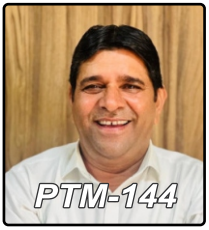


श्री महेश शर्मा, बैंगलुरू

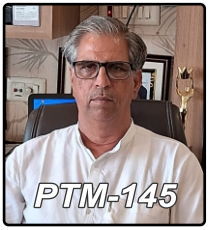
वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य



श्री चंद्र प्रकाश शर्मा, गांधीधाम,कच्छ



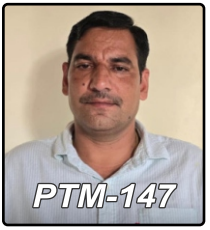
श्री सतवीर जांगिड, बैंगलुरू



श्री महेन्द्र सिंह जांगिड, धारूहेड़ा रेवाड़ी



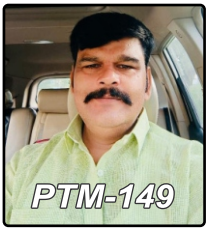
श्री पूरनमल जांगिड, सूरत



श्री नरेश शर्मा, भरूच



श्री बंशीधर जांगिड, भरूच



श्री मुकेश कुमार जांगिड, हिम्मतनगर



श्री गोपाल जांगिड, गांधी नगर



श्री राजेन्द्र कुमार डभाण, खेड़ा



श्री ओम प्रकाश शर्मा, अहमदाबाद



श्री अरूण कुमार डभाण, खेड़ा



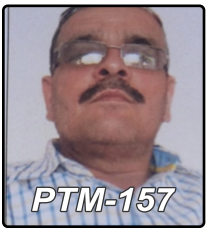
श्री कैलाश चंद्र शर्मा, डभाण, खेड़ा



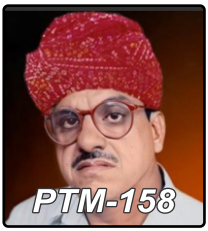
श्री मदन लाल सुथार, भरूच



श्री महेन्द्र जांगिड, भरूच



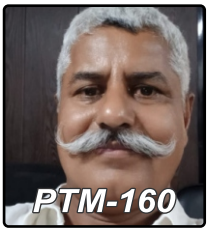
श्री कन्हैया लाल, (ओजटू वाले) बैंगलुरू



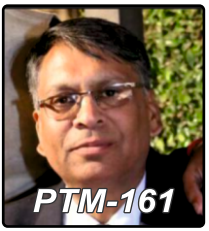
श्री शंकरलाल जांगिड, झुंझुनूं



श्रीमती उषा बड़वा धर्मपत्नी श्री आनन्द बड़वा, कोटा राज।



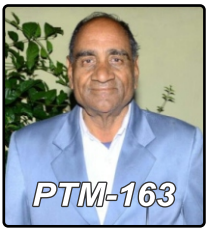
श्री देवेन्द्र शर्मा, उदयपुर, राजस्थान



श्री नरोत्तम लाल जांगिड, फरीदाबाद, हरियाणा



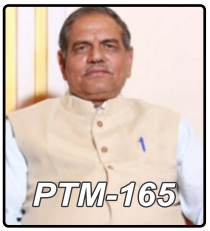
श्री हजारी लाल शर्मा, जयपुर, राज।



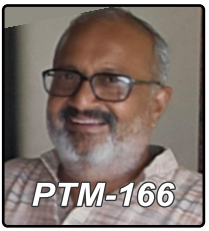
श्री भागीरथ मल जांगिड, जयपुर, राज।



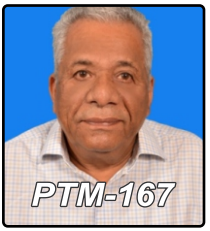
श्री मदनलाल शर्मा, रायपुर छा।गढ़



श्री पतराम शर्मा , गुरूग्राम, हरियाणा

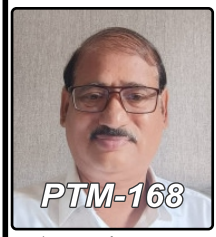


श्री बजरंग शर्मा , दुर्ग, छतीसगढ़

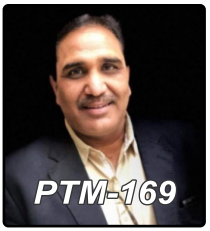


श्री विरदी चन्द शर्मा , रायपुर, छतीसगढ़

वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य



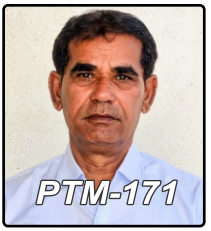
श्री ओमप्रकाश जांगिड, रायपुर, छतीसगढ़



श्री संतलाल शर्मा, बैंगलुरू, कर्नाटक



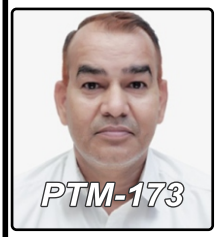
श्री जगन नाथ जांगिड, रेवाड़ी, हरियाणा



श्री राजकुमार चोयल,पोलो ग्राउंड, सीकर



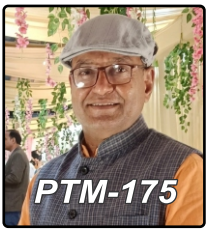
श्री गोपालदास शर्मा, रायपुर, छ0गढ़



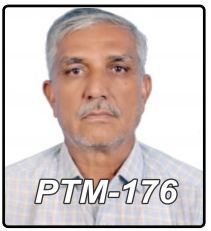
श्री विनोद कुमार शर्मा, रायपुर, छ0गढ़



श्री राधेश्याम शर्मा, जयपुर, राज0



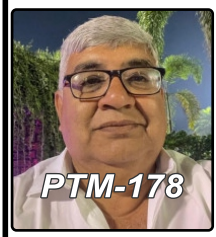
श्री प्रहलाद राय जांगिड, दूजोद, सीकर, राज0



श्री भोलाराम शर्मा, दुर्ग, छतीसगढ़



श्री रमेश शर्मा, रायपुर, छतीसगढ़



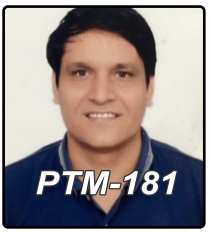
श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0



श्री नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0



श्री अनुराग नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0



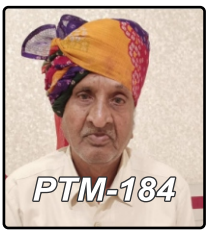
श्री ओम प्रकाश जांगिड, वापी वलसाड, गुज0



श्री शिवपाल जांगिड, बेटमा, इन्दौर, मध्य प्रदेश



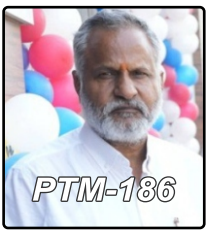
श्री उमेदराम जांगिड, वापी, वलसाड, गुजरात



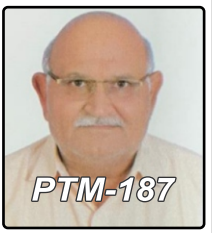
श्री द्वारका प्रसाद शर्मा, वापी, वलसाड, गुजरात



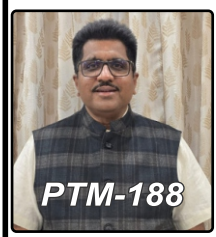
श्री अरुण कुमार, आया नगर, दिल्ली



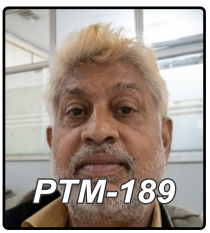
श्री सुरेश जांगिड, दक्षिणी दिल्ली



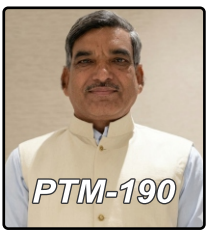
श्री श्रीराम जांगिड, बाजवा,वडोदरा, गुजरात



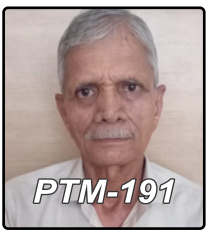
श्री जसाराम सुथार, पणजी, नॉर्थ गोवा



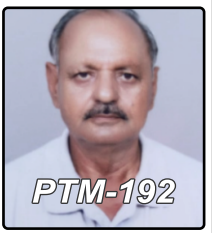
श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा, मेरठ, उत्तर प्रदेश



श्री रवि दत्त शर्मा, अहमदाबाद,गुजरात

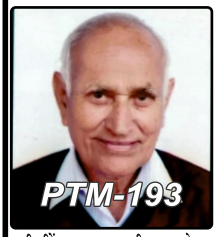


श्री रमेश चंद्र शर्मा, अंजनी नगर, इंदौर



श्री मुरारीलाल शर्मा, अहमदाबाद, गुजरात

वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य



श्री वीरेंद्र कुमार, शामली, उत्तर प्रदेश



श्री महेंद्र जांगिड (पवार), कैलाशपुरी,इंदौर, म.प्र.



श्री सांवरमल शर्मा, दक्षिण गोवा,गोवा



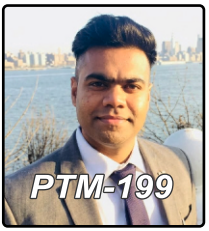
श्री अशोक शर्मा,जवाहर नगर,देवास,म.प्र.



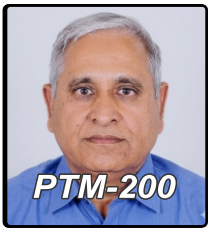
श्री धीरज शर्मा, सेक्टर-ई, इंदौर,म.प्र.



श्री ओम प्रकाश जांगिड, शाजापुर,म.प्र.



श्री विवेक शर्मा, व्यंकटेश नगर,इंदौर,म.प्र.



श्री जसमेंद्र शर्मा, होरामावु,बेंगलुरु,कर्नाटक



श्री गोपेश जांगिड, ढेहर का बालाजी,जयपुर



श्री विमल कुमार शर्मा, ढेहर का बालाजी,जयपुर



श्री सुरेंद्र जांगिड, सीकर रोड,जयपुर, राज.



श्री राम नारायण जांगिड, खातियों की ढाणी,जयपुर



श्री संजय जांगिड,फतेहगंज,वडोदरा,

दान का महत्व : समाज के उत्थान का आधार

दान भारतीय संस्कृति, सनातन परंपरा और मानवीय मूल्यों का एक महत्वपूर्ण अंग है। दान केवल धन-संपत्ति देने का माध्यम नहीं, बल्कि त्याग, सेवा, करुणा, परोपकार और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का प्रतीक है। दान की वास्तविक सार्थकता उसकी राशि में नहीं, बल्कि दानदाता की भावना, उद्देश्य और समर्पण में निहित होती है।

समाज का विकास तभी संभव है, जब समाज के संपन्न, सक्षम और जागरूक व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार सामाजिक कार्यों में योगदान दें। शिक्षा, चिकित्सा, जरूरतमंद परिवारों की सहायता, छात्रवृत्ति, सामाजिक भवनों का निर्माण, धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन और समाज की संस्थाओं को सशक्त बनाने में आर्थिक सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब समाज के लोग मिलकर योगदान देते हैं, तो बड़े से बड़ा लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा समाज की एकता, संगठन, शिक्षा और सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। महासभा के उद्देश्यों को साकार करने के लिए प्रत्येक सदस्य का सहयोग आवश्यक है। यह योगदान समाज के प्रति सदस्यों की निष्ठा, समर्पण और उत्तरदायित्व की भावना को दर्शाता है। समाज की संस्थाएँ केवल पदाधिकारियों के प्रयासों से मजबूत नहीं होतीं, बल्कि सदस्यों के आर्थिक सहयोग, समय, श्रम और सकारात्मक सोच से सशक्त बनती हैं। दान सदैव स्वेच्छा, श्रद्धा और निःस्वार्थ भाव से किया जाना चाहिए। इसमें दिखावे, अहंकार या किसी प्रकार की व्यक्तिगत अपेक्षा का स्थान नहीं होना चाहिए। साथ ही, दान की राशि का पारदर्शी एवं उचित उपयोग सुनिश्चित करना भी संबंधित संस्था का दायित्व है, ताकि दानदाताओं का विश्वास बना रहे और समाज के धन का सदुपयोग हो।

आइए, हम संकल्प लें कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार समाजहित में योगदान देंगे, महासभा को मजबूत बनाएँगे और एकता, सेवा बने, दहेजमुक्त विवाह हमारा संकल्प बने और सामाजिक एकता हमारी शक्ति बने।समाज की एकता ही हमारी शक्ति है। *****

वर चाहिए

1. Wanted a suitable match for healthy & pleasant personality Jangid Brahmin girl, DOB: **13.07.2000**, Birth Time & Place: 3:14 PM New Delhi, residence in New Delhi, Education: Dr. B.A.M.S, Priority:- B.A.M.S. MBBS and lived in Delhi, . Father Retired from Army as a Subedar Mechinical Engg Diploma, **Shasan/Gotras: Self: Rajotiya, Mother: Vats, Grandmother: Dhamu , Contact No: Rajender Prasad - 7011296729 / 9968072716,**

वधू चाहिए

1. Wanted a suitable match for Jangid Brahmin boy, DOB: **07.08.1995,** Height – 5'11", Permanent address: Village - Kheri Safa, PO - Kharak Bhura, Tehsil - Uchana Distt. - Jind (Haryana) – 126115, Academic Qualifications: Bachelor of Arts with Diploma in Firemen, Job / Profession: Supervisor in SIS Group, New Delhi Family Details: Father's profession: Farmer, Mother's profession: Anganwadi Worker, Sister's profession: Home Maker & married **Shasan/Gotras: Self: Bhere, Mother: Siddhar, Grandmother: Selwal , Contact No: Father - 8810683753**

2. Wanted a suitable match for vegetarian Jangid Brahmin boy based at Malviya Nagar, New Delhi 110017, DOB :**05-10-1993**, Birth Time: 16:05 PM, Height: 5'8"; Educational Qualification: Commerce Graduate / Own Business. **Shasan/Gotra- Self- Dhanerwal, Mother: Dhaimen, Paternal Grandmother- Kalonia, Maternal Grandmother - Jalle, Father: Late R.K.P. Sharma Mother: Homemaker, Contact: Rameshwar Sharma- 9899471990 (Brother).**

3. Wanted a suitable match for Jangid Brahman boy DOB: **16.09.1995** Birth Time: 2.30 AM, Birth Place : Agra (U P), Hight: 5' 10", Permanent Residence: 31/97, Katgar Gali, Loha Mandi, Agra 282 002 (U P), Educational Qualification: B Tech (2013-16) in Electronics and Communication from Dr. Abdul Kalam University Lucknow, Job Details: Associate Manager at Amazon Textiles Pvt Ltd, Ahmedabad (Gujarat) Family Details: Father: Govt Job Retired, Mother: Home Maker, Sister: Married, **Shasan/Gotra Self: Dhidhoria, Mother's- Bhidal, Dadi's- Dhaeman, Nani's Dhanerwal, Contact : Father Jagdish Chandra Sharma Mobile: 7355138981, 9410250005**

विवाह में सादगी अपनाएँ

विवाह जीवन का पवित्र संस्कार है, न कि दिखावे और प्रतिस्पर्धा का माध्यम। आज समय की आवश्यकता है कि हम शादी-विवाह में बढ़ते अनावश्यक खर्च, आडंबर और सामाजिक प्रतिस्पर्धा पर रोक लगाएँ। अपने बच्चों का विवाह सही उम्र और सही समय पर करें तथा उनके सुखद भविष्य के लिए शिक्षा, संस्कार, रोजगार और पारिवारिक सामंजस्य को प्राथमिकता दें।

प्री-वेडिंग शूट, महँगे समारोह, अनावश्यक रस्मों और दिखावे पर होने वाले खर्च से बचें। दहेज प्रथा का पूर्ण बहिष्कार करें और विवाह को लेन-देन नहीं, बल्कि दो परिवारों के पवित्र मिलन का अवसर बनाएँ। दहेज लेना और देना दोनों सामाजिक बुराइयों को बढ़ावा देते हैं। हमें ऐसा वातावरण बनाना होगा, जहाँ बेटियों को सम्मान मिले, वर-वधू की सहमति को महत्व दिया जाए और विवाह का आधार अच्छे संस्कार एवं आपसी समझ हो।

रिश्तेदारी में छोटी-छोटी बातों, आर्थिक लेन-देन, मान-मनुहार और प्रतिष्ठा के दिखावे को लेकर मनमुटाव न होने दें। एक-दूसरे के सुख-दुःख में सहभागी बनें, बड़ों का सम्मान करें और नई पीढ़ी को प्रेम, सहयोग तथा पारिवारिक एकता के संस्कार दें। समाज की वास्तविक प्रतिष्ठा महँगी शादियों में नहीं, बल्कि सादगीपूर्ण विवाह, दहेजमुक्त परंपराओं और मजबूत पारिवारिक संबंधों में है।

आइए, हम सब मिलकर संकल्प लें कि विवाह संबंधी कुरीतियों को समाप्त करेंगे, अनावश्यक खर्चों पर रोक लगाएंगे, रिश्तों में मधुरता बनाए रखेंगे और आने वाली पीढ़ियों को एक स्वस्थ, संस्कारवान एवं सशक्त समाज प्रदान करेंगे।सादगी हमारा संस्कार बने, दहेजमुक्त विवाह हमारा संकल्प बने और सामाजिक एकता हमारी शक्ति बने।समाज की एकता ही हमारी शक्ति है। *****

द्वितीय पुण्यतिथि श्रद्धांजलि सुमन

6 अक्टूबर 2026

स्वर्गीय श्रीमती विमलादेवी शर्मा (धर्मपत्नी स्व. श्री शंकरलाल जी शर्मा)

चले गए आप, पर आपकी स्मृति और आदर्श हमेशा हमारा मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

आपका स्नेह, त्याग और आदर्श हमारे जीवन का दीपस्तंभ हैं। आपके जाने के बाद भी आपकी स्मृतियाँ हमारे हृदय में सदा जीवित हैं। आपकी सरलता, करुणा और मातृत्व का आशीर्वाद हमें निरंतर प्रेरित करता रहेगा।



इस पुण्य अवसर पर हम सभी परिजन आपको भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। आपकी आत्मा को शांति मिले — **यही हमारी परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है।**

।। ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति ।।

इस द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर परिवार की तरफ से महासभा को दानस्वरूप 251/- रुपये भेंट किये गए। अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा तथा समस्त कार्यकारिणी परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों मे उचित स्थान प्रदान करे और शोकाकुल परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। हम सभी आपके समस्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत पुण्यात्मा के श्री चरणों मे श्रद्धासुमन और भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावन्त परिजन :

चन्द्रशेखर, पुष्पेन्द्र, महेंद्र, देवेंद्र (पुत्र)
भंवरलाल, बाबूलाल, जयनारायण, ओमप्रकाश, रमेश, बनवारी, लादूराम (भतीजे)
कार्तिकेय, अमित, प्रतिक, नीरज, भावेश (पौत्र), आयुष, तनिष्क (प्रपौत्र) एवं
समस्त खुड़ाणिया शासन - अघमर्षण ऋषिगोत्र जांगिड ब्राहण परिवार (चांदास वाले)

सच्ची श्रद्धांजलि

अपनों के रहते उनका सम्मान करें, जाने के बाद केवल दिखावा नहीं।

हमारे प्रियजन जब हमें छोड़कर इस संसार से विदा हो जाते हैं, तब उनकी कमी जीवनभर महसूस होती है। उनकी यादें हमारे हृदय में सदैव जीवित रहती हैं। लेकिन हमें यह समझना होगा कि किसी के जाने के बाद बड़े-बड़े आयोजन करने, अनावश्यक खर्च करने और सामाजिक दिखावा करने से बेहतर है कि हम उनके जीवित रहते उन्हें प्रेम, सम्मान और अपनापन दें।

अपने माता-पिता की सेवा करना, उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखना और उनके चेहरे पर मुस्कान लाना ही संतान का सबसे बड़ा धर्म है। जिन माता-पिता ने हमें उँगली पकड़कर चलना सिखाया, अपना सुख त्यागकर हमारा भविष्य सँवारा, वृद्धावस्था में उनकी सेवा करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। उनकी उपेक्षा करके बाद में बड़े-बड़े आयोजन करना हमारी संवेदनाओं पर प्रश्नचिह्न लगाता है।

घर के बुजुर्ग परिवार की अमूल्य धरोहर हैं। उनके अनुभव, आशीर्वाद और संस्कार आने वाली पीढ़ियों के लिए अनमोल पूँजी हैं। इसलिए उनका सम्मान करें, उनकी बात सुनें, उन्हें समय दें और यह एहसास कराएँ कि वे हमारे परिवार का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

जब किसी प्रियजन का निधन हो जाता है, तो शोकाकुल परिवार को आर्थिक और सामाजिक दबाव में डालने के बजाय उसे सहारा देना चाहिए। मृत्युभोज, अनावश्यक खर्च और दिखावे जैसी कुरीतियों से बचकर उस धन का उपयोग जरूरतमंदों की सहायता, बच्चों की शिक्षा, चिकित्सा अथवा समाजहित के कार्यों में किया जा सकता है।

याद रखिए, दिवंगत आत्मा के प्रति सच्चा प्रेम किसी आडंबर का मोहताज नहीं होता। सच्ची श्रद्धांजलि उनके अच्छे कार्यों को याद करने, उनके संस्कारों को अपनाने और उनके बताए मार्ग पर चलने में है।

आइए, हम सब मिलकर संकल्प लें कि अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, बुजुर्गों का सम्मान करेंगे, अपनों को उनके जीवनकाल में पूरा मान-सम्मान देंगे और मृत्यु के बाद होने वाले अनावश्यक खर्च तथा सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने में सहयोग करेंगे।

अपनों के रहते उन्हें अपनापन दें, उनके जाने के बाद केवल आँसू नहीं, उनके आदर्शों को जीवन में स्थान दें।
यही सच्चा प्रेम है, यही सच्ची श्रद्धांजलि है और यही एक संस्कारवान समाज की पहचान है।

****

18 अक्टूबर, 2026 को चैन्नई मे आयोजित महासभा की त्रैमासिक मीटिंग और तमिलनाडू प्रदेशसभा कार्यकारिणी शपथ ग्रहण समारोह के यादगार पलों की कुछ झलकियां

















BHARAT WHEEL

Manufacturer of Rims for Tractor,
Motor Vehicle, Earthmoving Machine.

Our valued customers

VECTRA MANITOU GROUP JCB ESCORTS





Bharat Wheel Private Limited
Muzaffarnagar Road, Shamli - 247776, UP, India
Email : info@bharatwheel.com
www.bharatwheel.com

SHARMA
Group of companies

25 YEARS OF DRIVEN EXCELLENCE
SHARMA HYUNDAI
SINCE 1998

LATE SHREE
KANHAIYALAL
SHARMA
(CHOYAL)



FOUNDER

HYUNDAI

AUTHORISED HYUNDAI DEALER
SHARMA HYUNDAI
Since 1998

Ashram Road
Call : 9099978327

Satellite
Call : 9099978334

Parimal Garden
Call : 9099978328

Naroda
Call : 9099938777



TOYOTA



Authorised Toyota Dealer : NARMADA TOYOTA
VADODARA : 9099916601 I ANAND : 9099916631/32

MG

MORRIS GARAGES
Since 1924

Authorised MG Dealer :
Kayakalp Cars Pvt. Ltd.
Zorba Complex, Akshar chowk, OP Road, Vadodara.
Ph : 6358800230/31



Registered With The Registrar of
News Papers For INDIA,
Under Regd. No. 25512/72

D.L.(DG-11)/8009/2024-26
Posted Under Licence No. U(DN)39/2024-26
of Post without prepayment of postage

Mahindra
Rise

महिन्द्रा का अधिकृत शोरूम एवं वर्कशॉप

भागीरथ मोटर्स (इं) प्रा.लि.



पर्सनल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154144, 9109154152
कमर्शियल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154153

शोरूम : सर्वे नं. 379/2,ग्राम-डाबला, रेवाड़ी, आगरा रोड, आर.डी. गार्डी कॉलेज के पास, उज्जैन (म.प्र.)

Bhagirth & Brothers

Bus & Truck Body Manufacture Since 1960

Organization :

Audi Automobiles, Pithampur
Bhagirath Coach & Metal Fabricators Pvt. Ltd., Pithampur
B & B Body Builders, A.B. Road, Indore
Rohan Coach Builders, 29Nehru park, Indore



Adm. Office
29, Nehru Park Road, Indore-1(M.P.)
Phone : 0731-2431921, Fax" 0731-2538841

Works:
Plot No. 199-b, Sector-1
Pithampur Dist. Dhar (M.P.) 454775
Phone : 07292-426150 to 70

Website : www.bhagirathbrothers.com





Printed, Published by Sh. J.P. Sharma, K-29, Ward-1, Desu Road, Mehrauli, New Delhi-30, on behalf of (Owner) Akhil Bhartiya Jangid Brahmin Mahasabha, 440, Haveli Haider Quli, Chandni Chowk, Delhi-06, Printed at M/s. Kamal Printers, Anand Parbat, N.D.-05, Ph.:9810622239, Published at Delhi, Editor Sh. Ram Bhagat Sharma, 1741 Sector - 23 B Chandigarh (UT)

मेवात मंथन

Posting Date: 22-27 Each Month
Publication Date: 15 October 2026
Weight: 100 gms. Cost: Rs. 240 Yearly

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा
440, हवेली हैदर कुली,
चाँदनी चौक, दिल्ली-110006

फोन